आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 07 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जुलाई, 2011 ★ आषाढ, 2068

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

अहिंसा तीर्थ
एक संस्कार केंद्र

"मांसाहार मानवजाति पर कलंक है।
मांस जमीनसे या झाड पर नहीं पैदा होता।
निर्दोष बेजबान प्राणियों की हत्या से
मांस तयार होता है। ऐसे पाप कार्य से
लोगों को बचाओ।"

शाकाहार प्रसारक एवं गोपालक मा. श्री. रतनलालजी बाफना द्वारा निर्मित जलगाँव का अहिंसा तीर्थ शाकाहार प्रचार-प्रसार के लिये समूचा समर्पित है। यहाँ का यूटर्न म्युझियम देखकर आजतक लाखों लोगोंने मांसांहार त्यागा है। यह प्राणियों की मुक भावनाओं तथा उनकी असीम यातनाओं को बखुबी प्रदर्शित करता है

आपका अहिंसा तीर्थ में स्वागत है।

आप जैन है, शाकाहार का प्रसार करो
सच्चे महावीर बनो, धर्म का नाम उँचा करो।

रतनलाल सी. बाफना
शाकाहार प्रवर्तक

रतनलाल सी. बाफना
गो सेवा अनुसंधान केंद्र
गोशालाही नहीं एक संस्कार केंद्र

अहिंसा तीर्थ, कुसूंबा, जळगांव. फोन : 2213415, 2270125 • www.ahimsatirth.com

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2009-11

पिंडोलए व दुस्सीले,
नरगाओ न मुच्चइ।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा,
सुव्वए कम्मइ दिवं।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.22

पिण्डोलक दुःशील भिक्षु भी,
ना मुक्त नरक से होते हैं।
भिक्षु हो, अथवा गृहवासी,
सद्व्रती स्वर्ग में जाते हैं।।

जुलाई, 2011
वीर निर्वाण संवत्, 2537
आषाढ, 2068

वर्ष 68 अंक 7

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	साधु-श्रावक करूँ प्रणाम	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	सदुपयोग और दुरुपयोग	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	जागें, जीवन में धर्म को उतारें	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.	15
शोधालेख-	जैन और आधुनिक ब्रह्माण्ड की समीक्षा	-डॉ.जीवराज जैन	20
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Rshbhasita : A Prakit work of Universal Values (1)	*-Prof. Sagarmal Jain*	29
चिन्तन -	धार्मिक विज्ञापनों का औचित्य	-डॉ. दिलीप धींग	34
	जीवन की सीख	-डॉ. रमेश 'मयंक'	52
	चिन्तन योग्य प्रसंग	-श्री नितेशकुमार नागोता	54
तत्त्व-ज्ञान -	दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (13)	-संकलित	40
	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (67)	-श्री धर्मचन्द जैन	43
पद्य-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है(5)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	45
इतिहास-	तीर्थंकर और उनके केवली वृक्ष	-श्री आशीष कुमार जैन	50
नारी-स्तम्भ -	सामंजस्य के सूत्रों की आवश्यकता	-श्रीमती बीना जैन	57
युवा-स्तम्भ -	विकास की अवधारणा में मूल्यों का महत्त्व	-श्री सलमान अर्शद	60
स्वास्थ्य-स्तम्भ-	जैन श्रमण की स्वास्थ्यवर्धक जीवन शैली (2)	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	68
बाल-स्तम्भ -	आह्वान : नौनिहाल पीढ़ी को	-श्री मोहनकोठारी 'विनर'	72
विचार -	LIFE	*-Miss Meenu Surana*	28
	मौन का महत्त्व	-सौ. कमला सिंघवी	49
	चिन्तन-कण	-महासती श्री रुचिता जी म.सा.	51
	विचार-बिन्दु	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	59
कविता/गीत-	सदा रहे दृढ़ संकल्प शक्ति	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी	19
	मृत्यु	-श्री कस्तूरचन्द बाफणा	53
	आओ! नई शुरुआत करें	-श्री जयमुनि जी म.सा.	65
	समझो प्रकृति का इशारा	-डॉ. अजित एच. जैन	66
	सत्संग में आइए	-श्री अनराज बोथरा	79
	क्या मौत है जिन्दगी से बेहतर?	-श्रीमती ममता भण्डारी	84
	हास्य-व्यंग्य क्षणिकाएँ	-प्रवर्तक श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	118
प्रेरक-प्रसंग -	अनुकरणीय प्रयास	-श्री आर प्रसन्नचन्द चोरडिया	71
साहित्य समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	76
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (16)	-संकलित	80
रिपोर्ताज-	ग्रीष्मकालीन शिविरों में बढ़ता उत्साह	-श्री जितेन्द्र कुमार डागा	85
समाचार विविधा-	चातुर्मास सूची		92
	समाचार-संकलन		101
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		119

सम्पादकीय

साधु-श्रावक करूँ प्रणाम

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

आगम में श्रावक-श्राविकाओं को साधु-साध्वियों के अम्मापियरो की संज्ञा दी गई है। यह संज्ञा उन्हीं श्रावक-श्राविकाओं पर लागू होती है जो साधु-साध्वियों के ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की आराधना में सहायक होते हैं। जो श्रावक-श्राविका उनकी शिथिलता में सहायक बनते हैं, उन्हें अम्मापियरो नहीं कहा जा सकता। यह आज के युग की बहुत बड़ी समस्या है कि श्रावक-श्राविका अपने कर्त्तव्य का समुचित निर्धारण नहीं कर पाते हैं।

जैन धर्म के श्रमण-श्रमणी आचार पालन की कठोरता के लिए सम्पूर्ण भारत में ही नहीं, अपितु विश्व में प्रसिद्ध हैं। वे बिना जूते-चप्पल पहने पैदल यात्रा करते हैं, अपने पास पैसे के नाम पर फूटी-कौड़ी भी नहीं रखते। एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक सभी जीवों को अभयदान देकर उनकी रक्षा करते हैं। किसी की वस्तु को उसकी अनुमति के बिना स्वीकार नहीं करते। आहार, औषध, उपधि भी गृहस्थ के घर जाकर श्रमणाचार के नियमों के अनुसार ग्रहण करते हैं। जिन ग्राम-नगरों में जैन परिवार रहते हैं वहाँ तो फिर भी आहार-पानी का योग मिल जाता है, किन्तु जहाँ जैन घर नहीं हैं, रास्ते लम्बे हैं वहाँ अनेकदा साधु-साध्वियों को क्षुधा-पिपासा परीषह को सहन करते हुए साधना में संलग्न रहना होता है। विषयों और वासनाओं पर विजय प्राप्त करने की साधना श्रमण-जीवन का अभिन्न अंग है। वे स्वयं दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं तथा गृहस्थों को भी उसके पालन की प्रेरणा करते हैं। जैन धर्म में ऐसे अनेक नियम हैं जो साधु-साध्वी के ब्रह्मचर्य की रक्षा में सहायक होते हैं। बाह्य परिग्रह उनके पास नाममात्र का होता है। आभ्यन्तर परिग्रह पर विजय पाना उनका ध्येय होता है। अहिंसा की साधना में वे अधिकाधिक सजग रहते हैं। मृषावाद एवं कटु शब्दों का प्रयोग उनके लिए वर्जित होता है। गृहस्थ जीवन को त्यागकर आत्म-साधना के लक्ष्य से साधु-जीवन अंगीकार करने वाले साधक अधिकाधिक समय, शक्ति और सामर्थ्य का उपयोग इस लक्ष्य की पूर्ति में करें, इसमें श्रावक-श्राविकाओं का सहयोग आवश्यक है।

साधु-संतों की आज भारत में कैसी दशा है, यह समाचार-पत्रों एवं मीडिया के माध्यम से ज्ञात होता रहता है। श्रद्धा के केन्द्र एवं लोगों की कामनाओं को पूर्ण करने वाले साधु-संत किस प्रकार करोड़ों और अरबों की सम्पत्ति का संग्रह कर लेते हैं, यह जानकर आश्चर्य होता है। जैन संत इस मार्ग से बचे हुए हैं। आपवादिक रूप में यदि कुछ संत धन-सम्पत्ति के संग्रह से जुड़े हुए हैं तो वे वेष से भले ही साधु हों, किन्तु उन्हें सच्चे निर्ग्रन्थ संत के रूप में मान्यता नहीं मिल सकती। वे आम लोगों को भी अपनी लोक विद्याओं से आकर्षित कर सकते हैं, किन्तु भगवान् महावीर के द्वारा निरूपित श्रमण-धर्म के सच्चे पालक नहीं कहे जा सकते।

अधिक भीड़ इकट्ठी करना साधना का मापदण्ड नहीं है। यह अच्छी वक्तृत्व कला का प्रभाव तो हो सकता है, किन्तु ऐषणाओं पर विजय की साधना के पथिक का मापदण्ड नहीं हो सकता। साधक तो एकान्त स्थान में बैठकर मौन, ध्यान एवं स्वाध्याय के साथ आत्म-शोधन की साधना में लगा रहता है। योग्यताधारी साधकों के मन में न जाने क्यों सम्मान एवं प्रतिष्ठा का लालच पैदा हो जाता है और वे अपनी साधना की दिशा को लोगों को आकर्षित करने की ओर मोड़ देते हैं। यद्यपि साधु-साध्वी आत्म-कल्याण के साथ लोक-कल्याण के भाव से भी युक्त होते हैं तथा करुणा एवं मैत्री से सम्पृक्त होकर पाप-पंक में निमग्न जन-जन को जिनेन्द्रों की वाणी श्रवण करा कर तारने के लिए उद्यत रहते हैं। फिर भी लोक-कल्याण के साथ आत्म-कल्याण का भाव जैन दर्शन में गौण नहीं होता। बौद्ध दर्शन में तो महायान परम्परा के अन्तर्गत कोई बोधिसत्त्व जगत् के जीवों का कल्याण करने के लिए अपने निर्वाण को भी विलम्बित कर देता है, किन्तु जैन दर्शन में आत्म-कल्याण की प्रधानता है उसके साथ जितना लोक कल्याण हो सके, करना चाहिए।

जब हम साधु-साध्वियों के दर्शनों के लिए उपस्थित होते हैं तब हम उनकी साधना की अपेक्षा हमारी लौकिक कामनाओं की पूर्ति को अधिक महत्त्व देते हैं अथवा उनके साथ वार्तालाप की अपेक्षा रखते हैं। उनसे प्रेरणा ग्रहण करने एवं जीवनोत्थान के लिए नियम ग्रहण करने का प्रयोजन हो तो संतों के सान्निध्य में बैठना सार्थक हो जाता है। ज्ञान-चर्चा की दृष्टि से भी सम्वाद उचित है, किन्तु इधर-उधर की निन्दापरक बातों में उनका समय खराब करना किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं कहा जा सकता। जिसको स्वयं अपने जीवन को ऊँचा उठाने की ललक हो वह वहाँ बैठकर कुछ-न-कुछ सीखता है एवं उसके इस

व्यवहार से साधु-साध्वियों को भी अपनी साधना में बल प्राप्त होता है, किन्तु निन्दा-विकथा का व्यवहार न उनके लिए हितकर होता है न स्वयं अपने लिए।

कई संघों के टुकड़े महत्त्वाकांक्षी साधु-साध्वियों को श्रावक-श्राविकाओं से मिले समर्थन के कारण हुए हैं। कई बार श्रावक भी उन्हें उकसाने का काम करते हैं। परस्पर गलत सूचनाएँ देकर एक-दूसरे साधु-साध्वी के प्रति घृणा एवं द्वेष का भाव उत्पन्न कर देते हैं। यह पृथक्करण की प्रवृत्ति निरन्तर बढ़ती जा रही है। इसके पीछे संत-सतियों की महत्त्वाकांक्षा तो काम करती ही है, किन्तु श्रावक-श्राविकाओं के समर्थन के बिना वे आगे नहीं बढ़ सकते। एक ही गुरु के उपासक, एक ही गुरु की जय बोलने वाले दो संत पृथक् होकर एक-दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी बन जाते हैं। फिर साधना गौण हो जाती है एवं अपनी पृथक् सम्प्रदाय का ताना-बाना बुनने में शक्ति लग जाती है। संत की योग्यता का उपयोग संघहित में हो, आत्मसाधना एवं लोक-कल्याण में हो तो कहीं कोई बाधा नहीं होती, किन्तु स्वतन्त्र पद एवं प्रतिष्ठा की अभिलाषा जब मन में जाग जाती है तो फिर वह भी कामान्ध पुरुष की भाँति मन में चिन्तित कार्य को पूर्ण करके ही दम लेता है।

श्रमण-जीवन में सजगता प्रतिपल आवश्यक है। यहाँ से वीतरागता की ओर भी सीधी सड़क जाती है तथा पतन की ओर भी पगडंडियाँ प्रस्थान करती हैं। निर्णय साधक का काम आता है वह कितना सावधान है। इस पर ही सारा खेल निर्भर करता है। संघ में सजग करने वाले साधु मुनिराज एवं प्रबुद्ध श्रावकों का योगदान होता है, तो कभी विरोधी भी सजगता का सूत्र दे जाता है। मीठे वचनों का प्रयोग करने वाले भक्त भी कई बार हितैषी न होकर संकोचवश साधु-साध्वियों की असमीचीन अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए तत्पर हो जाते हैं। मधुरता के साथ हितैषिता आवश्यक है। मात्र मधुरता घातक भी हो सकती है। हितैषिता का पैमाना यही है कि साधु-साध्वी अपनी साधना में स्वयं आगे बढ़ें तथा भक्तों को भी इसकी प्रेरणा करें। योग्य शिष्यों को कई बार अपने से कम योग्य गुरुओं की भी आज्ञा का पालन करना होता है। किन्तु वह आज्ञा हित बुद्धि से दी गई है, तो उसे स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए।

आज दर्शन की अपेक्षा प्रदर्शन का अधिक बोलबाला है। धर्म स्थानों में भी प्रदर्शन की प्रधानता दिखाई देती है। चातुर्मासों में आवश्यकता से अधिक व्यंजनों का भोजन आगन्तुकों की साधना में सहायक नहीं होता। भोजन स्वादिष्ट, स्वास्थ्यकर एवं पर्याप्त हो, किन्तु अधिकाधिक प्रदर्शन की भावना से

युक्त न हो। दया-संवर आदि की साधना करने वाले साधक जब अत्यधिक गरिष्ठ भोजन का रस लेते हैं तो उन्हें तंद्रा या निद्रा घेर लेती है। साधना का प्रयोजन पूर्ण सफल नहीं होता। आज अनेक शहरों में चातुर्मास के नाम पर करोड़ों की राशि एकत्रित होती है जिसका अधिकांश भाग भोजन-व्यवस्था पर ही व्यय होता है। व्यवस्थाएँ सुविधाजनक हों, किन्तु इतनी अधिक खर्चीली भी न हों कि अन्य संघों में उसकी होड़ होती रहे। चातुर्मास की सफलता को लोग अब भोजन एवं आवास की व्यवस्था से आकतें हैं, धर्म-साधना से नहीं। व्यवस्था के साथ साधना भी आवश्यक है। साधना में सहयोगिता भी आवश्यक है। चातुर्मास आभ्यन्तर विकारों को घटाने का निमित्त बने बढ़ाने का नहीं। परस्पर ईर्ष्या-द्वेष का स्थान जब मैत्री भाव एवं प्रमोद भाव ग्रहण करते है तो चातुर्मास सफल होता है। उसके लिए भीतर के अभिमान का विसर्जन करना पड़ता है। यह आत्मविजय का पथ है जिससे संसार पर विजय स्वत: हो जाती है।

श्रावक-श्राविका जितने स्वाध्यायशील, विवेकशील एवं चरित्रनिष्ठ होंगे उतना ही साधु-साध्वी संघ भी साधना में अग्रणी होगा तथा साधु-साध्वी संघ जितना अधिक ज्ञान-दर्शन-चारित्र की साधना में सजग होगा उतना ही श्रावक-श्राविका समुदाय भक्ति से नत होकर जीवन में आगे बढ़ सकेगा। सच्चे साधक दु:खमग्न एवं पापाविष्ट जनों का उद्धार करते हैं तथा अहंकार की छाया से भी दूर रहते हैं।

आज भी ऐसे अनेक साधक महापुरुष हैं जो अंधभक्तों को भी ज्ञानदीप का प्रकाश देते हैं और उन्हें दु:ख के कण्टकाकीर्ण पथ से साधना के सुपथ पर लाने का प्रयास करते हैं। अधिकतर श्रावक स्वयं को समझदार मानते हैं किन्तु कार्य नासमझी के करते हैं। उन श्रावकों को ज्ञानदीप के प्रकाश की महती आवश्यकता है। जो उन्हें स्वयं के दोषों से अवगत करा सके तथा ऐसी साधना की आवश्यकता है जो उनमें उन दोषों का निराकरण करने का सामर्थ्य प्रदान कर सके। जमाना कितना भी खराब हो, हमारा मन दुर्मन नहीं होना चाहिए। संयम में वीर्य सदा ही हितकर होता है।

जो साधु एवं श्रावक सम्यक् सोच के साथ आत्म-विकारों के विजय-पथ पर चरण बढ़ा रहे हैं, तथा पारस्परिक मैत्री एवं प्रमोद की अभिवृद्धि के साथ लोककल्याण हेतु भी तत्पर रहते हैं, उनको मेरा प्रणाम।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

णत्थि लोए अलोए वा, णेवं सण्णं निवेसए।
अत्थि लोए अलोए वा, एवं सण्णं निवेसए।।

अर्थः-लोक नहीं है या अलोक नहीं है ऐसी संज्ञा (बुद्धि-समझ नहीं रखनी चाहिए अपितु) लोक है और अलोक (अरकरयररज्ञितकरसमात्र) है, ऐसी संज्ञा रखनी चाहिए।

णत्थि जीवा अजीवा वा, णेवं सण्णं निवेसए।
अत्थि जीवा अजीवा वा, एव सण्णं निवेसए।।

अर्थः- जीव और अजीव पदार्थ नहीं है, ऐसी संज्ञा नहीं रखनी चाहिए, अपितु जीव और अजीव पदार्थ हैं, ऐसी संज्ञा (बुद्धि) रखनी चाहिए।

णत्थि धम्मे अधम्मे वा, णेवं सण्णं निवेसए।
अत्थि धम्मे अधम्मे वा, एवं सण्णं निवेसए।।

अर्थः- धर्म-अधर्म नहीं है, ऐसी मान्यता नहीं रखनी चाहिए, किन्तु धर्म भी है और अधर्म भी है ऐसी मान्यता रखनी चाहिए।

णत्थि बंधे व मोक्खे वा, णेवं सण्णं निवेसए।
अत्थि बंधे व मोक्खे वा, एवं सण्णं निवेसए।।

अर्थः-बन्ध और मोक्ष नहीं है, यह नहीं मानना चाहिए, अपितु बन्ध है और मोक्ष भी है, यही श्रद्धा रखनी चाहिए।

णत्थि पुण्णे व पावे वा, णेवं सण्णं निवेसए।
अत्थि पुण्णे व पावे वा, एवं सण्णं निवेसए।।

अर्थः-पुण्य और पाप नहीं है, ऐसी बुद्धि रखना उचित नहीं, अपितु पुण्य भी है और पाप भी है, ऐसी बुद्धि रखना चाहिए।

णत्थि आसवे संवरे वा, णेवं सण्णं निवेसए।
अत्थि आसवे संवरे वा, एवं सण्णं निवेसए।।

अर्थः- आश्रव और संवर नहीं है, ऐसी श्रद्धा नहीं रखनी चाहिए, अपितु आश्रव भी है, संवर भी है, ऐसी श्रद्धा रखनी चाहिए।

-सूत्रकृतांगसूत्र, द्वितीय श्रुतस्कन्ध, पंचम अध्ययन, सूत्र-12-17

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

अहिंसा

भगवान् महावीर का अहिंसा का उपदेश ऐसा है कि उसमें उन्होंने मनुष्य, पशु-पक्षी आदि का कोई भेद नहीं रखा। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में फरमा दिया-

"सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता न हंतव्वा-"

"सव्वे पाणा पियाउया, सुहसाया दुक्खपडिकूला।"

सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं।
तम्हा पाणिवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं।।
जावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा।
ते जाणमजाणं वा, न हणे णो वि घायए।।
सयं तिवायए पाणे, अदुवन्नेहिं घायए।
हणंतं वाणुजाणाइ, वेरं वड्ढइ अप्पणो।।

अर्थात्- किसी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिए। यही धर्म शुद्ध, शाश्वत और नित्य है। सभी प्राणी दुःख से दूर रहना और जीना चाहते हैं। कोई प्राणी मरना नहीं चाहता, अतः किसी प्राणी की हिंसा करना घोरातिघोर महापाप है। इसीलिये संसार में जितने भी त्रस अथवा स्थावर प्राणी हैं, उनमें से किसी भी प्राणी की जानकर अथवा अनजान में न स्वयं हिंसा करे और न दूसरे से उनकी हिंसा करवाए। जो व्यक्ति स्वयं किसी प्राणी की हिंसा करता है अथवा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किसी प्राणी की हिंसा करवाता है या किसी भी प्राणी की हिंसा करने वाले व्यक्ति का अनुमोदन करता है, वह प्राणि-वध के साथ अपने अनन्तानुबन्धी वैर का बन्ध करता है।

माताओं में जीवदया का ज्यादा प्रेम होता है। अगर उनके सामने जीवदया के नाम पर कोई पानड़ी जाएगी तो वे जरूर उसमें कुछ न कुछ लिखायेंगी। वे पढ़ाई-लिखाई का उतना महत्त्व नहीं जानतीं, जीवदया को जानती हैं। पर उनको इसके साथ इस पर विचार करना होगा कि रेशमी मखमल के कपड़े, महाआरम्भ समारम्भ से निर्मित वस्तुओं से तैयार किये गये वस्त्र, हिंसामूलक साज-सज्जा एवं शृंगार वगैरह के प्रसाधन जो हैं, वे त्याज्य हैं। उनको त्याज्य समझ कर वे इन पदार्थों को और ऐसे वस्त्रों को घर में नहीं बसायेंगी, न इनको आने देंगी और न बढ़ावा देंगी।इस तरह से अगर वे करेंगी, तो यह सक्रिय रूप से अहिंसा का पालन कहलायेगा।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

सदुपयोग और दुरुपयोग

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा दिनाँक 29 मई, 2011 को मॉर्डन स्कूल, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। -सम्पादक

अविचल-अविनाशी सिद्ध भगवन्त, अनन्त ज्ञानी, अनन्त दर्शनी अरिहन्त भगवन्त और ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी से निरन्तर सदुपयोग-दुरुपयोग की बात आपके सामने रखी जा रही है। सारी विचार धाराएँ, सारी मान्यताएँ, सारा आचरण सदुपयोग और दुरुपयोग इन दो शब्दों में आ जाता है। दुरुपयोग करने पर वह मनदण्ड बनता है, वचन दण्ड बनता है, काय दण्ड बनता है और सदुपयोग करने पर मन निधान, वचन निधान, काया निधान बनता है। आप निरन्तर सुन रहे हैं, ऐसा नहीं कि आपने इस वाक्य को व्यवहार में भुला दिया है। अपने बढ़िया बंगले में कोई गली-मौहल्ले का कूड़ा-कचरा नहीं भरता है। अपनी रसोई में कोई शौच निवृत्त नहीं होता। अपने सोने-चाँदी के दागीने कोई पालतू पशु को नहीं पहनाता। संसार व्यवहार में आप सब हेय उपादेय व्यवहार का ध्यान रखते हैं। किसी चोर डाकू की जमानत या साक्षी देनी पड़े तो आपमें से कौन तैयार होगा? किसी आतंकवादी को कौन घर में आश्रय व दुकान में नौकरी देने को तत्पर होगा।

आप यह चिन्तन तो करें कि चौरासी लाख जीवयोनियों में भटकते-भटकते चिन्तामणि रत्न के समान यह जो अनमोल तन पाया है, नर से नारायण बनाने वाले इस तन को पाकर क्या करना चाहिये? इस तन को किसमें लगाना चाहिये? मैं जो बात कह रहा हूँ वह आपके समझ में आ रही है ना! आप स्वयं सोचें, विचार करें, जिन पर आपको राग है उनके प्रति आपका कैसा व्यवहार रहता है? और जिन पर राग नहीं उनके प्रति कैसा व्यवहार होता है? आपका लड़का काला-कलूटा है, नाक झर रहा है, मुँह से लार टपक रही है, किन्तु राग है इसलिए वह आपके लिए राजकुमार है। एक दूसरे का लड़का है वह चाहे

सर्वाङ्ग सुन्दर है फिर भी आप कहीं यह तो नहीं कह देंगे कि यह लड़का एक आँख से टेढ़ा देखता है। तन सुन्दर है फिर भी उसके प्रति राग नहीं, तो सुन्दरता होते हुए भी सुन्दरता नहीं दिखती। एक दूसरे गांव का आदमी कभी आपसे पूछे- अमुक का घर कैसा है? यदि राग है तो आप उस घर की दस खूबियाँ गिना देंगे और राग नहीं तो.....?

एक नादान है, ना समझ है वह तो फिर भी सहनशीलता रख रहा है, पर जो समझदार है, ज्ञानी है, धर्मी कहलाता है वह यदि अहंकार में डूबा है तो.....? आप यहाँ बैठे हैं, समता की बात सुन रहे हैं, सम्यक् दर्शन की बातें सुन रहे हैं। आपने संसार से तिराने वाली बातें भी कितनी ही बार सुनी हैं, समझी हैं, पर राग-द्वेष के बंधन में ऐसे बंधे हुए हैं कि सब कुछ सुनकर भी व्यवहार में सुनने का सार नज़र नहीं आ रहा है। आप समझदार कहलाना चाहते हैं, पाट के पाये बने हुए हैं, फिर भी वही की वही स्थिति है तो.....?

यदि अच्छी बात सुनकर-समझकर भी व्यवहार में नहीं आई तो नतीजा क्या? आप स्वयं चिन्तन करें। कैमरे की बिजली कभी बन्द हो सकती है, मोबाइल खराब हो सकता है, पर यह जो कर्म की रील चल रही है वह कभी खराब हुई नहीं और होगी नहीं। कर्म की रील हरक्षण-हरपल जैसा कर रहा है वैसा फोटू उतार रही है। आप क्या कर रहे हैं, कैसा कर रहे हैं, किस भावना से कर रहे हैं कर्म की रील में सब उतर रहा है। आप चाहे सारी दुनिया को ठग लीजिये, चाहे वेष परिवर्तन कर लीजिये, सब-कुछ बदल लीजिये, पर भीतर की भावना नहीं बदली तो कर्मों से कभी बच नहीं सकते।

आश्चर्य है, सबसे बड़ा आश्चर्य है, इतना सब करके आदमी कहता है- "हे भगवन्! मैं ऐड़ों कोई करियो जो ऐड़ो संकट आयो है।" कहने वाले कहते हैं- भगवन् जाने किस जन्म के कर्म उदय में आए हैं? इसके साथ मेरी क्या दुश्मनी है, मेरा क्या वैर है जो यह मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ा है।

ऐसा व्यवहार रखकर, आप भगवान के चरणों में पहुँचकर क्या शिफारिस करना चाहते हैं? मैं एक बात पूछूँ- "थारे कने कोई चोर आयने रहनो चावे तो क्या आप उसे अपने पास रखेंगे?" आप चोर को न घर में रखना चाहेंगे और न ही दूसरों के पास रखने को कहेंगे। जब आप उसकी कोई सहायता नहीं करना चाहते तो क्या भगवान उनकी सहायता करेंगे?

भगवान से कुछ भी छिपा हुआ नहीं है। भगवान से मांगने वाले अपना

व्यवहार बदलने की क्यों नहीं सोचते? दुःख है तो दुःख आया कहाँ से? दुःख पैदा किसने किया? दुःख काटने वाला कौन? आपको ज्ञात है दुःख भी स्वयं ने पैदा किया है एवं खुद ही उसे काट सकते हैं।

यह घर खराब है, यह दुकान शुगना री नहीं, छोरा रो नक्षत्र ठीक नहीं, इण बहू रो पगछेरो खराब है। आदमी ऐसा न जाने कितनी-कितनी बातें बोल जाता है। किन-किन पर दोषारोपण करता है? क्या-क्या सोचता है, आप अपना चिन्तन करें।

आप चिन्तन करें तो आपको लगेगा, मैं कैसे अपने-आपको सुधारूँ? मेरे क्या-क्या दोष हैं? जिस दिन आप अपने दोषों को निकालने की सोंचेगे तो आपका शुभ चिन्तन रूप मननिधान बन जायेगा। आपका हर चिन्तन कर्म काटने वाला बन सकता है। आपके हर व्यवहार से पुण्य अर्जित किया जा सकता है, हर कर्म निर्जरा करने वाला बन सकता है। परन्तु कब? जब आप अपने मन, वाणी और शरीर का सदुपयोग करेंगे। जो योग्यता मिली है, जो सामर्थ्य मिला है और जो परिस्थिति मिली है, उसका सदुपयोग करेंगे।

आज ऋण लेकर मकान बनाने का युग है। न जाने किससे धन लेकर, किससे उधार लेकर मकान बनाया और उस पर अपना नाम लिखाना चाहते हैं। माल किसी दूसरे का है, सहायता किसी दूसरे ने की है, मेहनत किसी और की है। बीसियों जगह से लोन लिया। यह मकान किसका? घर का क्या लगा? लिया दूसरों से है और नाम अपना।

हमारी ये वृत्तियाँ-हमारा यह चिन्तन जब तक नहीं बदलता तब तक हम खुद असमाधि में हैं और साथ रहने वाले भी दुविधा में रहेंगे। भावना ही फलवती होती है अन्तर के परिणाम अगर शुभ हैं तो कार्य का परिणाम भी शुभ ही होगा। संघ समाज में भी आज इसी विवेक दृष्टि की आवश्यकता है। आप किसी भी रूप में संघ सेवा करें, अन्तर की निर्मलता के साथ करें, विनय व विवेक के साथ हो, कर्त्ता भाव न हो। छोटा सा कार्य भी अधिक फलदायी बन जाता है। जो भी करें निस्वार्थ निरभिमान वृत्ति से करें, सेवा, श्रद्धा व समर्पण की भावना से करें। रात-दिन दान देने वाला आँखे नीचे रखता है एवं उलीच भाव से देता है, क्यों? वह तो यही सोचता है-"देने वाला देत है, देता है दिन रैन, ये भरम मेरा करे, इण कारण नीचा नैन।" पुण्योदय से जो पाया है वह उपभोग के लिये नहीं सदुपयोग के लिये है, मुझे पूर्व पुण्याई से मिला है, मैं कहाँ दे रहा हूँ, मैं तो एक माध्यम मात्र

हूँ। ग्रहण करने वाला स्वीकार कर मेरे पर उपकार कर रहा है। संघ सेवा में लेने आने वाला भाई मेरा बोझ हलका करने आया है, मुझे सेवा का अवसर देने आया है, इस भाव से किया गया दान ही सार्थक है अन्यथा नाम व प्रसिद्धि के लिये दिया गया दान तो लाखों की सम्पत्ति का सौदा कौड़ियों के बदले करने जैसा है।

आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) की बात याद आती है- मेड़ता में कभी चौरासी गच्छ के चौरासी स्थानक थे। पुण्यशाली जीव यह सोचकर कि मेरे पास दो मकान हैं, रहने के लिए एक पर्याप्त है, क्यों नहीं मैं एक मकान धर्म-साधना के लिए दे दूँ? ऐसे थे वे श्रावक। आज की स्थिति क्या? कई ट्रस्टी अपने को मालिक मान बैठे हैं। कहना होगा- कई हैं जो धर्मादा करते नहीं, धर्मादा खा रहे हैं। न जाने कितने-कितने लोगों ने दयालुता पूर्वक अपनी पूँजी लगाई, द्रव्य का ही नहीं समय का भोग दिया। किन्तु स्वामित्व कोई और जताते हैं। बनाया किसी और ने था, लड़ते कोई दूसरे ही हैं। यह नासमझी है। जो छूट जाने वाला है तथा जो अपना नहीं है उसे अपना मानना ईमानदारी नहीं है।

बात को समय के साथ पूरी करूँ। सबसे पहले हम तीर्थंकर भगवान की भाषा में समझें- न यह तन मेरा है, न यह जमीन मेरी है और न ही यह भवन मेरा है। मेरा होता तो छोड़कर जाता नहीं। छोड़कर जाता है इसलिए मेरा नहीं है। आप अभी हाँ में सिर हिला रहे हैं, परन्तु यह बात जीवन में प्रभाव छोड़े तो बात बने।

आप पुण्यशाली हैं। पुण्यशालिता के बल पर यहाँ तक पहुँचे हैं। आप अपनी दृष्टि को पवित्र करेंगे और आपके सम्पर्क में जो भी हैं उनको इस तथ्य से अवगत कराने का लक्ष्य रखेंगे तो आपका यहाँ आना और सुनना सार्थक होगा। कहने को तो आपमें से कई कह जाते हैं- जीव अकेला आया, अकेला जायेगा। कहना और बात है, कहे अनुसार जीवन में उतर जाय तो फिर कहना ही क्या। मैं कह गया- पशु को कोई हार नहीं पहनाता, बंगले में गली का कूड़ा-कचरा कोई नहीं भरता। आप इस अनमोल तन में कितने-कितने पाप भर रहे हैं, स्वयं सोचना। नहीं तो फिर वह कहावत सच हो जाएगी- ऊँचा चढ़ने देखो, घर-घर ओइज लेखो। आप अपनी दृष्टि बदलें, प्राप्त अवसर का सदुपयोग करें तभी आपका सुनना सार्थक होगा। ■

प्रवचन

जागें, जीवन में धर्म को उतारें

श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.

परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.द्वारा दिनाँक 27 मई, 2011 को मॉडर्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का संकलन श्री जगदीश जी जैन ने किया है। -सम्पादक

चरम तीर्थंकर महावीर की वाणी हमें प्रेरित कर रही है, संदेश दे रही है- जागो। जागने वाला पाता है, यह सर्वमान्य है। पाना कहीं बाहर से नहीं, अपितु अपने भीतर से है। अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख भीतर भरा हुआ है, उसे मात्र प्रकट करना है। प्रकट करने के लिये जागृत होना होगा। जैसे एक भाई 72 कलाओं में दक्ष है, यदि वह सोया हुआ है तो उसकी कलाएँ न तो स्वयं उसके लिये उपयोगी हैं, न ही दूसरों के लिए कारगर। यदि वह कलाविज्ञ जागता हुआ है तो वही कलाएँ उसके लिये एवं पर के लिए भी उपयोगी हैं, हितकारी हैं। इसी प्रकार इस आत्मा में अनन्त शक्ति है, अगर वह मोह की नींद में है तो सब व्यर्थ है और जागृत है तो सब सार्थक है।

मोह नींद को समाप्त करने के लिये अनन्त करुणा निधि तीर्थंकर भगवंत ने फूल के समान सुरभित सूत्र हमें प्रदान किये। उन्हीं सूत्रों में जैन गीता 'उत्तराध्ययन सूत्र' के नवम अध्ययन नमिपवज्जा के स्वाध्याय की पूर्व भूमिका में चर्चा चल रही थी कि युगबाहु की धर्म सहायिका मदनरेखा में अनेक सद्गुण थे। वह अक्षुद्रबुद्धि धारिणी थी। यानी सम्पत्ति एवं विपत्ति में भी एक जैसा धैर्य रखती एवं मर्यादाओं के पालन-रक्षण में सदैव सजग रहती थी। इन्हीं कारणों से धर्म उनसे प्रशंसित था, और वह भी धर्म से प्रशंसित थी। आज हमारी हालत विचित्र है। हम श्रावक तो कहलाते हैं, पर व्यवहार में धर्म का किञ्चित् भी विवेक नहीं। यहाँ सामायिक स्वाध्याय व प्रवचन श्रवण करते हैं, पर घर जाते ही पहले वॉसबेसिन पर हाथ धोने खड़े हो जायेगें। नल भी पूरा खोलेंगे। ऊपर से बातें करने में ध्यान भी बँटा हुआ है, ऐसे में असंख्यात जीवों की अनर्थ में हिंसा हो रही है, जिसका कुछ भी मलाल नहीं। इसी तरह पर्व तिथियों पर हरी और

साधारण काय की विराधना से भी नहीं चूकते।

जब तक जीवों के प्रति मैत्रीभाव या आत्मीय भाव नहीं है तब तक यह सब चलता रहेगा। आत्मीय भाव नहीं तो तनाव भी बढ़ेगा। पिता का पुत्र के प्रति, भाई का भाई के प्रति, गुरु का शिष्य के प्रति आत्मीय भाव नहीं है, इसी कारण तनाव पैदा होता है। तनाव में आदमी भान भूल जाता है। भूलना आज की प्रचलित बीमारी है। एक से कहा-भाई! आज सामायिक कर लेना, दूसरे दिन पूछने पर बोला- महाराज साहब! मैं तो भूल गया। अरे भाई! खाना, पीना, सोना, शादी पार्टी में जाना तो नहीं भूलते, यह धर्म ही क्यों भूलते हो? तो कारण है लगाव नहीं। जब तक किसी व्रत के प्रति निष्ठा नहीं, लगाव नहीं तब तक यह भूलने की प्रवृत्ति बनी रहेगी। लगाव को यहाँ आप मोह मत समझ लेना, लगाव यानी रुचि प्रतीति से है।

श्रावक की श्रावकपने में, साधु की साधुपने में रुचि होना आवश्यक है। साधुपने का पालन कोई हंसी-मजाक थोड़े ही है। आचार्य भगवंत फरमाते हैं- भाई! यह साधुपना है कोई खरबूजे का पणा नहीं, जो झट रखा और निगल गए। इसके लिये तपना पड़ता है। हाँ, तो बात चल रही थी कि मदनरेखा के कारण धर्म की प्रशंसा होती। पर हम इतना तो अवश्य धार लें कि हमारे कारण धर्म की, धर्म संघ की निंदा तो न हो। अगला गुण कहा- वह लौकिक व्यवहार में कुशल और पारलौकिक व्यवहार में निपुण थी। लौकिक व्यवहार यानी वह पति-परायण एवं गृहस्थी के कार्य में कुशल थी। आचार्य हस्ती के सुवाक्य में आया कि ''कुशल नारी ही घर की शोभा है।'' पुरुष व्यापार कुशल होता है, नारी व्यवहार कुशल होती है। लौकिक व्यवहार में कुशल बनने के सूत्र हैं- प्रिय व मृदु भाषी हो, इस प्रसंग को इस सूत्र से समझें-

कोऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम्।
को विदेशः सविद्यानां, कः परः प्रियवादिनाम्।।

(1) शक्तिशाली के लिये कोई कार्य बोझ नहीं, (2) परिश्रमी के लिये परदेश दूर नहीं, (3) विद्वान के लिये देश-विदेश में अन्तर नहीं, ''विद्वान सर्वत्र पूज्यते''। धनवान की प्रशंसा अपने मौहल्ले, गांव तक सीमित रह जाती है, पर विद्वान यत्र तत्र सर्वत्र पूजा, प्रशंसा पाता है। (4) प्रिय बोलने वाले का कोई शत्रु नहीं। यहाँ भी यही चौथी बात चल रही है प्रियभाषी। आज के युग में सुख से रहना है तो साधक इंगित कर कह रहे हैं- दो फैक्ट्री रखो। कहीं कपड़े की या

स्टील बर्तन की फैक्ट्री मत समझ लेना। एक है मुँह में शुगर फैक्ट्री, दूसरी दिमाग में आइस फैक्ट्री। जब भी बोलने का प्रसंग आये, मीठा बोलो, मधुर बोलो तो पराया भी अपना बन जायेगा। यात्रा करते सीट नहीं मिली हो तो सीट पाने के लिये थोड़ा टिकने के लिये कितनी मीठी भाषा में निवेदन करते हैं और घर जाते ही सीधा तू-तड़ाके, गाली-गलौच, रेकारे से बोलते हैं। जबकि मदनरेखा के मुख से फूल के समान शब्द झरते थे। आप सोच रहे होंगे, महाराज, भगवान के गुण गाने के बजाय एक इंसान के गुण गा रहे हैं, पर भाई! भगवान बनने के पहले इंसान बनना जरूरी है और जो इंसान के रूप में भगवान जैसे कार्य करते हैं उनको देख हमारे भीतर भी भाव जगते हैं कि मैं भी ऐसा बन सकता हूँ। आज हमारा व्यवहार बिगड़ता जा रहा है, इंसान का चौला जरूर है, पर इंसानियत कितने अंशों में हैं? चिन्तन का विषय है। आज लोग स्वार्थी अधिक होते जा रहे हैं, भगवान ने भव्य प्राणियों को इंगित कर फरमाया- **''सव्वभूयप्पभूयस्य सम्मं भूयाइं पासओ''** सभी प्राणियों को अपने समान मानो व समान ही समझो। पर मानव अपनों को ही लूटने में लगा हुआ है।

आज के मानव की तीन कार्यों में रुचि बढ़ती जा रही है- **पहला है- तोड़ना।** हर स्थान पर जोड़ने के बजाय तोड़ने में लगा है। क्या संघ-समाज, क्या घर-परिवार। हर जगह तोड़ने के अस्त्र प्रयोग किये जा रहे हैं, जिससे सम्बन्धों में मधुरता आने के बजाय कटुता का वातावरण बढ़ा है। आज नारद बुद्धि वाले ज्यादा हैं, नारायण बुद्धि वाले कम। आचार्य देव फरमाते हैं कि नारद बुद्धि वाले को शांति का वातावरण आँख में धूलिकण के समान खटकता है। वह लड़ाना जानता है। अगर कोई नहीं मिला तो वह एक रोटी का टुकड़ा ले, गली के दो कुत्तों को ही आपस में तू-तू करके लड़ायेगा। हमारी बुद्धि तोड़ने में नहीं, जोड़ने में लगे, एक दोहा जो आपने सुन रखा होगा-

बुद्धि ताहि सराहिए, जो सेवे जिन धर्म।
वा बुद्धि किण कामरी, जो पडिया बाँधे कर्म।।

लब्धबुद्धि द्वारा संघ-समाज में सामञ्जस्य पैदा करने वालों की आज अतीव आवश्यकता है न कि तोड़ने वालों की। यदि बुद्धि धर्ममय है तो ही सराहनीय है, अन्यथा पाप कर्म बंध करेगी।

दूसरी रुचि है ताड़ना। आज हर एक ताड़ना-तर्जना में लगा हुआ है। सास बहू को, बाप बेटे को, मालिक नौकर को, गुरु चेले को और कहीं-कहीं

चेला गुरु को। याद रखिये- यदि तर्जना है तो स्नेह, सम्मान नहीं रहेगा। बहू यही कहेगी कि कितना ही व्यवस्थित सुन्दर काम कर लो, पर इनकी आदत तो टोकने की ही है। ताड़ना द्वारा प्रेम और आदर बढ़ता नहीं, घटता है। फिर दूरियाँ बढ़ती जाती हैं कि जब देखो ये तो ताड़ते ही रहते हैं, इनसे तो दूरी ही भली। इस तरह की मानसिकता को बढ़ावा मिलता है। जो मानव-समाज एवं घर-परिवार के लिये हितकारी नहीं। प्रेम से कही बात का असर होता है, सुधार की संभावना का आधार मजबूत होता है। ताड़ना अवसरानुसार कभी-कभी हो, रोज-रोज नहीं। गुरु भी ताड़ते हैं, पर कभी-कभार। उसमें भी शिष्य के हित की भावना का पक्ष प्रधान रहता है।

तीसरी रुचि है- पछाड़ना। प्रतिस्पर्धा के इस युग में मानव आज एक दूसरे को पछाड़ने, नीचे पटकने में लगा हुआ है। गिराने की रुचि ज्यादा है। समाज का कोई भी भाई अगर अच्छा प्रशंसनीय कार्य कर रहा हो, उसके नाम की प्रसिद्धि हो रही हो तो उसको बढ़ावा देने वाले, प्रेरणा करने वाले कम होंगे और उसका नाम धूमिल कैसे हो, इस तरह नीचा गिराने वाली सोच की संख्या वाले अधिक होंगे। जबकि पछाड़ने वाले स्वयं हमेशा पिछड़ जाते हैं- यानी पीछे रह जाते हैं। हमें एक दूसरे का उत्साह या मनोबल बढ़ाकर उसे आगे बढ़ाने वाली भावना रखनी चाहिए, ताकि सभी की प्रगति का मार्ग प्रशस्त हो।

श्रद्धेय महाराज श्री का पदार्पण हो गया है। उनके सरल, सरस, व्यावहारिक उद्‌बोधन को सुन मदनरेखा की तरह लौकिक एवं पारलौकिक व्यवहार में पारगंत बनें। आप भी धर्म के मर्म को समझकर धर्मानुरागी बनें। संक्षिप्त में कहूँ- मदनरेखा धर्म में अवलम्बन रखती थी। वह आकृति से सुन्दर एवं गुणों से भी सम्पन्न थी। यह जरूरी नहीं कि ऐसे दोनों संयोग हर किसी में मिलते हों। जैसे रोहिड़े का फूल- दिखने में सुन्दर, पर गंध रहित होता है। दिखने में आकृति पहले दिखती है, प्रकृति बाद में। इसलिए आज का मानव आकृति को तो सुधारने, संवारने में लगा हुआ है, पर प्रकृति व संस्कृति को ताक में रख कर चल रहा है। प्रकृति यानी स्वभाव, गुण। यदि ये सुधर गये तो आकृति और अधिक आकर्षक हो जायेगी। चेहरे से पहले चारित्र को सुधारकर लौकिक एवं पारलौकिक व्यवहार में कुशल एवं निपुण बनें। अब श्रद्धेय महाराज श्री से वीतरागवाणी श्रवण कर हृदयंगम कर संसार को सीमित करने के लिये साधना में चरण बढ़ाएँ। इन्हीं शुभ भावों के साथ.....। ■

गीत

सदा रहे दृढ़ संकल्प शक्ति

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

(तर्जः- तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो.....।)

सदा रहे दृढ़ संकल्प शक्ति।
देना प्रभु वो चिंतन में युक्ति।।

विषयों की आँधी जब-जब डिगाए,
पुद्गल का सुख जब भ्रम को बढ़ाए।
"खणमित्त सुक्खा, बहुकाल दुक्खा"
कभी न भूलूँ आगम की सूक्ति।।

धन्य है उनको सेवा जो करते,
श्रुतज्ञान में और तप में जो रहते।
"कंखे गुणे जाव सरीरभेए",
साकार हो जाए जीवन में उक्ति।।

रमता रहूँ मैं उपयोग गुण में,
बढ़ता रहूँ मैं आतम की धुन में।
"समणोऽहं संजय" प्राणों से झलके,
जागृत रहे प्रभु जग से विरक्ति।।

गौतम सी हो जिन वचनों में 'तहत्ति',
इससे ही होती लक्ष्य में जयति।
"छंदं निरोहेण उवेइ मोक्खं",
आज्ञा आराधन से पायेंगे मुक्ति।।

-संकलन-नमन मेहता,
पीपाड़, जिला-जोधपुर (राज.)

वैज्ञानिक-लेख

जैन ब्रह्माण्ड और आधुनिक ब्रह्माण्ड की तुलनात्मक समीक्षा (3)

डॉ. जीवराज जैन

लोक का गणित: भगवती के अलावा स्थानांग, चन्द्रपण्णत्ति और सूर्यपण्णत्ति उपांगों में लोक की रचना के बारे में विस्तार से वर्णन मिलता है। इनके मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं:-

(A) **अधोलोक:**-सबसे नीचे की पृथ्वी पर 7 वाँ नरक लोक है। इसका प्रमाण 7R X 7R है। (चित्र-4, 5) फिर एक के ऊपर एक घटते प्रमाण से छठी से पहली नरक पृथ्वी है। पहली पृथ्वी का ऊपरी भाग 'मध्यलोक' में है। इसके निचले भाग में नारकावास व भवनपति देवताओं के भवन हैं। ऊपर से पहला और दूसरा आन्तरा छोड़कर तीसरे से बारहवें तक में भवनपति रहते हैं (भगवती)।

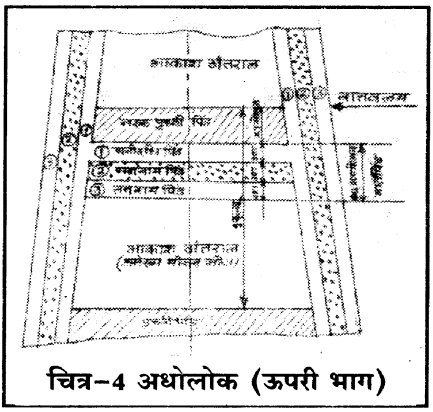

चित्र-4 अधोलोक (ऊपरी भाग)

ठोस और पोलार भूमि:-

(1) पाथड़ों में नारकियों के नरकावास पोलार हैं, बाकी सारा स्थल सर्वत्र ठोस पृथ्वी हैं।

(2) 12 आन्तरे भी ठोस हैं, भवनपति के भवनों के स्थलों को छोड़कर।

वैसे सारी रत्नप्रभा पृथ्वी ही ठोस पृथ्वी है। उसमें (A) व्यंतर नगर (B) नरकावास (C) भवनावास, ये 3 जितना क्षेत्र घेरे हैं, वह पोलार वाला है। शेष तो मौलिक पृथ्वी ही है। इस पृथ्वी के 1 राजू नीचे दूसरी भूमि अवस्थित है। ज्यों-ज्यों नीचे जाते हैं, इन पृथ्वियों पर अंधेरा

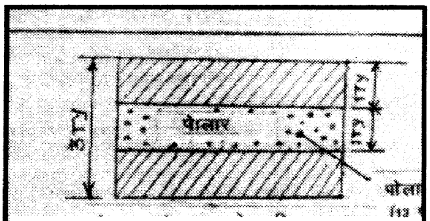

चित्र-6b पाथड़े की बनावट

बढ़ता है। इन पर दबाव व तापक्रम भी बढ़ता है। दो पृथ्वियों के मध्य आकाश का प्रमाण, पृथ्वी की तुलना में असंख्य गुणा ज्यादा है। (चित्र-6a 6b)

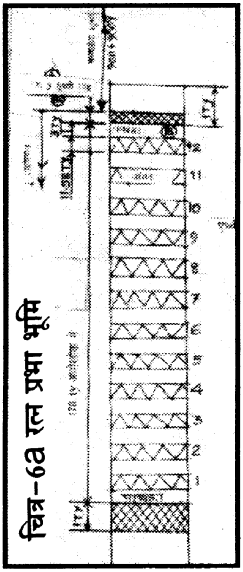
चित्र-6a रत्न प्रभा भूमि

2. सात-पृथ्वियाँ:- रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन भाग हैं- खरभाग, पंकभाग और अब्बहुल भाग। खरभाग और पंक भाग में भवनपति देव भवन बनाकर रहते हैं। नारकीय जीव अब्बहुल भाग में रहते हैं। (पहला नरकावास)। इस पृथ्वी की ऊपरी परत, जो 1000 योजन मोटी है, को चित्रा पृथ्वी कहते हैं। (चित्र-7) इसकी छत के 10 योजन नीचे से लेकर 900 योजन गहरी पोलार में व्यंतर देव रहते हैं।

(1) प्रत्येक पृथ्वी, वातपिंड और आकाश पर प्रतिष्ठित है, तथा वे एक दूसरे के नीचे क्रमशः पहली से सातवीं पृथ्वी तक अवस्थित हैं। (चित्र-4, 5)।

(2) सात नरक भूमियों में 49 पटल हैं (प्रस्तार)। नारकियों की आवास- भूमि के प्रस्तार-पाथड़े या मंजिल को पटल कहते हैं।

(3) नारकी जीवों के निवास-स्थान को बिल कहते हैं। उक्त पटलों में इन्द्रक, श्रेणीबद्ध और प्रकीर्णक-तीन प्रकार के बिल हैं। पटलों के बीचों-बीच रहने वाले नरक बिल को इन्द्रक कहते हैं। चारों दिशाओं में पंक्तिबद्ध रहने वाले बिल श्रेणीबद्ध कहलाते हैं तथा **श्रेणीबद्ध** बिलों के मध्य यत्र-तत्र रहने वाले बिलों को **प्रकीर्णक** कहते हैं।

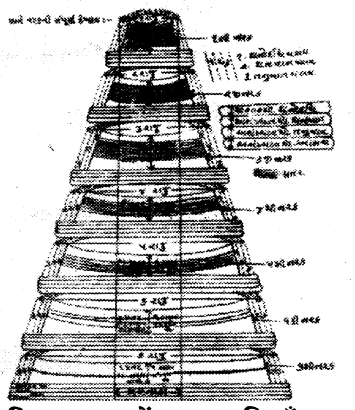
चित्र-5 सातों नरक भूमियाँ

(4) पहले से पाँचवें नरकलोक तक का **तापमान** क्रमशः बढ़ता जाता है। पाँचवें नरक के ऊपरी भाग में इतना ज्यादा ताप बताया गया है कि लोहे का पिंड भी क्षण मात्र में मोम की तरह पिघल जाये।

(5) पाँचवें नरक के निचले भाग से लेकर 7 वें नरक में, ठंड उत्तरोत्तर बढ़ती

जाती है। वहाँ लोह-पिंड का घोल क्षण मात्र में जम जायेगा।

(6) नारकों का शरीर वैक्रिय होता है।

(7) ऊपर से पहला दूसरा आंतरा छोड़कर, तीसरे से बारहवें तक में भवनपति हैं (भगवती)

(B) मध्यलोक:-

प्रथम पृथ्वी रत्नप्रभा का उपरिम भाग मध्यलोक है। हम लोग रत्नप्रभा की छत पर वास करते हैं। इसके मध्य में मेरु पर्वत है। मेरु पर्वत (चित्र-7) 1000 योजन रत्नप्रभा के भीतर है तथा 99,000 योजन इस पृथ्वी के ऊपर है। मेरु पर्वत के चारों तरफ द्वीपों और समुद्रों के वलय हैं। पहले के 2½ द्वीपों में ही मनुष्य पाये जाते हैं। उसके बाद के असंख्य द्वीपों में तिर्यंच व स्थावर जीवों का वास है। मेरु की तलहटी से 900 योजन की **ऊँचाई** तक तथा वहाँ (तलहटी) से 900 योजन नीचे तक मध्यलोक कहलाता है। धरातल से नीचे के भाग में (900 योजन) व्यंतर देव रहते हैं। धरातल से 790 योजन ऊपर के भाग में खाली आकाश है। वहाँ से फिर 110 योजन ऊँचाई तक ज्योतिष चक्र यानी सौर मंडल (चित्र-8) आदि हैं। ये सभी मध्यलोक के हिस्से हैं। देखिये चित्र-9। इसके ऊपर ऊर्ध्व लोक शुरु होता है।

मध्यलोक की पृथ्वी रत्नप्रभा का निचला भाग अधोलोक में है तथा वातवलय पर आधारित है (चित्र-10)। 110 योजन ऊँचे ज्योतिष चक्र के निचले 10 योजन में सूर्य विमान विचरण करते हैं। उसके ऊपर के 80 योजन में चन्द्र विमान तथा उसके ऊपर की 20 योजन ऊँचाई में कई तरह के ग्रह अवस्थित हैं।

(C) मध्यलोक में अढ़ाई द्वीप (चित्र-11a)

1. मध्यलोक पूर्व-पश्चिम में 1 राजू चौड़ा और उत्तर-दक्षिण में 7 राजू विस्तार वाला है। (दिगम्बर आम्नाय)। श्वेताम्बर परम्परा में मध्यलोक को 1 रज्जू विस्तार वाला ही माना है।
2. इसमें असंख्यात **'द्वीप-समुद्र'** के **युग्म** हैं।
3. **जम्बू द्वीप** केन्द्र में अवस्थित थालीनुमा 1 लाख योजन विस्तार वाला क्षेत्र है।
4. सभी द्वीप और समुद्र चूड़ी के आकार में एक-दूसरे को घेरे हुए बताये गये हैं। चित्र 11a, अढ़ाई द्वीप में मनुष्य।
5. हर 'द्वीप-समुद्र' का विस्तार, पूर्ववर्ती द्वीप-समुद्र के विस्तार से दूना-दूना है।

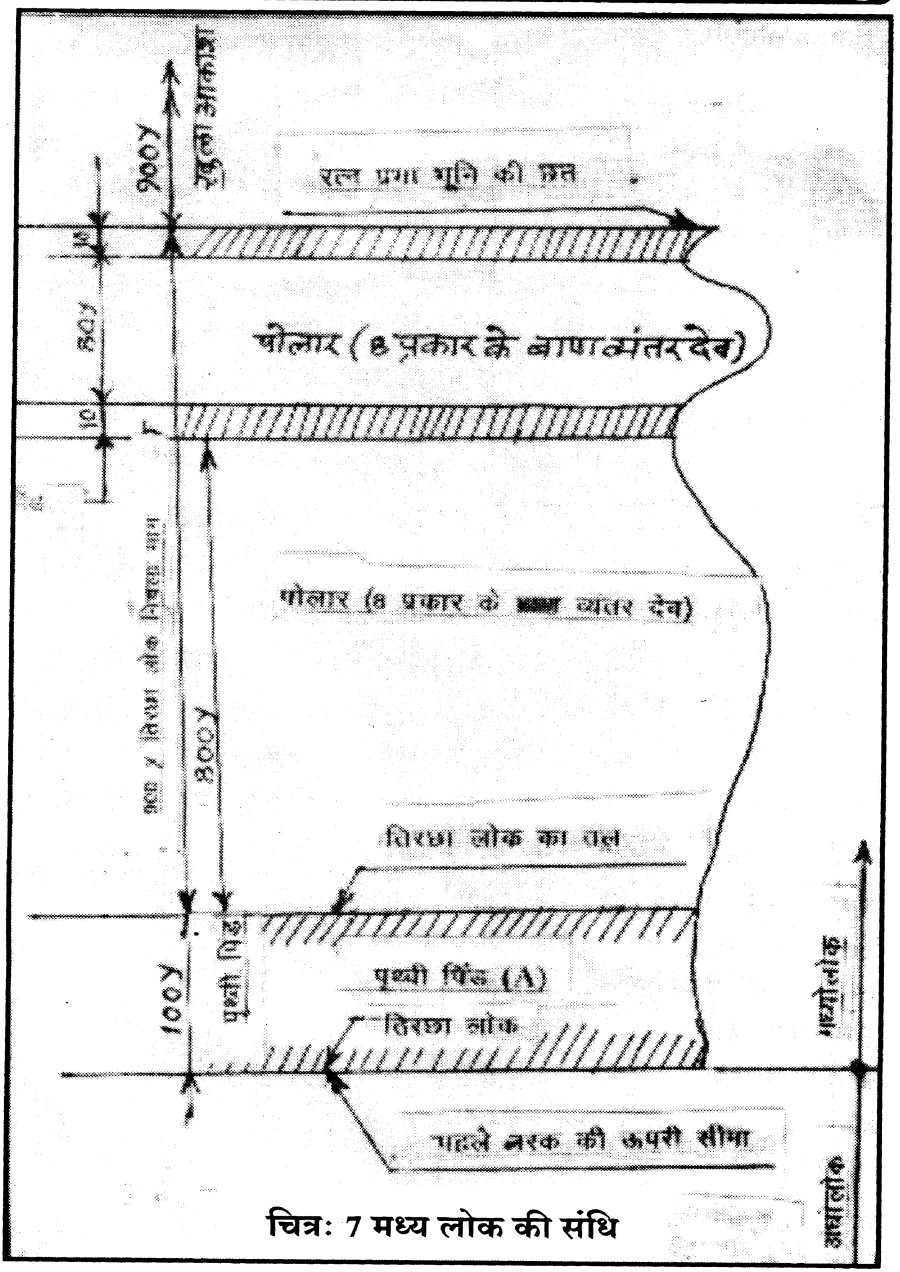

चित्र: 7 मध्य लोक की संधि

6. सबसे अंत में स्वयंभूरमण द्वीप है, जिसको स्वयंभूरमण समुद्र घेरे हुए है।

(D) विसंगति:

पूर्व-पश्चिम के 1 राजू विस्तार में असंख्य 'द्वीप-समुद्र' युग्म बताये गये हैं, तो उत्तर-दक्षिण में भी वे एक राजू तक ही सीमित रहेंगे। तब फिर 1 राजू के

चित्रः 8 सौरमण्डल (जम्बूद्वीप पर)

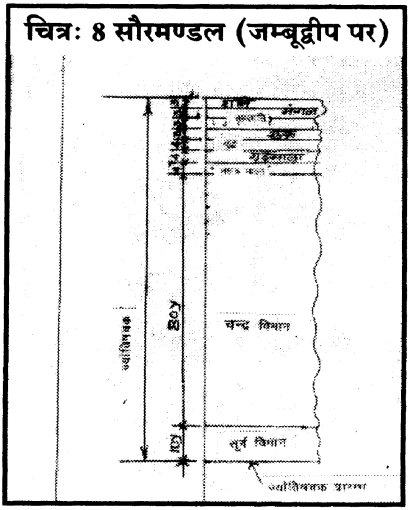

बाहर, 6 राजू में क्या है? देखिए चित्र-11b: मध्यलोक का मानचित्र। (विसंगति)

(E) अढ़ाई द्वीप में मनुष्यलोकः

जम्बू द्वीप (थाली का आकार), लवण समुद्र, धातकी खण्ड, कालोदधि (कालोदक) समुद्र और पुष्कर द्वीप का आधा भाग (सभी चूड़ी के आकार में) मनुष्य क्षेत्र कहलाता है।

पुष्कर द्वीप के मध्य मानुषोत्तर पर्वत (वलयाकार) इसको विभक्त करता है।

1. जम्बूद्वीपः इसमें भरत, हेमवत, हरि, विदेह, रम्यक्, हैरण्यवत और ऐरावत नामक 7 क्षेत्र हैं। तथा हिमवान, महाहिमवान, निषध, नील, रुक्मि और शिखरी नामक 6 वर्षधर या कुलाचल पर्वत हैं। पूर्व-पश्चिम लम्बायमान, ये छहों पर्वत भरत आदि क्षेत्रों को विभाजित करते हैं।

इन पर्वतों में क्रमशः पद्म, महापद्म, तिगिंच्छ, केशरी, महापुण्डरीक और पुण्डरीक 6 तालाब हैं। इन तालाबों से गंगा-सिंधु, रोहित-रोहितास्या, हरित-हरिकांता, सीता-सीतोदा, नारी-नरकान्ता, सुवर्णकुला-रूप्यकूला और रक्ता-रक्तोदा नामक 14 महानदियाँ निकलती हैं। ये नदियाँ भरत आदि क्षेत्रों में दो-दो कर बहती हैं। पूर्व की 7 नदियाँ पूर्वी लवण समुद्र और बाकी की नदियाँ पश्चिम समुद्र में गिरती हैं।

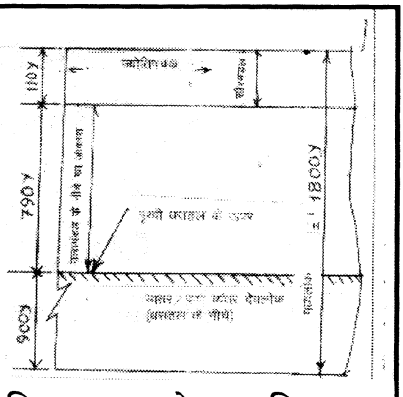

चित्रः 9 मध्यलोक का विन्यास

भरत क्षेत्र : जम्बूद्वीप के दक्षिणी किनारे अवस्थित है। इसके उत्तर में चुल्ल हिमवान पर्वत है। शेष दिशाओं में लवण-सागर है। इसका विस्तार 526 योजन वर्ग है। इसके मध्य में पूर्व-पश्चिम लम्बायमान विजयार्ध (वैताढ्य) पर्वत है। विजयार्ध पर्वत और गंगा-सिंधु नदियों के निमित्त से भरत क्षेत्र के 6 खण्ड हो जाते हैं।

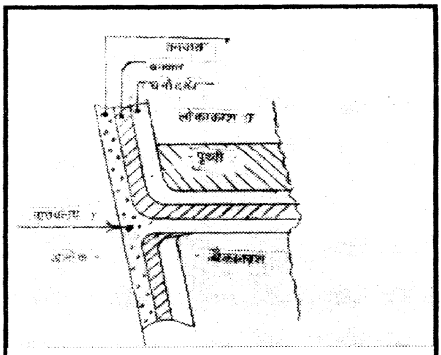

चित्रः 10 दो वातवलयों का जोड़/संधिस्थल

षट्खण्डः हिमवान पर्वत के पद्म तालाब के पूर्व और पश्चिम से क्रमशः गंगा और सिन्धु नदियाँ निकलकर, उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हुई, विजयार्ध पर्वत तक पहुँचती हैं। वहाँ से निकलती हुई भरत क्षेत्र के दक्षिण भाग में प्रवेश करती हैं। उत्तर-दक्षिण बहती हुई ये दोनों नदियाँ दक्षिणी भरत के अंत में अवस्थित लवण समुद्र में समाहित हो जाती हैं।

विजयार्ध के दक्षिण के तीन खण्डों में मध्य का खण्ड, **'आर्यखण्ड'** और शेष 5 खण्ड 'म्लेच्छ खण्ड' कहलाते हैं।

2. विदेह क्षेत्रः

मेरू पर्वत के **पूर्व और पश्चिम** का क्षेत्र **विदेह** कहलाता है। यह दो भागों में विभक्त है। ये निषध पर्वत के उत्तर और नील पर्वत के दक्षिण में स्थित है। **पूर्व** में सीता और **पश्चिम** में **सितोदा नदीः** इस क्षेत्र के मध्य में बहती है। ये दोनों नदियाँ लवण समुद्र में गिरती हैं।

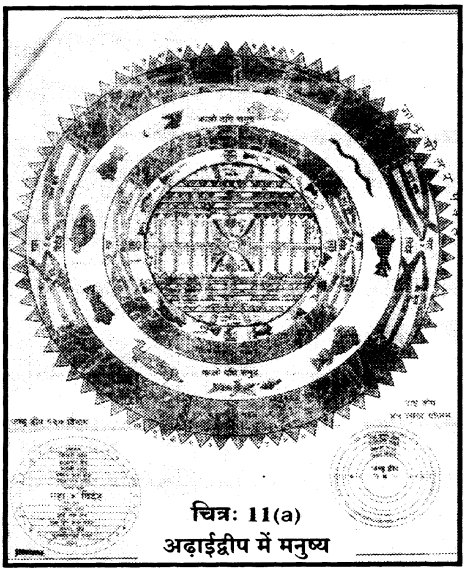

चित्रः 11(a)
अढ़ाईद्वीप में मनुष्य

इस प्रकार यह क्षेत्र चार भागों में विभक्त हो जाता है। इन क्षेत्रों के बीच अवस्थित पर्वत मालाओं और विभंग नदियों के कारण महाविदेह क्षेत्र के कुल 32 खण्ड बन जाते हैं।

3. कर्मभूमिः-

जहाँ असि, मसि, कृषि आदि षट् कर्म किये जाते हैं, तथा तप-संयम अनुष्ठान द्वारा मोक्ष प्राप्त किया

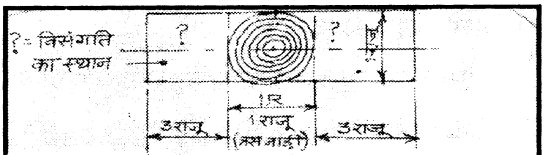

चित्रः 11b मध्यलोक में 1x7 राजू प्रमाण

जा सकता है, उसे **कर्मभूमि** कहते हैं।

(1) **ढाई द्वीप** में 5 भरत, 5 ऐरावत और 5 विदेह क्षेत्र हैं। अतः कुल 15 कर्मभूमियाँ हैं।

(2) **आर्यखण्डों की अपेक्षा**: एक-एक विदेह में 32-32 आर्यखण्ड हैं। इस हिसाब से 5 विदेहों में 160 और भरत-ऐरावत क्षेत्र के 10 आर्यखण्ड मिलाकर, जम्बू द्वीप पर कुल 170 कर्मभूमियाँ हैं।

(3) **काल**- भरत और ऐरावत क्षेत्रों के आर्यखण्डों में उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल के निमित्त से षट्काल परिवर्तन होता है। इस कारण अवसर्पिणी के प्रथम 3 आरे (सुखमा-सुखमा, सुखमा, सुखम-दुखमा) के कालों में तथा उत्सर्पिणी के अंतिम 3 कालों में यहाँ भोगभूमि रहती है। यह परिवर्तन **'आर्यखण्डों'** में ही होता है। भरत और ऐरावत के सभी 'मलेच्छ खण्डों' और विजयार्ध पर्वत पर स्थित विद्याधरों की श्रेणियों में सदा दुखमा-सुखमा काल के आदि और अन्त जैसी काल स्थिति रहती है। इसी प्रकार विदेहों के आर्यखण्डों में सदा सुखमा-दुखमा काल वर्तता है।

4. भोग-भूमि:

जहाँ के निवासियों को जीवन-निर्वाह के लिए षट्कर्म करना न पड़े, उसे भोगभूमि कहते हैं। यहाँ सभी आवश्यकताएँ दस प्रकार के कल्पवृक्षों से पूरी होती है।

ढाई द्वीप के 5 हेमवंत, 5 हरिवर्ष, 5 देवकुरू, 5 उत्तरकुरू, 5 रम्यक्, 5 हैरण्यवत, इन 30 क्षेत्रों में भोगभूमियाँ हैं।

इनमें सुखमा-सुखमा, सुखमा और सुखमा-दुखमा (प्रथम 3 आरे) के तुल्य काल की अवस्था रहती है। उसके अतिरिक्त ढाई द्वीप के बाहर अंतिम स्वयंभूरमण द्वीप में स्थित नगेन्द्र पर्वत तक के द्वीपों में जघन्य **भोगभूमि** है, जहाँ सुखमा-दुखमा काल चलता है। वहाँ संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच रहते हैं। इसे भोगभूमि-'प्रतिभाग' भी कहते हैं। नगेन्द्र के परवर्ती स्वयंभूरमण द्वीप के शेषभाग और स्वयंभूरमण समुद्र में 'कर्मभूमि' है। इसे कर्मभूमि-प्रतिभाग भी कहते हैं।

भोगभूमि की विशेषताएँ:-

(1) इसमें रज, धूम, अग्नि, हिम, बर्फ, शिला आदि से रहित भूमि होती है।

(2) वहाँ विकलत्रय, असंज्ञी, जलचर, नपुंसक, और लब्धि अपर्याप्त जीव नहीं

होते।

(3) रात-दिन का भेद, अंधकार तथा शीत-गर्मी की बाधाएँ भी वहाँ नहीं होती हैं। लेकिन श्वेताम्बर मान्यता अनुसार वहाँ दिन-रात न्यूनाधिक, हमारे यहाँ जैसा ही होता है। पूरे ढाई द्वीप में रात दिन, अंधकार आदि होते ही हैं। इसी अपेक्षा से ढाई द्वीप में काल, रात-दिन वर्तना रूप कहा है।

(4) रोग-उपद्रव और प्राकृतिक आपदाएँ नहीं आती हैं।

(5) वहाँ परिवार-कुटम्ब जैसी कोई संस्था नहीं होती। स्वामी-सेवक का भेद नहीं होता। जीव मंद कषायी होते हैं। सिंहादिक भी शाकाहारी होते हैं।

(6) वे विक्रिया द्वारा अपने शरीर के अनेक रूप बनाने में समर्थ नहीं होते हैं। (यहाँ के जीवों को निहार नहीं होता)। भोगभूमि में वैक्रिय रूप बनाने की क्षमता नहीं है। उन युगलियों के तीन शरीर ही कहे गये हैं।

(7) उत्तम, मध्यम और जघन्य भोग भूमियों के निवासी सम्यक्त्व ग्रहण करने वाले भी होते हैं। वे पहले से चौथे गुणस्थान वाले होते हैं।

5. महानदियाँ

जम्बूद्वीप में गंगा-सिंधु आदि 14 महानदियाँ हैं। धातकीखण्ड और पुष्करार्ध द्वीप की 28-28 महानदियों को मिलाने से ढाई द्वीपों में महानदियों की संख्या 70 होती है।

6. विदेह जनपदः

ढाई द्वीप संबधी 5 विदेह क्षेत्रों में कुल 32X5=160 जनपद या खंड हैं। इन खण्डों में तीर्थंकर, चक्रवर्ती आदि शलाका पुरुषों का सद्भाव रहता है।

7. विजयार्ध पर्वत

भरत क्षेत्र के ठीक मध्य में, पूर्व-पश्चिम लम्बायमान रजतमय विजयार्ध पर्वत है। यहाँ व्यंतर और भवनपति देवों के निवास हैं। यह 50 योजन चौड़ा और 25 योजन ऊँचा है। गंगा और सिंधु इसके भीतर में नीचे से होकर निकलती है।

8. इस विशिष्ट मानचित्र में महामनीषियों ने एक **केन्द्रीय अक्ष** की भाँति जम्बू द्वीप पर **'मेरु' पर्वत** का निरूपण किया है।

9. जम्बू द्वीप के आगे के द्वीप **'धातकी खण्ड'** में 2 मेरु-पर्वत तथा अगले **'पुष्करार्ध'** द्वीप के पूर्व-पश्चिम भाग में भी 2 मेरु-पर्वत बताये गये हैं। इस प्रकार अढाई द्वीप के मनुष्य लोक में 5 मेरू-पर्वत निरूपित किये गये हैं।

10. प्रथम मेरु-पर्वत को धुरी मान कर, अलंकृत चित्र में उसके चारों ओर जो

वलयाकार/चूडियों के माफिक क्षेत्र सजाये गये हैं, **उनमें निम्नलिखित विशेषताएँ** समझ में आती हैं:-

(1) मध्यलोक के सभी धरातली क्षेत्रों को, पहाड़ों को, नदियों को तथा समुद्रों को सुडौल और **संतुलित** रूप (सममिति के रूप) में सजाया गया है।

(2) सभी क्षेत्रों या द्वीपों में **समरूपता** है। लेकिन हर क्षेत्र के अपने मेरु-पर्वत हैं। जम्बूद्वीप में तो दिशा-सूचक के रूप में मेरु -पर्वत, केन्द्र में अवस्थित है। अन्य द्वीपों पर पूर्व और पश्चिम में 2-2 मेरु-पर्वत दर्शाये गये हैं।

(3) अढ़ाई द्वीप के हर मेरु के उत्तर और दक्षिण में भरत और ऐरावत क्षेत्र पाये जाते हैं। जिनके 6-6 खण्ड हैं। उनमें 1-1 आर्यखण्ड है तथा बाकी के 5-खण्ड, **'म्लेच्छ' खण्ड** है।

11. कुभोग भूमि

लवण समुद्र और कालोदक समुद्र के अंतर्द्वीपों की भूमियों को कुभोग भूमि कहते हैं। इनमें कुमानुष निवास करते हैं। यह सींग, पूंछ एवं पैर की अपेक्षा विचित्र आकृतिवाले मनुष्य होते हैं। ये वनवासी हैं तथा फल-फूलों से जीवन-यापन करते हैं। ये मनुष्य आयु का अनुभव करते हुए भी पशुओं की भांति आचरण करते हैं।

Life

Miss Meenu Jain

1. Life is like a FLUTE, It may have several holes and emptiness, but if we work on it, the same flute can produce magical melodies, Try it.

2. Life is so confusing, what we want, we don't get, what we get, we are not satisfied, what we expect never happens and what we hate generally repeats.

3. Life can be happier and stresfree if we remember one simple thought "we can't have all that we desire, but nature will give us all that we deserve.- *Surana Ki Badi Pole, Nagaur (Raj.)*

English-Section

Rsibhāsita: A Prākrta Work of Universal Values (1)

Prof. Sagarmal Jain

Rsibhāsita is one of the oldest works in Ardhamāgadhī Jain canonical literature. In the ancient Jain tradition it was recognized as an important canonical work. In Āvaśyaka Niryukti Bhadrabāhu has expressed his intent to write a Niryukti on Rsibhāsita. As no such niryukti is available todays, it is difficult to say that if it was written at all. Of course, Rsimandala which finds a mention in Acārānga Cūrni, certainly appears to be a later work which maybe based on that niryukti. All this goes to prove that upto a certain period Rsibhāsita must have been an important work in Jain tradition, Sthānānga refers to it as a part of Prasnavyākaranadasā. Samvāyānga has mentioned about its fourtyfour chapters. Nandisutra, Pakkhisutra etc. include it in the classification of kāliksutra Āavaśyaka Niryukti classifies it as work of Dharmakath-anuyoga.

Style and Period of Rsibhāsita:

According to its language, style and subject matter, this is an extremely old work among the Jain canonical works of Ardhamāgadhī language. I consider this work being of a period slightly later than that of first Srutaskandha of Ācārānga, but earlier than that of other ancient works like Sutrakrtānga, Uttarādhyayana, and daśavaikālika. Even its present form can, under no circumstances, be dated later than 3rd or 4th century B.C. As per the information available in Sthānānga, this work was originally a part of Praśnavyā-karanadasā; the ten Dasās described in Sthānānga. Samavāyānga informs that Rsibhāsita contains 44 Chapters. Thus Rsibhāsita certainly pre-dates these works. In Sutrakrtānga there is a mention of ascetics like Nami, Bahuk,

Ramaputta, Asit Deval, Dvaipayan, and Parāśara with the indications about their ritual beliefs. They have been addressed as ascetics and great men. These ancient Rsis have been recognised by Sūtrakrtānga, with the exposition by Arhat. All these Rsis attained liberation inspite of their consumption of seeds and water.

This is a firmly established fact, that this work was created prior to the sectarian organisation of Jainism. Study of this work explicitly indicates that at the time of its writing Jainism was completely free from sectarian bias. Mankhali Gośalaka and his philosophy find mention in Jain canons like Sūtrakrtānga. Bhagavati, and Upāsakdāsanga and Buddhist works like Sūttanipāta, Dīghnikāya (Sāmaňňa-falasutta). Although there is no specific mention of Mankhali Gosālaka in Sūtrakrtānga. yet its Niyativada has been commented upon in its chapter titled Ārdraka.

Analysing from the view point of the development of Sectarian outlook in Jainism, the fifteenth sataka of Bhagāvati which deals with Mankhali Gośalaka clearly appears to be of later period than even Sutrakrtanga and Upāsakdasānga. These two works as well as many other works of Pali Tripitaka mention the Niyativāda of Mankhali Gośalaka and then counter it also. Still, unlike Bhagavati, these works such as Suttanipāta has recognised the influential personality and value of the teaching of Mankhali Gośalaka by including his name in the list of six tirthankaras contemporary to Buddha. Rsibhāsita has gone a step further and eulogised him as Arhat Risi.

Considering from the view point of language we find that Rsibhāsita has, to a larger extent, maintained the most ancient form of Ardhāmagadhi Prakrit. For example in Rsibhāsita Ātmā has been mentioned as Ata but in later jain Anga literature Attā. Appā, Ādā and Āaya have been used, which are the variations, belonging to prākrits of later period. The free use of the consonant 'ta' conclusively puts this work in an earlier period than Uttarādhyayana, as in

Uttaradhyayana there is a tendency of avoiding this consonant. Rsibhāsita also abundently uses word-forms like Janati, Paritappati, Gachchhati, Vijjati, Pavattati, etc., this also confirms the antiquity of this work in context to both subject and language.

The historic background of Rsis of Rsibhasita:

It is clearly established fact, that most of the Rsis of Rsibhāsita were not connected with Jain tradition. The adjectives like Brahmin Parivrājak indicate that they were from non-Jain traditions. Also, some names like Dev-nārada, Asit-devala, Angirasa Bhārdwāja, Yājňavalkya, Bahuka. Vidura, vārisena, Krisna Dvaipayan, Aruni, Uddālaka, Nārāyana has been popular in Vedic tradition and their teachings are intact in Upanisads, Mahābhārata, and Hindi purānas even today. The names of Dev-nārada, Angiras Bhāradvāja, Dvaipāyan also find their mention in Sūtrakrtānga, Aupapātika, Antkrtdasā etc. Besides Rsibhāsita in Jain tradition, these names are aso found in Buddhist Tripitak literature. Similarly, Vajjiyaputra, Mahākasyapa, and Sariputra are famous personalities of Buddhist tradition and are mentioned in Tripitaka literature. Mankhaliputta, Ramputta, Ambad (Ambashta), Saňjaya (Velatthiputta) are such names which belong to independent Śramanic traditions and their mention can be found both in Jain and Buddhist traditions. Prof. C.S. Upasak, in his article "Isibhāsiyam and Pali Buddhist Texts: A Study" has discussed in details those Rsis of Rsibhāsita who have been mentioned in Buddhist literature. This article has been published in Pt Dalsukh Malvania Abhinandan Granth. Pārśva and Vardhamāna are the famous names of twenty third and twenty fourth Tīrthankars of Jain tradition. Ārdrak is also found in Sūtrakrtānga besides Rsibhasita. Besides these, Valkalchiri, Kummaputta, Ketaliputta, Tetaliputta, Bhayali, Indranaag are the names most of whom are mentioned in Isimandal and other Jain works. Valkalchiri and Kurmaputra etc. are also mentioned in Buddhist

tradition. However, even those who are neither mentioned in Jian nor is Buddhist tradition, cannot be termed as fictitious, because they may belong to some other sects of the śramanic tradition.

This is a firmly established fact that this work was created prior to the Jain religion being a sectarian organization. Study of this work explicitly indicates that at the time of its writing Jain religion was completely free of sectarian bias. Analyzing from the view point of the development of sectarian outlook, the portion of Bhagavati which deals with Mankhali Gośalāka clearly appears to be of later period.

From the viewpoint of religious tolerance, the period of Rsibhāsita is earlier than that of Pali-Tripitaka. Rsibhāsita indicates that it had been written much earlier then beginning of sectarianism in the Jain tradition. Except the first Śrutaskandha of Ācārānga all the other Jain canonical works reflect sectarian views in varying degrees. This proves that, leaving aside the first Śrutskandha of Ācārānga, Rsibhāsita is the oldest one, of all the Jain-canonical works. Even the language and the style of it indicate it to be a work of a period of some-where between first Śrutaskandha of Ācārānga and first skandha of Sūtrakrtānga.

In Isibhāsiyaim, the teaching of the forty five renowned saints of Sramanical and Brahmanical schools of thought such as Nārada, Bhāradvaja, Mankhali-Gośalāka and many other have been presented with due regards. They are remembered as arhat rsis and their teachings are regarded as an āgama. In the history of world religions there is hardly any example in which the teachings of the religious teachers of the opponent sects were included in one's own scriptures with due esteem and honor. Evidently, it indicates the latitudinarian, unprejudiced and tolerant out look of the author.

Universal values of Rsibhāsita:

Rsibhāsita contain various teachings of those Rsis, which have a universal value and can solve the various problems of our modern society. We are living in the age of science and technology. Science and technology has given us all the amenities of life. Due to the tremendous advancement in science and technology nowadays, life on earth is so luxurious and pleasant that it was never before, yet because of materialistic and mechanical out look and selfish nature, which we have developed these days, no body is happy and cheerful. Our desires have no limits. These unfulfilled desires create frustrations and tensions. Rsibhāsita mentions that "Yearnings are countless. An individual docketed in yearning attracts miseries numberless. The sole means of getting rid of miseries is by being yearning less. One engrossed in desires would not recognize his parents and teachers. To him they are of no significance. Such a being is prone to run down saints, princes and gods. Desire is the root of all bondage. It causes bereavement as well as multiple reincarnations. Desire-fulfillment obliges him who has scorned it. One who conquers desire with desirelessness is the heir to lasting happiness". (Rsibhāsita, 40.1,2,3,4)

"The aspirant should abstain from violence that results from his own deeds, at his instance or on his endorsement accruing from his ideation, word or deed. Nor should he abet another to indulge in such a heinous act. This is the prime mark of a true doctrine. The seeker should neither covertly nor overtly utter falsehood nor abet another to do so. He should not preach falsehood. The aspirant should stay scrupulously intact of all lure temptation and practice non-violence and non-attachment. He should be free of vices and utterly reticent, quiet and unattached. Harboring no proclivities, he should stay tranquil and disinterested in things around". (Rsibhasita1/2, 1,2) **(Continue...)**

-Prachya vidyapeeth, Shajapur (M.P.)

चिन्तन

धार्मिक विज्ञापनों का औचित्य

डॉ. दिलीप धींग

भारतीय समाजों में जैन समाज एक सम्पन्न समाज माना जाता है। सम्पन्नता जब केवल आर्थिक सम्पन्नता तक सीमित मान ली जाती है तो बहुत सारी कठिनाइयाँ पैदा हो जाती हैं। जैन समाज वैचारिक, शैक्षणिक, आध्यात्मिक और पारमार्थिक दृष्टि से भी एक अग्रणी समाज माना जाता है। लेकिन जब गैर-आर्थिक सम्पन्नताएँ घटने लगती हैं तो आर्थिक सम्पन्नता का अविचारित प्रदर्शन होने लगता है। ऐसे ही प्रदर्शनों के रूप में पिछले कुछ वर्षों से जैन समाज में एक प्रदर्शन बढ़ता जा रहा है, वह है- अनाप-शनाप धार्मिक विज्ञापन।

विभिन्न आयोजनों, जयन्तियों, प्रतिष्ठानों आदि अनेक निमित्तों को लेकर जैन समाज द्वारा अखबारों में बड़े-बड़े, रंगीन, आकर्षक और खर्चीले विज्ञापन दिये जाते हैं। एक अखबार में प्रकाशित एक दिन के विज्ञापन के हजारों लाखों रुपये खुशी-खुशी खर्च कर दिये जाते हैं, और किसी-न-किसी आयोजन को लेकर विभिन्न समाचार-पत्रों में वर्षभर ऐसे विज्ञापन छपते रहते हैं। कुछ सन्त भी समाज या भक्तों से विज्ञापन के नाम पर अनावश्यक खर्च करवा देते हैं। वर्षावास के दौरान समाचार-पत्रों में धार्मिक विज्ञापनों की संख्या अप्रत्याशित रूप से बढ़ जाती है। इस प्रकार जैन धर्म की विभिन्न सम्प्रदायों तथा व्यक्तियों द्वारा देशभर में सालभर के समस्त धार्मिक विज्ञापनों पर होने वाले खर्च का अनुमान लगाया जाए तो यह राशि करोड़ों ही नहीं, अरबों रुपयों में आँकी जा सकती है। यदि इस पैसे को किसी तरह बचाया जा सके तो हर साल एक विश्वविद्यालय जैन समाज बना सकता है अथवा अहिंसा, सेवा और साधना को समर्पित किसी बड़ी परियोजना के सपने को साकार किया जा सकता है।

समाज में इस प्रकार की फिजूलखर्चियों पर विशेष चिन्ता नहीं दिखाई पड़ती है। अलबत्ता महज विज्ञापनों के आकार के आधार पर सम्बन्धित व्यक्ति, संस्था अथवा आयोजन की सफलता को मापा जाता है और

उसका बखान किया जाता है। प्रबुद्धजनों की दृष्टि में ऐसी 'विज्ञापनी सफलता' वैचारिक विपन्नता और प्रबन्धकीय कमजोरी से अधिक कुछ नहीं हो सकती है। ऐसी विपन्नता और कमजोरी के अनेक कारण हो सकते हैं। कुछ कारणों की चर्चा यहाँ की जा रही है।

1. **सम्प्रदायवाद–** जैन समाज विभिन्न सम्प्रदायों में बँटा हुआ है, यह एक सामान्य बात है। लेकिन साम्प्रदायिक झगड़ों और अनावश्यक होड़ा-होड़ी चलते समाज का बेहिसाब पैसा विज्ञापनों में बहा दिया जाता है, यह चिन्ताजनक बात है। आध्यात्मिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टियों से ऐसी होड़ा-होड़ी कतई ठीक नहीं है। इन विज्ञापनों के माध्यम से अपने गुरु को अतिरंजित तरीके से महिमामण्डित किया जाता है। कभी-कभी परोक्ष रूप से दूसरों पर गैर-वाजिब प्रहार किये जाते हैं। जैन धर्म के विराट् दर्शन को समझने वालों को ऐसा नहीं करना चाहिये।
2. **व्यक्तिवाद–** कुछ व्यक्तियों के पास पैसे की कोई कमी नहीं होती है। त्वरित प्रसिद्धि के लिए वे किसी भी छोटे-बड़े निमित्त से अपना पैसा विज्ञापनों में बहा देते हैं। मसलन किसी धनाढ्य परिवार में कोई बड़ी तपस्या होती है तो और किसी को लाभ हो या नहीं हो, अखबार-मालिक को प्रत्यक्ष लाभ होता है। साथ ही विज्ञापन एजेंसियों को भी उनका कमीशन मिल जाता है। कषायों के शमन के उद्देश्य से जिस तपस्या की शुरूआत की जाती है, उसका समापन मानादि कषायों के पोषण में हो जाता है।
3. **नित-नये उत्सव–** सन्तों की जयन्तियाँ, उनके नगर-प्रवेश, विदाई, सामूहिक जप-तप, मन्दिरों की प्रतिष्ठा, स्थानक-भवनों का उद्घाटन आदि अनेक प्रकार के आयोजन समाज में होते रहते हैं। हर आयोजन का अपना प्रयोजन होता है। यह देखकर हैरानी होती है कि इन आयोजनों के कुल खर्च का एक बड़ा हिस्सा विज्ञापनों में चला जाता है। जितना खर्च विज्ञापन के लिए किया जाता है, उसका शतांश भी आयोजन के वास्तविक उद्देश्य का पोषण नहीं कर पाता है।
4. **धार्मिक राजनीति–** जैन समाज की धार्मिक राजनीति भी बड़ी तगड़ी चलंती है। जैन समाज के कुछ ऐसे संगठन हैं, जिनके

महत्त्वपूर्ण पदों तक पहुँचने के लिए अनेक उचित-अनुचित तरीके अपनाये जाते हैं, उनमें एक तरीका विज्ञापनों का भी होता है। पदारूढ़ होने के बाद बधाई-विज्ञापनों में भी ढेर सारा पैसा झोंक दिया जाता है। धार्मिक संगठनों में पदों की बड़ी गरिमा और जिम्मेदारियाँ होती हैं। व्यक्ति की बजाय संस्था और संस्था के उद्देश्यों के लिए धन का नियोजन होना चाहिये।

और भी अनेक कारण हो सकते हैं, जो धार्मिक विज्ञापनों के निमित्त बनते हैं। मौजूदा समाज-व्यवस्था में मीडिया जीवन से जुड़ गया है। उसे लोकतन्त्र का एक स्तम्भ माना जाता है। इस तरह समाचार-पत्र नागरिकों की दिनचर्या का एक हिस्सा बन चुके हैं। व्यावसायिक पत्रकारिता में विज्ञापन समाचार-पत्रों की आमदनी के प्रमुख आधार होते हैं। वे विज्ञापन उन्हें व्यवसाय, उद्योग, वाणिज्य, शासन और प्रशासन से मिलते हैं। कुछ सामाजिक, पारिवारिक तथा अन्य प्रकार के विज्ञापन भी अखबारों की आय के स्रोत बनते हैं। लेकिन आजकल धार्मिक विज्ञापनों से अखबारों को बेहिसाब आमदनी होने लगी है। अच्छी आमदनी के चलते अखबारों का विज्ञापन विभाग तथा विज्ञापन अभिकरण ऐसे धार्मिक विज्ञापनों के लिए विपणन करते हैं। यहाँ यह स्पष्ट कर देना ठीक रहेगा कि किसी धार्मिक पत्र-पत्रिका में अपने व्यवसाय का विज्ञापन देना तथा किसी धार्मिक पर्व के उपलक्ष्य में पत्र-पत्रिकाओं में अपने व्यवसाय का शुभकामना-विज्ञापन देना धार्मिक विज्ञापनों की श्रेणी में नहीं गिने जाएँगे।

वस्तुतः धर्म विज्ञापन की नहीं, आचरण की वस्तु है। जैन धर्म मुख्यतः आचार-प्रधान धर्म है। जैन धर्मानुयायी हमेशा से आचार में अव्वल रहे हैं। श्रेष्ठ आचार-परम्परा का जन-जन के जीवन में स्थान बने, इसलिए उसका सम्यक्-प्रचार भी होना आवश्यक है। लेकिन प्रचार के माध्यमों, तौर-तरीकों, लागत और परिणाम आदि पर विचार किया जाना चाहिये। मैं धर्म तथा धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों व कार्यक्रमों के सम्यक्-प्रचार का हमेशा पक्षधर रहा हूँ। एक लेखक और कार्यकर्ता के रूप में मैंने अवसर के अनुसार धर्म, संस्कृति, अहिंसा, करुणा, शाकाहार, जीवदया जैसे सर्वोपयोगी विषयों पर अपनी प्रचारात्मक भूमिका निभाई है और आज भी निभाता हूँ। लेकिन धर्म-प्रचार और गुरु-भक्ति के नाम से अखबारों में बड़े-बड़े विज्ञापन देखकर समाज की फिजूलखर्ची

पर खेद होता है। समाज की धार्मिकता और सम्पन्नता का जो चेहरा हमें विज्ञापनों तथा अन्य प्रदर्शनों के माध्यम से नज़र आता है, वह वास्तविक और पूर्ण नहीं है। उसके अलावा तथा उसके पार देखने की दृष्टि भी हमें विकसित करनी चाहिये।

जैन समाज की एक बड़ी आबादी आज भी गरीबी, अशिक्षा, अल्पशिक्षा, बेरोजगारी, अल्प-रोजगार, बीमारी जैसी अनेक विपरीतताओं में अपना गुजर-बसर कर रही है। उन स्वधर्मी बंधुओं की तरह-तरह से सच्ची मदद की जा सकती है। धर्म, अहिंसा, संस्कृति, शिक्षा और सत्साहित्य के प्रचार-प्रसार को ही लें, उसके लिए अनेकानेक प्रकार से कार्य किये जा सकते हैं। जैन संघों में शिक्षा-दीक्षा, ज्ञान-ध्यान, स्वाध्याय, साहित्य, जीवदया, सेवा, साधना आदि को समर्पित अनेक प्रकल्प चलाए जाते हैं। उदारमनाओं के सहयोग से ही उन प्रकल्पों (मदों) को उद्देश्यपूर्ण तरीकों से आगे बढ़ाया जा सकता है। संघ व समाज की अनेक श्रेष्ठ व उपयोगी योजनाएँ अर्थाभाव के कारण धीमी गति से आगे बढ़ती हैं अथवा रुक जाती हैं। गहराई से विचार करें तो श्रेष्ठ कार्यों और योजनाओं की कोई कमी नहीं है, जिनमें अपने धन का सम्यक्-नियोजन किया जा सके।

धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और समाज सेवा से जुड़े आयोजन व्यक्तिगत आयोजन की श्रेणी में नहीं आते हैं। पत्रकारिता के अनुसार उनका समाचार बनता है। समाचार-पत्रों का यह कर्तव्य होता है कि वे उन कार्यों और कार्यक्रमों के समाचार अपने पत्र में प्रकाशित करें, जो व्यक्तिगत नहीं हैं तथा समाचार के योग्य हैं। लेकिन कुछ समाचार-पत्र अथवा पत्रकार ऐसे समाचारों को जाने-अनजाने उपेक्षित कर देते हैं। समाचारों की एक शैली और मर्यादा होती है। उनमें सन्तों और आचार्यों के नाम के साथ आठ-दस उपाधियाँ लगाना संभव नहीं होता है। ऐसे में अधीर और अमीर व्यक्ति विज्ञापनों के लिए आगे आ जाते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि विज्ञापन देने से उनके समाचार ठीक ढंग से प्रकाशित हो जाते हैं। यदि वास्तव में ऐसा होता है तो यह विचार पत्रकारिता के नियमों और आदर्शों के अनुरूप नहीं है। समाचार और विज्ञापन दो अलग-अलग चीजें हैं। एक प्रभावक सन्त अथवा आचार्य की जयन्ती के उपलक्ष्य में एक पृष्ठीय विज्ञापन की बजाय एक चौथाई पृष्ठ पर अथवा

उससे भी कम स्थान पर उस सन्त के बारे में लेख या समाचार अथवा लेखात्मक समाचार का अधिक मूल्य होता है।

कितने ही जैन संघ विज्ञापनों पर जितना धन खर्च करते हैं, उतने धन से वे अपने संघ में मीडिया प्रकोष्ठ स्थापित कर सकते हैं। उस धन से साहित्य, शिक्षा और पत्रकारिता को प्रोत्साहित किया जा सकता है। ऐसे प्रोत्साहन से बहुआयामी व स्थायी लाभ होता है। असल में जैन समाज में विज्ञापन-चेतना तो है, लेकिन सच्ची व श्रेष्ठ प्रचार-चेतना नहीं है। विज्ञापन एक व्यावसायिक अवधारणा है। उसमें ज्ञान, कला और प्रतिभा की वैसी आवश्यकता नहीं पड़ती है, जैसी एक लेख अथवा समाचार लिखने की पड़ती है। आवश्यकता इस बात की है कि समाज में पत्रकारिता और लेखकीय कौशल को प्रोत्साहित किया जाए।

कुछ व्यक्ति अखबारों के लिए अच्छा लिखते हैं, कुछ पत्रकार अपने अखबार के दफ्तर में बैठकर सुकून देने वाले अच्छे समाचारों को, अहिंसा के समाचारों व लेखों को महत्त्व देते हैं तो ऐसे पत्रकारों और लेखकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। धार्मिक विज्ञापनों से ध्यान हटाकर ऐसे कार्यों को बहुत ही आसानी से प्रोत्साहित किया जा सकता है। चूंकि समाज में समाचार-चेतना नहीं है, इसलिए समाज में होने वाले धार्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सूचना विज्ञापनों के माध्यम से देनी पड़ती है। ऐसे अनिवार्य तथा आवश्यक विज्ञापनों को सूचनात्मक विज्ञापन के रूप में प्रकाशित करवाया जाना चाहिये। ऐसा करके सौ रुपये का कार्य दस रुपये में हो सकता है। बचे हुए नब्बे रुपये आयोजन के वास्तविक उद्देश्यों पर खर्च किये जा सकते हैं, कार्यकर्ताओं का सम्मान किया जा सकता है।

धार्मिक विज्ञापनों के साथ ही कुछ प्रकार के पारिवारिक और व्यक्तिगत विज्ञापनों पर भी अंकुश लगाया जा सकता है। जैसे परिजन के दिवंगत होने पर शोक-समाचार का विज्ञापन एक आवश्यक विज्ञापन है। लेकिन उनकी पुण्य-तिथि पर विज्ञापन देना आवश्यक नहीं है। विज्ञापन की बजाय अपनी भावना और सामर्थ्य के अनुसार कोई भलाई का कार्य करके हम हमारे उपकारियों को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। यहाँ मैं मेरे पिताजी का उदाहरण देना चाहूँगा। अक्टूबर 2004 में मेरे पिताजी परलोक सिधार गये थे। पते व दूरभाष नम्बर सहित उनका

शोक-समाचार (विज्ञापन) अखबारों में प्रकाशित हुआ था। उस विज्ञापन से विज्ञापन एजेंसियों ने अपनी पंजिका में तारीख व सम्पर्क सूत्र दर्ज कर लिये। पहली पुण्य-तिथि आने के सप्ताह भर पहले विज्ञापन एजेंसियों का फोन आया कि अमुक तिथि को आपके पिताजी की पुण्य-तिथि आ रही है, अखबारों में विज्ञापन दिलवाइये। मैं उनके अनुरोध से सहमत नहीं हो सका। मैंने मेरी माँ की आज्ञा से एक साहित्यिक संस्था के बैनर तले पिताजी की स्मृति में क्षेत्रीय स्तर पर राजस्थानी पुरस्कार शुरु कर दिया, जो निरन्तर गतिमान है।

जन्म-दिन, विवाह की वर्षगांठ तथा जीवन में प्राप्त होने वाली सफलताओं और उपलब्धियों का भी विज्ञापन देने की बजाय सम्बन्धित खुशी के निमित्त से कोई अच्छा कार्य करना चाहिये। ऐसा करने से हमारी खुशियाँ सही मायने में बहुगुणित हो जायेंगी। कुछ व्यक्ति सौ रुपये की भलाई करके दो सौ रुपये का विज्ञापन कर देते हैं। यह समझदारी नहीं है। अच्छा होता तीन सौ रुपये की भलाई की जाती। वस्तुतः धर्म और समाज के संसाधनों की आर्थिक नाकेबन्दी करना वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरुरत है।

-53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

जिनवाणी पर अभिमत

श्री सुनीत कुमार जैन

जून 2011 की जिनवाणी में प्रकाशित श्री राजकुमार जी जैन का आलेख ''गणित के सवाल नहीं होते रिश्ते'' पढ़कर सीखने को मिला कि रिश्तों में मधुरता तभी बरकरार रह सकती है जब सहनशीलता और समन्वय का समावेश इंसान के आचार-विचार में हो। दिलों में ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का भाव जगा कर ही देश और समाज को प्रगति की ओर ले जाया जा सकता है। आलेख सराहना के काबिल रहा। नारी स्तम्भ में डॉ. शैलजा का विचारक लेख ''घर को बनायें संस्कारशाला'' बहुत प्रभावशाली रहा। माता-पिता-गुरु इन तीनों के संयुक्त प्रयास से ही कामयाबी मिल सकती है। 'जिनवाणी' उन्नति की राहों पर हर पल आगे बढ़े, यही शुभकामना।

-अलीगढ़, जिला-टोंक (राज.)

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (13)

प्रश्न 3. देहादि के रहते हुए ही उनके आश्रय का त्याग सभी साधकों के लिए अनिवार्य है। इसे दशवैकालिक सूत्र से समझाइए।

उत्तर : ''अभिक्खणं काउसग्गकारी'' दशवैकालिक चूलिका 2.7, ''असइं वोसट्ठ चत्तदेहे'' 10.13। साधक बार-बार कायोत्सर्ग करे। प्राकृत शब्द कोशानुसार व्युत्सृष्टकाय का अर्थ है- कायोत्सर्ग में स्थिर रहना- देहादि के आश्रय का त्याग करना। देह से असंग हुए बिना, देह का आश्रय छोड़े बिना, कायोत्सर्ग नहीं हो सकता। और 'काउसग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं' उत्तराध्ययन, 26/47''- कायोत्सर्ग करते हुए देह का आश्रय छोड़ देने से सभी दुःखों का अंत होता है। उत्तराध्ययन 6.1 तथा 6.12 में Common Factor **''सव्वे ते दुक्खसंभवा''**- अविद्या, देह की आसक्ति अर्थात् जितने भी अविद्यावान पुरुष देह में आसक्त हैं, उन सभी को, सभी प्रकार के दुःख संभव हैं। शरीर में आसक्त होना, अविद्या है, जो सभी दुःखों का कारण है। देह का आश्रय समस्त दुःखों का कारण है तो देह के आश्रय का त्याग सभी दुःखों से मुक्ति है। देह के साथ कर्त्तव्य भाव जुड़ा है, कर्त्तव्य भाव से की हुई प्रवृत्ति श्रमयुक्त होती है। श्रम काया के आश्रय के बिना, पराधीन हुए बिना नहीं हो सकता। काया के आश्रित तथा पराधीन रहते हुए काया से असंग होना संभव नहीं है। काया से असंग हुए बिना कायोत्सर्ग नहीं। कायोत्सर्ग के बिना अर्थात् काया से जुड़े रहते, जन्म-मरण, शोक, अभाव, तनाव, हीन भाव, द्वन्द्व आदि दुःखों से मुक्ति कदापि संभव नहीं। शरीर को अपना मानने से आलस्य और इन्द्रियों को अपना मानने से विलास उत्पन्न होता है। आचारांग सूत्र (1.2.1) में कहा है-**''जे गुणे से मूलट्ठाणे, जे मूलट्ठाणे से गुणे''**- अर्थात् जो इन्द्रियों के विषय हैं वे ही संसार हैं और जो संसार है वह ही इन्द्रियों के विषय हैं। इन्द्रियों के द्वारा अरूपी आत्मा तक नहीं पहुँचा जा सकता। उत्तराध्ययन 14.19 में कहा है कि इन्द्रियाँ मूर्त को ही देख सकती हैं

अमूर्त को नहीं। अरूपी-आत्मा तक पहुँचने का साधन देह का उत्सर्ग है। काया-सम्बन्धी ममत्व, मोह, राग, सुखशीलता का त्याग करना कायोत्सर्ग है। शरीर से ममत्व आदि का त्याग करने से मन स्थिर हो जाता है। मन स्थिरता से ध्यान-साधना सुचारु रूप से हो जाती है। उस ध्यान साधना से पूर्व उपार्जित कर्म धुल जाते हैं। उसकी **''सुलहा सुगई तारिसगस्स''** 4.26 अर्थात् जो साधक देहादि के रहते हुए उसके आश्रय का त्याग करता है- उसकी सुगति सुलभ है।

प्रश्न 4. 'विद्यमान राग की निवृत्ति तथा नवीन राग की अनुत्पत्ति संयम है।'' इसे दशवैकालिक सूत्र से घटित कीजिए।

उत्तर- विद्यमान राग की निवृत्ति तप है, नवीन राग की उत्पत्ति नहीं होना संयम है। विद्यमान राग की निवृत्ति-पूर्वकृत कर्मों की निर्जरा=तप, नवीन राग की उत्पत्ति नहीं - नवीन कर्मों का बंध नहीं= संयम। ''धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो'' 1/1। दूसरों के अधिकारों की रक्षा-अहिंसा, तप, संयम = धर्म ये सब उत्कृष्ट मंगल रूप हैं। अहिंसा भगवती की सम्यक् साधना भी तभी हो सकती है, जब नवीन कर्मों के आगमन (आस्रव) का निरोध (संवर) और कर्मों की निर्जरा (तप) की जाए। अतः स्पष्ट ध्वनित होता है कि नवीन कर्मों के आगमन के निरोध अर्थात् संयम के द्वारा नवीन राग की उत्पत्ति नहीं होती, और तप से कर्मों की निर्जरा अर्थात् विद्यमान राग की निवृत्ति होती है। दशवैकालिक 6.68 में कहा है कि 'अमोहदर्शी' तप में रत साधक, ''धुणंति पावाइं पुरे कडाइं'' पूर्व के पाप-कर्मों को नष्ट कर देता है और 17 प्रकार के संयम का पालन करने वाला साधक 'णवाइं पावाइं ण ते करंति'- नवीन कर्मों को नहीं बाँधता है। कर्म-क्षय करने के अमोघ उपाय हैं- संयम और तप। संयम से नये कर्मों का आस्रव रुक जाता है (नवीन राग की उत्पत्ति नहीं) तथा तप पूर्व संचित कर्मों को नष्ट कर देता है (विद्यमान राग की निवृत्ति)।

प्रश्न 5. निष्कामता स्व-धर्म है, शरीर धर्म नहीं। इसकी पुष्टि दशवैकालिक सूत्र से कीजिए।

उत्तर- ''इमं शरीरं अणिच्चं'' उत्तराध्ययन 19.13- यह शरीर अनित्य है। ''असासय सशेरम्मि'' उत्तराध्ययन 19.14 यह शरीर अशाश्वत है।

दशवैकालिक 10.21 में देहवास अशुचिमय है- ऐसा कहा, तो आचारांग 1.5.2 में कहा- शरीर पहले या पीछे छूटने ही वाला है, उसका विध्वंस होने ही वाला है, वह ध्रुव नहीं, अनित्य है, अशाश्वत है। जबकि धर्म को आचारांग सूत्र 1.4.1 में "एस धम्मे सुद्धे णिइए सासए'- सूत्र में कहा गया है कि धर्म शुद्ध है, नित्य है, शाश्वत है, अविनाशी है। शरीर विनाशी तत्त्व है और धर्म अविनाशी, शाश्वत है, क्योंकि धर्म भूतकाल में था, वर्तमान में है और भविष्य में रहेगा। मिटने वाला कभी अमिट नहीं हो सकता, विनाशी कभी अविनाशी नहीं हो सकता, इसलिए जो अमिट है, वह धर्म है।

अपने को देह मानना- विवेक विरोधी विश्वास अर्थात् मिथ्यात्व है। अपने में से देह-भाव का त्याग करना विवेकयुक्त विश्वास अर्थात् सम्यक्त्व है। शरीर से जातीय तथा स्वरूप की एकता नहीं है तथा जिससे जातीय एवं स्वरूप की एकता नहीं, भेद-भिन्नता की दूरी है, देशकाल की दूरी है वह धर्म कैसे हो सकता है? स्वधर्म दूरी नहीं नजदीकी है। अतः स्पष्ट है कि शरीर, निष्कामता धर्म नहीं, फिर धर्म क्या? मिली हुई स्वाधीनता का दुरुपयोग नहीं करना धर्म है। शरीर का सदुपयोग किसमें? प्रारम्भ में सेवा में तथा अन्त में संथारा में। आगमों में जगह-जगह पर वैयावृत्त्य करने का विधान आया है। उत्तराध्ययन 32/3 "तस्सेसमग्गो गुरुविद्ध सेवा।" नव तत्त्व में सेवा को आभ्यन्तर तप बताया है। तत्त्वार्थसूत्र में सेवा के दस पाये बताये हैं। सेवा तभी होती है जब अपने शरीर से ममत्व टूटता है। आचारांग सूत्र 1.2.6 "जे ममाइयं मतिं जहाति से जहाति ममाइयं" अर्थात् जो ममत्वबुद्धि का त्याग करता है, वह ममत्व का त्याग करता है। जब साधक शरीर से ममता का त्याग करता है तो स्वतः निर्ममता आती है। निर्ममता आते ही साधक दूसरों की सेवा करने में तत्पर हो जाता है। अर्थात् काया का सदुपयोग होता है। दूसरों की सेवा में अपना हित समाहित है। सेवा से साधक अशुभ प्रवृत्ति से हटकर शुभ प्रवृत्ति की ओर बढ़ता है। संक्षेप में कहें तो- सेवा स्वार्थभाव को मिटा देती है, जिसके मिटते ही निष्कामता आ जाती है। निष्कामता आते ही देहाभिमान गल जाता है। अतः स्पष्ट है कि निष्कामता स्व-धर्म है, शरीर-धर्म नहीं।

(क्रमशः)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 67)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(बकुश व प्रतिसेवना कुशील)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– बकुश व प्रतिसेवना कुशील का अन्तर कितना होता है?

समाधान– बकुश व प्रतिसेवना कुशील का अन्तर होता भी है और नहीं भी होता है। क्योंकि एक जीव की अपेक्षा विचार करें तो अन्तर हो सकता है तथा अनेक जीवों की अपेक्षा विचार करें तो अन्तर नहीं होता है। बकुश व प्रतिसेवना कुशील निर्ग्रन्थ बनने के बाद यदि कोई असंयम में चला जाये तथा निगोद में चला जाये तो वहाँ की अपेक्षा देशोन अर्ध पुद्गल परावर्तन काल निगोद में रह सकता है तथा बाद में वहाँ से निकलकर निर्ग्रन्थ बनकर मोक्ष में जा सकता है। अतः उत्कृष्ट अन्तर देशोन अर्ध पुद्गल परावर्तन काल है, जघन्य अन्तर तो अन्तर्मूहुर्त का हो सकता है।

अनेक जीवों की अपेक्षा बकुश व प्रतिसेवना कुशील कोई न कोई सदैव मिलते ही हैं। महाविदेह क्षेत्र आदि में सदा-सर्वदा मिलने के कारण अनेक जीवों की अपेक्षा से उनमें अन्तर नहीं पड़ता है।

जिज्ञासा– एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त क्यों बतलाया है?

समाधान– यह नियम है कि कोई भी बकुश व प्रतिसेवना कुशील साधु अपने स्वरूप को छोड़कर पुनः उसी स्वरूप को प्राप्त करता है तो उसे कम से कम अन्तर्मुहूर्त का काल तो लगता ही है।

जिज्ञासा– बकुश और प्रतिसेवना कुशील में कौनसा भाव होता है?

समाधान– बकुश और प्रतिसेवना कुशील में क्षयोपशम भाव होता है।

यद्यपि जीव में पाँच भाव होते हैं, किन्तु यहाँ पर तीन भावों की अपेक्षा से अर्थात् चारित्र मोहनीय कर्म से सम्बन्धित उपशम, क्षयोपशम और क्षायिक इन तीन भावों की अपेक्षा से पृच्छा की गई है। इन तीन भावों में से बकुश व प्रतिसेवना कुशील में एक क्षयोपशम भाव होता है। क्योंकि बकुश एवं प्रतिसेवना कुशील में छठा व सातवां ये दो गुणस्थान ही होते हैं, इन दोनों गुणस्थानों में चारित्र मोहनीय कर्म का क्षयोपशम ही रहता है, क्षय व उपशम नहीं हो पाता।

जिज्ञासा– चारित्र मोहनीय का क्षय, उपशम व क्षयोपशम किन-किन गुणस्थानों में होता है?

समाधान– चारित्र मोहनीय कर्म का क्षय बारहवें, तेरहवें तथा चौदहवें गुणस्थान में रहता है। मोहनीय कर्म का पूर्ण उपशम ग्यारहवें गुणस्थान में होने के कारण उपशम भाव ग्यारहवें गुणस्थान में होता है, जबकि चारित्र मोहनीय का क्षयोपशम साधु-साध्वियों की अपेक्षा छठे से दसवें गुणस्थान तक होता है। अन्य अपेक्षा से विचार करें तो चौथे, पाँचवें गुणस्थान में भी चारित्र मोहनीय कर्म की प्रकृतियों का क्षयोपशम रह सकता है।

जिज्ञासा– बकुश और प्रतिसेवना कुशील एक समय में कितने होते हैं?

समाधान– बकुश व प्रतिसेवना कुशील प्रतिपद्यमान अर्थात् नये बनने की अपेक्षा कदाचित् होते हैं, कदाचित् नहीं होते। यदि होते हैं तो जघन्य एक, दो या तीन और उत्कृष्ट शत-पृथक्त्व अर्थात् दो सौ से लेकर नौ सौ तक होते हैं। पूर्व प्रतिपन्न अर्थात् पहले के बने हुए की अपेक्षा जघन्य-उत्कृष्ट कोटि शत-पृथक्त्व अर्थात् दो सौ से नौ सौ करोड़ तक होते हैं।

बकुश का परिमाण दो सौ से तीन सौ करोड़ तक तथा प्रतिसेवना का परिमाण चार सौ से छह सौ करोड़ तक जानना चाहिए। अतः अल्पबहुत्व की अपेक्षा कथन करें तो यह कहा जा सकता है कि बकुश से प्रतिसेवना कुशील संख्यात गुणे होते हैं।

(क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (5)

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरि

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा तथा द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।-**सम्पादक**

यश,

तुम्हें जानकर कदाचित् आश्चर्य होगा कि सत्य भी तीन प्रकार के हैं।
एक है- प्रातिभासिक सत्य
दूसरा है- व्यावहारिक सत्य और
तीसरा है- पारमार्थिक सत्य।
जो 'नहीं है' इसके बावजूद 'है' ऐसा लगता है
उसका नाम है प्रातिभासिक सत्य।
जो वर्तमानकाल में है, परंतु 'भूतकाल' में नहीं था और 'भविष्यकाल' में भी नहीं रहेगा उसका नाम है व्यावहारिक सत्य और
जो 'भूतकाल' में भी था, 'वर्तमानकाल' में भी है और
'भविष्यकाल' में भी रहेगा उसका नाम है पारमार्थिक सत्य।
मान लो कि तुम बम्बई से दिल्ली जाने के लिए
राजधानी एक्सप्रेस में सफर कर रहे हो।
तीव्रगति से जा रही ट्रेन में बैठे-बैठे जब तुम
खिड़की से बाहर देखते हो तब तुम्हें वृक्ष तथा मकान
दौड़ते हुए दिखाई देते हैं।
तुम जानते हो कि ट्रेन ही दौड़ रही है,
परंतु ट्रेन की तीव्रगति तुम्हें भ्रमित कर देती है और
इसीलिए तुम्हें वृक्ष तथा मकान दौड़ते हुए दिखाई देते हैं।
बस, यही है प्रातिभासिक सत्य जो झूठ होने पर भी सत्य लग रहा है।

मैं तुमसे ही पूछता हूँ-
ऐसे सत्य को लेकर क्या तुम किसी के साथ झगड़ने के लिए तैयार हो जाओगे?
तुम्हारे ऐसे भ्रामक सत्य को कोई ललकारे तो क्या तुम
उसके साथ संघर्ष करने के लिए तैयार हो जाओगे?
तुम्हारा जवाब होगा- 'नहीं।'
कारण?
यही कि जो है ही नहीं
उसके अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रयास करने का कोई अर्थ ही नहीं है।
मृगजल- जो है ही नहीं
उसके अस्तित्व को सिद्ध करने की कोई चुनौती दे तब
मौन ही उसका श्रेष्ठ जवाब हो सकता है।
संक्षिप्त में, प्रातिभासिक सत्य कभी संघर्ष का कारण नहीं बनता।
उसे कभी संघर्ष का कारण बनाना योग्य नहीं है।
इतनी सीधी-सादी समझ तो अल्पबुद्धि के पास भी होती है।
लेकिन व्यावहारिक सत्य ऐसा है कि आदमी
उसे निरन्तर संघर्ष का कारण बनाता ही रहता है।
संबंध-विच्छेद में भी यह बीच में आता है और
मन-मुटाव में भी सत्य ही केन्द्रस्थान पर होता है।
मन की अप्रसन्नता भी इस सत्य को प्रधानता देने से
निर्मित होती है और जीवों के प्रति शत्रुता की जड़ में भी
इस सत्य का दुराग्रह ही मुख्य कारण होता है।
क्या तुम जानते हो कि
देह व्यावहारिक सत्य है-
गत जन्म में हमारे पास यह देह नहीं थी,
अगले जन्म में यह देह हमारे पास नहीं रहेगी।
रुपये व्यावहारिक सत्य है,
ब्रिटिशरों के जमाने में इसका चलन नहीं था,
भविष्य की सरकार इस चलन को रद्द कर दे ऐसी पूर्ण संभावना है।
किसी व्यक्ति के लिए हमारा निश्चित अभिप्राय व्यावहारिक सत्य है-

कल उस व्यक्ति के लिए हमारा यह अभिप्राय नहीं था,
आने वाले कल में हमारा अभिप्राय बदल जाए ऐसी पूर्ण संभावना है।
स्वजन व्यावहारिक सत्य है-
गतजन्म में ये स्वजन नहीं थे,
अगले जन्म में ये स्वजन नहीं रहेंगे।
आज हमारा जो मित्रवर्ग है वह व्यावहारिक सत्य है-
पिछले वर्ष हमारा मित्रवर्ग अलग था,
अगले वर्ष भी यही मित्रवर्ग रहेगा ऐसा हम पूर्ण विश्वास के साथ नहीं कह सकते।
पाप-कषाय, क्लेश-झगड़े, मारपीट-दाँव-पेंच
इन सभी के केन्द्र में तुम देख लो
तुम्हें वहाँ ''व्यावहारिक सत्य की पकड़'' ही दिखाई देगी।
महाराज साहब,
मेरी देह,
मेरे स्वजन,
मेरे रुपये,
मेरा मित्रवर्ग,
मेरा नाम-
ये सभी यदि व्यावहारिक सत्य है, तो पारमार्थिक सत्य क्या है?
यश,
आत्मा-पारमार्थिक सत्य है।
आत्मा के ज्ञानादि अनंतगुण-पारमार्थिक सत्य है।
आत्मा का निर्विकार स्वभाव - पारमार्थिक सत्य है।
गत जन्म में प्राप्त शरीर में भी आत्मा थी।
इस जन्म में जो शरीर मिला है उसमें भी आत्मा है।
अगले जन्म में जो शरीर मिलेगा उसमें भी आत्मा होगी
और जिस सौभाग्यशाली पल में सर्वकर्मों का क्षय करने में
सफल होकर हम मोक्ष में जाएँगें वहाँ भी आत्मा रहेगी।
संक्षिप्त में,

जो है नहीं, पर है ऐसा लगता है वह है प्रातिभासिक सत्य।
जो भूतकाल में नहीं था, भविष्यकाल में नहीं रहेगा, परंतु वर्तमानकाल में है
वह है व्यावहारिक सत्य और
जो कल, आज और आने वाले कल–तीनों काल में उपस्थित होता है
वह है पारमार्थिक सत्य।

अब मैं तुमसे ही पूछता हूँ–
व्यावहारिक सत्य की सुरक्षा होती हो वहाँ प्रातिभासिक सत्य को
छोड़ देने में तुम एक पल का भी विलंब नहीं करते,
तो फिर, जब एक ओर पारमार्थिक सत्य को और
दूसरी ओर व्यावहारिक सत्य को सम्हालने की बात हो तब तुम
इन दोनों में से किसे सम्हालोगे?
रुपयों के लिए क्या तुम आत्मगुणों का बलिदान देने हेतु तैयार हो जाओगे?
अहं को पुष्ट करने के लिए आत्मा को दुर्गति में ढ़केलने के लिए
सहमत हो जाओगे?
तुम्हारे अस्थायी अभिप्राय को सुरक्षित रखने के लिए
तुम द्वेषभाव की शरण में जाने हेतु तैयार हो जाओगे?
जल पर निर्मित होते बुलबुले जैसी तुम्हारी तुच्छ मान्यता को
अमल में लाने के लिए तुम किसी के साथ अपने मधुर संबंधों पर
चिनगारी रखने हेतु तैयार हो जाओगे?
जवाब दो?
जीवन में आज तक तुमने यही किया है या कुछ और?
तुम आज तक यही करते आये हो।
माना कि घर में निर्मित हुई परिस्थितियों को समझने में
बड़े भैया कभी गलती कर बैठे हैं।
ग्राहक को पहचानने में बड़े भैया की बुद्धि कमजोर सिद्ध हुई है।
तुम्हारी बात को तुम्हारे नज़रिये से समझने में
बड़े–भैया ने इन्कार कर दिया है।
अधिक सरलता के कारण वे कहीं मूर्ख बने हैं,

परिवारजनों को समझने में वे कभी असफल रहे हैं।
उनकी सज्जनता का किसी ने दुरुपयोग किया है।
बड़े भैया की इन 'कमजोरियों' के कारण तुम्हें
कहीं नुकसान का सामना करना पड़ा है,
परंतु, उस नुकसान से बचने के लिए उनके साथ तकरार करके
उन्हें मुँह पर सुनाते रहकर, उनके साथ भाषा प्रयोग में अविवेकी बनकर
संबंधों में तुमने जो कडुवाहट पैदा कर दी है
और उसके द्वारा घर में और परिवार में जिस
गंभीर वातावरण का निर्माण कर दिया है
उसे देखकर मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि
हवेली लेने के चक्कर में तुम मध्यप्रदेश गँवा बैठे हो।
रास्ते में गिरे पाँच रुपये के रुमाल को ढूँढने के लिए तुम
पाँच सौ रुपये का पेट्रोल जला चुके हो!
नाशवान व्यावहारिक सत्य को सम्हालने में तुम शाश्वत पारमार्थिक सत्य की उपेक्षा कर बैठे हो। **(क्रमशः)**

विचार

मौन का महत्त्व

सौ. कमला सिंघवी

साधना का उच्च साधन मौन है। मौन के वृक्ष पर शांति के फल लगते हैं। मौन से आंतरिक शक्तियाँ विकसित होती हैं। जिह्वा के बंद होने पर हृदय का विकास होता है। मौन साधना से संकल्प बल बढ़ता है। सत्य व्रत के आराधन एवं क्रोध-विजय में मौन बहुत बड़ा सहायक है। दो घंटा प्रतिदिन मौन रखना चाहिये। मौन-साधना में स्वाध्याय, ध्यान आदि करें। साधक को अपने आराध्य का स्मरण मौन युक्त होकर करना चाहिए। मौन से किये हुए जाप का प्रभाव गहरा होता है। मौन, अल्प उपधि एवं आत्म-निरीक्षण, ये तीनों ऊर्ध्व गति के मार्ग हैं। मौन से वाणी में बल व तेज भी जागृत होता है। मौन से एकाग्रता एवं तन्मयता की वृद्धि होती है। मौन के गहनतम पल में साधक स्वयं से सम्बन्ध जोड़ता है। आध्यात्मिक साधना का साधन मौन है। मौन से ही साधक को साध्य की प्राप्ति होती है।

-जैन पाठशाला, ज्ञान मंदिर, भड़गांव, जिला-जलगांव (महा.)

इतिहास

तीर्थंकर और उनके केवली वृक्ष

श्री आशीष कुमार जैन

जैन धर्म में 'जैन' शब्द 'जिन' शब्द से बना है जिसका अर्थ है- समस्त मानवीय वासनाओं पर विजय प्राप्त करने वाला। वास्तव में जैन धर्म में मानवीय वासनाओं पर विजय प्राप्त करने का प्रयास श्रेष्ठतम पुरुषार्थ के रूप में निरूपित है। तीर्थ का शाब्दिक अर्थ है- नदी पार करने का स्थान अर्थात् घाट। इस शब्द का आध्यात्मिक अर्थ है भवसागर (जन्म-मृत्यु के कारण) से मुक्त करने वाला स्थान। अतः जो भवसागर से पार कराने वाले धर्म रूपी तीर्थ का प्रंवर्तन करते हैं वे तीर्थंकर कहलाते हैं। तपस्या के क्रम में सभी तीर्थंकरों को विशुद्ध ज्ञान (केवल ज्ञान) की प्राप्ति किसी न किसी वृक्ष की छाया में हुई थी, अतः उन वृक्षों को जिनके नीचे तीर्थंकरों को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई, जैन धर्म में उन्हें केवली वृक्ष कहा जाता है। हिमाचल प्रदेश की यात्रा के समय तीर्थंकर वाटिका, गोपालपुरा चिड़ियाघर, धर्मशाला, पालमपुर रोड़, कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट में मैंने 24 तीर्थंकरों के केवलीवृक्षों की जो तालिका देखी, उसे वानस्पतिक महत्त्व की दृष्टि से प्रस्तुत कर रहा हूँ।

तीर्थंकर	संस्कृत नाम	हिन्दी नाम	वैज्ञानिक नाम (Botanical Name)
1. ऋषभनाथ	न्यग्रोध	वट वृक्ष	Ficus Bengalensis
2. अजितनाथ	सप्तपर्ण	चितवन, सप्तपर्णी	Alstonia Scholaris
3. संभवनाथ	शाल	साल,साखू	Shorea Robusta
4. अभिनन्दननाथ	सरल	चीड	Pinus roxburghii
5. सुमतिनाथ	प्रियंगु	पियंगु	Calicarpa macrophylla
6. पदमनाथ	प्रियंगु	पियंगु	Calicarpa macrophylla
7. सुपार्श्वनाथ	शिरीष	सीरस	Albizzia lebbek
8. चंद्रप्रभनाथ	नाग	नागकेसर	Mesua ferrea
9. पुष्पदंत	बहेड़ा	बहेड़ा	Terminalia belerica
10. शीतलनाथ	विल्व	बेल	Aegle marmelos
11. श्रेयांशनाथ	तेंदू	तेंदू	Diospyrus melanoxylon
12. वासुपूज्यनाथ	कदम्ब	कदम्ब	Anthocephalus chinensis

13. विमलनाथ	जम्बू	जामुन	Syzygium cumini
14. अनंतनाथ	पीपल	पीपल	Ficus religeosa
15. धर्मनाथ	दधिपर्ण	कैथा	Feronia limonia
16. शांतिनाथ	नंदी	तून	Toona ciliata
17. कुन्थुनाथ	तिलक	तिलक	Wendlandia exserta
18. अरहनाथ	आम्र	आम	Mangifera indica
19. मल्लिनाथ	अशोक	अशोक	Saraca asoca
20. मुनिसुव्रत नाथ	चम्पक	चंपा	Michelia champaca
21. नमिनाथ	वकुल	मौलश्री	Mimusops elengi
22. नेमिनाथ	वंश	बांस	Dendrocalamus strictus
23. पार्श्वनाथ	देवदारु	देवदार	Cedrus deodara
24. महावीर वर्धमान	साल	साल	Shorea robusta

-टाइप 4-42 बी, अणुप्रताप कॉलोनी, रावतभाटा, वाया कोटा-323307 (राज.)

चिन्तन-कण

महासती श्री रुचिता जी म.सा.

1. जब तक आप महापुरुषों के अमृत वचनों का रसास्वादन कर उसे जीवन में नहीं उतारेंगे तब तक शांति व सच्चा सुख संभव नहीं है।
2. आज तो संस्कृति बिगड़ रही है और उसके विकृत स्वरूप नित्य नए-नए सामने आ रहे हैं। ऐसे हालात में अपनी आत्मा को बचाना सबसे बड़ी चुनौती है।
3. काया और माया के पीछे ही यदि अपनी सोच व दौड़ लगी रही तो एक दिन जीवन व्यर्थ खोने पर बहुत पछताना पड़ेगा। इसलिए इस नर तन के चोले को जितना भी हो सके, धर्म के कार्य में लगाएं जिससे आत्मा को मुक्ति मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो सके।
4. दुनिया में मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो चिन्तन-मनन कर सकता है, परन्तु विडम्बना यह है कि आदमी का सारा चिन्तन बाहरी हो रहा है, आंतरिक नहीं। चिन्तन-मनन आत्मिक होना चाहिए तभी वह हित-अहित, सही-गलत, पुण्य-पाप के बारे में भेद-विज्ञान कर अपना आत्म-कल्याण कर सकता है।

-अलवर प्रवचन से संकलित

चिन्तन-सरिता

जीवन की सीख

डॉ. रमेश 'मंयक'

जीवन! मानव जीवन! नैतिकता का अभाव, जीवन में उच्छृखंलता का विकास। पैसे का उपयोग भोग-विलास में। परिणाम- अराजकता और तनावग्रस्त जीवन। क्या है-प्रयोजन?

जीवन की बगिया महकेगी- चारित्रिक विकास की सुवास से न कि कष्टों के कंटकों के अतिरेक से। यदि विलास को अपनाया तो वैराग्य कैसे आएगा? संग्रहण को स्वीकारा तो त्याग का राग कब सुन पाएगा?

असंयम की आग से जीवन में शान्ति की उम्मीदें कैसे की जा सकती हैं? संयम के शान्त जल में विहार करना आदर्श जीवन माना जाता है।

लेकिन आज क्यों लगा हुआ है जीवन में ग्रहण? क्या हमने ग्रहण कर लिया- विकारों, विकृतियों और गलत प्रवृत्तियों को? यदि हाँ तो फिर बोए पेड़ बबूल के आम कहाँ से होय?

हमारे जीवन में लगा हुआ ग्रहण कब होगा समाप्त? पाँच की संख्या तो एक-एक है, परन्तु जोड़ें तो दस, घटाएँ तो शून्य, भाग दें तो एक और गुणा करें तो पच्चीस होते हैं।

फिर जीवन की गणित को कैसे समझें? गणितीय अंकों की तरह-जोड़कर, घटाकर, गुणा करके अथवा भाग देकर।

पंच महाव्रत- एक-एक कर अपनायेंगे तो चरित्र का रथ सुपथ की तरफ बढ़ता चला जाएगा।

हमने सत्य बोला तो विश्वास मिलेगा। अहिंसा को अपनाया तो प्रेमभाव आएगा। सम्पर्क में आने वाले को आदर दिया तो नफरत का भाव तिरोहित होता चला जाएगा। अतः जीवन में संस्कारों का विकास करने के लिए सद्गुणों को स्वीकारना जरूरी है।

जीवन में नैतिकता, नम्रता और समर्पण भावना से निष्ठा को स्वीकार करना जीवन निर्माण की मांग है।

जीवन अपने आप नहीं चलता, उसे तो चलाना पड़ता है, आगे बढ़ाना पड़ता है, साधना की वैचारिक सीढ़ियों पर चढ़ाना पड़ता है।

तो कौन चढ़ाएगा जीव को जगत में साधना-पथ की सीढ़ियों पर? कौन है वह

सक्षम व्यक्तित्व जो कर सके नैतिक संस्कारों के सुरम्य लोक का निर्माण?

यदि हमारे मन में उमंग है आत्म-सुधार की, हिम्मत है परिष्कार की, साहस है तो शाजुलाई करने का छोटा सा प्रयास भी लघु बीज की तरह वटवृक्ष सम वृद्ध आकार ग्रहण कर लेगा।

आवश्यक है जीवन में रचनात्मक एवं सृजनात्मक तथा सकारात्मक दृष्टिकोण।

हमें जीवन को बनाना है तो बचाना होगा दुर्व्यसनों से, दुष्प्रवृत्तियों से, आसक्तियों से, मोह पाश की विकृतियों से। बनना होगा एक सभ्य, संस्कारवान और संभ्रान्त नागरिक तभी हो सकेगा मानव जाति का हित।

हम अनुशासन को जीवन की पहचान बनाएँ। आज्ञा-पालन, आदरभाव को जगाएँ तो जीवन सुधरता-संवरता चला जाएगा।

जीवन रूपी घट को सुधारने-संवारने वाले कुम्हार रूपी गुरु से हम टूटेंगे नहीं सुधर जायेंगे। यह विश्वास जरूरी है।

तो आइए जीवन को संस्कारवान बनाने, ग्रहणों से बचाने के लिए गुरु की सीख को अपनाएँ। हमें सुनाई देने लगेगा-**तमसो मा ज्योतिर्गमय।**

गुरुदेव की सीख जीवन के लिए आशीर्वाद है, अमृत है, ज्ञान मंथन का आकर है। आइए इस कृपा सागर का लाभ उठाएँ, जीवन में तृप्ति भाव को अपनाएँ तथा भव सागर से बेड़ा पार लगाएँ।

-बी-8, मीरा नगर, चितौड़गढ़-312001 (राज.)

मृत्यु

श्री कस्तूरचन्द बाफणा,

जिससे डरती दुनिया सारी,
वो मृत्यु तो है बड़ी उपकारी।
धर्म के समीप लानेवाली,
मृत्यु ही सिद्धगति की दातारी।
पुनर्जन्म का भान कराने वाली,
कितनी अच्छी है मृत्यु।
मृत्यु से मृत्युंजय बनता प्राणी,
बुरा जीवन जीने से अच्छी है मृत्यु।

-नयनतारा ज्वैलर्स, सुभाष चौक, जलगाँव (महा.)

चिन्तन

चिन्तन योग्य छोटे-छोटे प्रसंग, जीवन में भरते धार्मिकता के रंग

श्री नितेश नागोता जैन

कभी ट्रेन में चलते तो कभी प्लेन में उड़ते, कभी रेस्टोरेंट में बैठे-बैठे तो कभी स्टेशन पर खड़े-खड़े मेरे कवि मन ने सामने उपस्थित हुई घटनाओं, वस्तुओं और प्रवृत्तियों पर जब गहनता से चिंतन किया और उन परिस्थितियों को धार्मिकता के नज़रिये से देखना शुरु किया तो जो सुखद अनुभूति मुझे हुई है उसे शब्दों में अभिव्यक्त कर पाना संभव नहीं है। अलग-अलग प्रसंगों पर अलग-अलग स्थितियों परिस्थितियों से मेरे कवि मन ने जिस प्रकार आध्यात्मिक एवं आत्मिक प्रेरणा प्राप्त की, वह आप सभी के चिंतन हेतु सादर सेवा में निवेदन कर रहा हूँ....

1. समय ट्रेन की तरह है। यदि आप साथ चले तो गंतव्य तक पहुँच जायेंगे। वरन् आप खड़े ही रह जायेंगे। यदि आपने ट्रेन का उपयोग नहीं किया, उसमें नहीं बैठे तो वह आगे बढ़ जायेगी, और आप मंजिल तक नहीं पहुँच पायेंगे। ठीक इसी प्रकार से समय की कीमत को हमें समझना चाहिए। जो समय की कद्र करते हैं। अपने कार्य को समय पर पूरा करते हैं। वे समय के उपयोग के कारण अपनी मंजिल और लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं। इसीलिए कहा भी जाता है कि- जो समय की कद्र करता है, समय उसकी कद्र करता है।
2. हमें घमण्ड तब तक होता है जब तक हम सिर्फ अपने आप तक सीमित रहते हैं अर्थात् कुएं के मेढ़क की तरह होते हैं। अपने मकान, अपनी दुकान, अपने फर्नीचर को अपनी आंखों से देखने पर हम फूले नहीं समाते हैं। किंतु जब प्लेन से पूरे गांव-नगर को देखते हैं तो बहुत बड़ा लगने व दिखने वाला हमारा मकान भी हमें ठीक से नज़र नहीं आता है। आखिर घमण्ड क्यों और किस पर?
3. जब संकल्प दृढ़ हो जाते हैं तो मंजिल आसान हो जाती है। पर्वत के पास खड़े रहने पर पर्वत हमें काफी विशाल और बड़ा दिखाई देता है। किंतु जब प्लेन में बैठकर उस पर्वत को हम आसमान से देखते हैं तो बहुत छोटा सा

दिखाई देता है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए सफलता और कामयाबी के लिए बस हम भी कठिनाइयों के पर्वत को छोटा करने के लिए संकल्प और हौंसलों के प्लेन में बैठ जायें तो निश्चित ही हर कदम पर सफलताएं हम सभी का स्वागत अभिनन्दन करेंगी। आवश्यकता है उत्साहपूर्वक कुछ कर गुजरने की, दिशाबद्ध पुरुषार्थ की।

4. संघर्ष जीवन की राहों को मजबूती प्रदान करता है। हमेशा ध्यान दें हवाई जहाज भी उड़ने से पहले, आसमान को छूने से पहले, रनवे पर काफी धीरे-धीरे चलता है। अनुशासन और नियमों का पालन करता है। उड़ान से पहले काफी मिनिट इंतजार करता, सिगनल को प्राप्त करता है और तीव्र गति करके कुछ ही मिनिटों में आसमान को छू लेता है। बस जीवन के संघर्ष के समय में हमें भी सहनशीलता रखनी चाहिए और सोचना चाहिए कि हमारे सामने प्रकट होने वाली ये स्थितियाँ परिस्थितियाँ रनवे की दौड़ हैं जो आगे हमें बुलंदियों और सफलताओं तक पहुँचाने वाली हैं। हिम्मत कभी ना हारो।

5. अनासक्त भावों से जीवन जीते हुए ही हमें जीवन का सच्चा आनन्द प्राप्त हो सकता है। आप स्वयं ही विचार कीजिए कि वातानुकूलित डिब्बों में सफर करते हुए हमें मिले हुए चद्दर तकियों को हम अपना निर्धारित स्टेशन आते ही छोड़कर नीचे उतर जाते हैं। ठीक इसी प्रकार से यह जीवन की यात्रा है, यहाँ के गाड़ी-बंगले, ठाट-वैभव और साधन-संसाधन सब कुछ हमें एक दिन छोड़कर जाना है। अतः ज्ञाताद्रष्टा बनकर अनासक्त भावों से जीवन जीने का हम सभी को अभ्यास करना है।

6. अपने गांव-नगर में लगे मोबाइल के टावरों को हम सभी ने कई बार देखा है। मोबाइल का एक टावर जिस प्रकार से हजारों मोबाइलों को सक्रिय करता है, नेटवर्क प्रदान करता है। ठीक उसी प्रकार से प्रत्येक ग्राम-नगर में मोबाइल के टावर रूप ऊर्जावान पदाधिकारी व कार्यकर्ता होने चाहिए जो निष्क्रिय लोगों को भी सक्रिय कर सकें तथा जिनशासन प्रभावना का मार्ग प्रशस्त कर सकें।

7. जीवन में प्रगति और सफलता के लिए सहयोग सर्वाधिक जरूरी है। बिना सहयोग भावना के कोई भी व्यवस्था व आयोजन सफल नहीं हो सकता है। एक मोबाइल में सभी गतिविधियों के संचालन के लिए बेटरी का सहयोग, बेटरी को चार्ज करने के लिए चार्जर का सहयोग, चार्जर को बिजली का

सहयोग प्राप्त होता है। पेन को स्याही का और ट्रेन को पटरी का सहयोग मिलता है। ठीक उसी प्रकार संघ-समाज, घर-परिवार सभी जगह परस्पर सहयोग परम आवश्यक है। सहयोग की भावनाओं से कठिन कार्य भी सरल हो जाता है। अतः हम सभी को सदैव सहयोग भाव बढ़ाना है। बनना है सत्कार्यों में सदैव सहयोगी-सहभागी।

8. आप स्वयं ही सोचिये प्लेन में जब एयर होस्टेस हमसे मीठा बोलती है। तुरंत खाने-पीने की सुविधाएँ प्रदान करती है। होटल-रेस्टोरेंट में जब वेटर अच्छे से सेवा प्रदान करता है तो हमें कितनी खुशी होती है। प्रसन्न होकर हम उन्हें टिप व पुरस्कार देते हैं। ठीक इसी प्रकार से हमें अपने माता-पिता, गुरु भगवन्त की आज्ञा पालन में विवेक रखना चाहिए। वे कुछ कहें और हम तुरन्त मान लें तो सोचिये उन्हें कितनी साता व सुख का अनुभव होगा। ध्यान रहे सेवा का लाभ भाग्यवान को मिलता है। ध्यान रहे सेवा अमृत तुल्य है। जीवन का विकास व उत्थान करने वाली प्रेरक प्रवृत्ति है।

9. विनम्रता एक ऐसा सद्गुण है जिससे सभी का दिल जीता जा सकता है। जिस तरह से नरम-नरम तकिये, नरम मुलायम कपड़े और सौफे सभी को कितने पसंद आते हैं। मार्ग में कठोर पत्थर हो तो लोग उन्हें हटाते हैं, ठीक इसी प्रकार से हमें भी व्यवहार में अहंकार रूपी कठोरता का त्याग करना है और विनम्रता रूपी नरमाई को बढ़ाना है। कहा भी गया है कि-

रज वीरज ऊँची गई, नरमाई के काण।
पत्थर ठोकर खात है, करड़ाई के काण।।
सोना त्यागे कड़कता, होत नगीना फिट,
विनयवान को झट मिले, मोक्ष नगर की सीट।।

10. सफाई सभी पसंद करते हैं। ब्रश से मुँह की, पौचे से घर की, साबुन से शरीर की और कपड़े से गाड़ी की सफाई करते हैं। ठीक इसी प्रकार से शुद्ध चिन्तन-मनन एवं सत्संगति से हमारे मन-मस्तिष्क के विकारों की सफाई होती है। हमारे अंदर प्रमोद, शांति, समाधि की अभिवृद्धि होती है। अतः हमें बाहर की सफाई की अपेक्षाकृत अपने अन्तर की सफाई पर ध्यान लगाना है और विषय-कषाय, क्रोध-ईर्ष्या, दुर्गुणों की गंदगी को बाहर निकालकर शुद्ध पवित्र हृदय वाला आत्मानुरागी साधक बनना है।

-कर सलाहकार, जैन बोर्डिंग एरिया, भवानीमंडी (राज.)

नारी-स्तम्भ

सामंजस्य के सूत्रों की आवश्यकता

श्रीमती बीना जैन

आज से पचास-साठ वर्ष पूर्व के समय का यदि हम अवलोकन करें तो पायेंगे कि उस समय भारत के लोग आज की अपेक्षा बहुत पढ़े लिखे नहीं थे, पर व्यावहारिक ज्ञान में अत्यन्त निपुण थे। वह व्यवहार चाहे समाज के प्रति हो, माता-पिता, भाई-बहिन अथवा पति-पत्नी का एक दूसरे के प्रति। उस समय सर्वविध सम्बन्धों में प्रायः आत्मीयता एवं मधुरता दिखाई देती थी। आधुनिक-काल में जितनी शिक्षा बढ़ी है, आर्थिक एवं वैज्ञानिक प्रगति हुई है, उतनी ही अधिक मात्रा में हमारा चैन और मानसिक शांति काफूर होती जा रही है।

आज हमारे परिवार कुरुक्षेत्र का मैदान बन रहे हैं। समाज में सामाजिक, पारिवारिक एवं वैयक्तिक विघटन लक्षित हो रहे हैं। युवक-युवतियों में सहन-शीलता के अभाव एवं एकाकी परिवारों में होने वाली अहं की टकराहट ने उन्हें तनावग्रस्त तथा व्यक्तिवादिता ने उन्हें स्वार्थी बना दिया है। समायोजन की प्रवृत्ति का ह्रास होता जा रहा है, जिसने समाज में नई-नई समस्याओं को जन्म दिया है।

सामंजस्य के अभाव में आज ईर्ष्या, द्वेष, कलह, कलुषता, वैमनस्य का विष वमन हो रहा है। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच रही है। कहीं हत्या, कहीं आत्महत्या, कहीं बलात्कार और कहीं पैसे के लिए घृणित से घृणित कार्य मनुष्य कर रहा है। भौतिकवाद की चकाचौंध तथा परिग्रह की प्रवृत्ति ने मनुष्य को असहिष्णु एवं दानवीय बना दिया है।

सामंजस्य-सूत्र के अन्तर्गत दो या अनेक के बीच में ऐसा तालमेल आवश्यक होता है, जिसमें हम स्वयं खुश रहें एवं दूसरे की खुशी में सहभागी बन सकें। यह सूत्र हमारे जीवन को सुखद अहसासों से ओत-प्रोत कर देता है, और हमारे निजी तथा आन्तरिक जीवन में उमंगों के पुष्प पल्लवित हो जाते हैं। सामंजस्य स्थापित करना एक कला है। इसके अभाव में हमारा जीवन इतना दुरुह हो जाता है कि न तो जिया ही जा सकता है, न इससे बचा जा सकता है।

जीवन मरुस्थल के समान हो जाता है एवं घुटन की रेत हमारी संवेदनाओं को नष्ट कर देती है।

आज युवा-पीढ़ी को यह समझना चाहिए कि सामंजस्य का जीवन में बहुत महत्त्व है। जिन्दगी को नदी की मर्यादित धारा के समान बहना चाहिए। हमें जिन्दगी के साथ चलना पड़ता है। यदि जीवन में नहीं निभती तो इसका मुख्य कारण हमारा कठोर अहं एवं स्वार्थपरता है। ये दोनों तत्त्व सामंजस्य की उर्वर-भूमि को बंजर बना देते हैं तभी इस बंजर-भूमि में मानवीय रिश्तों के तंतु जराजीर्ण अवस्था में पहुँच जाते हैं। सामंजस्य की इस हरीतिमा के संवर्द्धन हेतु हमें धैर्य, क्षमा, सहन-शीलता, उदारता, सहयोग, सहकारिता आदि गुणों को अपने व्यक्तित्व का अंग बनाना चाहिए, जिससे जीवन में मिठास बनी रहे।

सहनशीलता एक ऐसा गुण है, जो व्यक्ति को कहीं भी समायोजन करने में सहायक होता है। यह एक आन्तरिक गुण है। इसके अभाव में व्यक्ति मन की पीड़ा एवं भावनात्मक चोट से तिलमिला उठता है, उत्तेजित हो जाता है एवं आवेश में निरर्थक बातें तथा कटूक्ति कहने व कटाक्ष करने से भी नहीं चूकता है। इससे रिश्तों में खटास उत्पन्न होती है तथा रिश्ते बिखरने लगते हैं। इसी प्रकार का व्यवहार हमें औरों से मिलता है। अतः हमें ऐसे कटु व्यवहार को क्षमा करना आना चाहिए, क्योंकि हम दूसरों से भी क्षमा की अपेक्षा करते हैं। क्षमा से उदारता पनपती है। दूसरों की भावनाओं को समझने की दृष्टि विकसित होती है जो सामंजस्य के लिए आवश्यक है।

सुखी तथा तनावरहित जीवन के लिए आज आवश्यक है कि किशोरावस्था से ही हम किशोर/किशोरियों को हर परिस्थिति के साथ तालमेल करना सिखाएँ। अहंवादी एवं स्वार्थी न बनने दें। इसके लिए माँ-बाप, अभिभावक एवं शिक्षकों का आचरण आदर्श होना चाहिए। इसके लिए देह, इन्द्रिय और मन से अधिक बुद्धि,विवेक, मनुष्य एवं चेतना को महत्त्व देना चाहिए। इससे व्यक्ति का अमर्यादित व्यवहार नियंत्रित होता है तथा आन्तरिक समायोजन में मदद मिलती है।

किसी भी व्यक्ति का बाहरी कारकों, रिश्तों एवं परिस्थितियों से सुमेल स्थापित करना बाह्य समायोजन कहलाता है। रिश्तों को निभाने के लिए आवश्यक है कि उसमें स्वार्थ-परक सौदे-बाजी न की जाए, अन्यथा रिश्तों में स्थायित्व का अभाव हो जाता है। शीघ्र ही बिखर जाते हैं ऐसे रिश्ते जिन्हें

अपनी शर्तों पर हम चलाना एवं थोपना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी कुछ निजी भावनाएँ, सोच, अभिरुचि एवं जीने का तरीका होता है। हम कैसे किसी को अपने निजत्व को बदलने को बाध्य कर सकते हैं? जबकि होता यह है कि हम अपने चाहने वालों पर अनर्थक व अधिकारपूर्ण व्यवहारों की लम्बी सूची थोप देते हैं। यदि वे ऐसा करने में सक्षम नहीं हैं तो मन-मुटाव का दौर एवं सम्बन्धों के टूटने की नौबत आ जाती है। ये वस्तुवादी रिश्ते वर्तमान समय की सबसे बड़ी विडम्बना हैं। हमे देख रहे हैं कि हमारे सम्बन्धों के संवेदनशीलसूत्र आए दिन धूल-धूसरित हो रहे हैं।

आज आवश्यकता पारिस्थितिक सामंजस्य की है। परिस्थिति को भांपकर उसके दूरगामी परिणामों पर मनन कर उसके अनुकूल उचित आचरण करना सामंजस्य क्षमता है। यदि सामंजस्य को हम एक चुनौती मानकर स्वीकारें तो रिश्तों में दरार नहीं पड़ सकती। अस्वीकार करने पर परिस्थिति हमारे अहं को रौंदते हुए कई समस्याओं को जन्म देती है, जिसका कोई हल नहीं निकल पाता।

आज पारिवारिक विघटन को रोकने के लिए युवा-पीढ़ी को अपनी बौद्धिक एवं भावनात्मक-शक्तियों की भागीरथी बहानी चाहिए। यह तभी संभव है जब हम किसी के होने के अस्तित्व का आदर करेंगे, तब ही हम बदले में सम्मान के पात्र बन सकेंगे। सामंजस्य के सूत्र हमारे मानसिक एवं व्यावहारिक विकास के लिए अति-आवश्यक हैं। ये ही हमारे जीवन-उपवन को सुख के सुगंधित प्रसूनों से महका सकते हैं।

- के/15, ज्ञानसरोवर कॉलोनी, रामघाट रोड़, अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)

विचार-बिन्दु

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

1. जो जीव अपने स्वभाव में रहता है, उसके साथ रहा हुआ पुद्गल भी उसके लिए शुभ हो जाता है तथा जो पुद्गल से सम्बन्ध जोड़ लेता है वह अपने को भी खराब करता है एवं पुद्गल भी उसके लिए अशुभ हो जाता है।
2. ऊँचा होना अच्छा है, किन्तु अपने को ऊँचा दिखाना अच्छा नहीं।
3. जिसकी जड़ जहरीली है, उसका फल मीठा नहीं हो सकता। इसी प्रकार जिस विषय-सुख की जड़ जहरीली है, उसका परिणाम अच्छा नहीं हो सकता।

(3 जुलाई 2011 के प्रवचन से संकलित)

युवा-स्तम्भ

विकास की अवधारणा में आध्यात्मिक मूल्यों का महत्त्व

श्री सलमान अर्शद

विकास एक नैसर्गिक प्रक्रिया है। पूरी सृष्टि विकासमान है। सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि सृष्टि किसी 'परम शुभ' (Highest Good) की तरफ निरन्तर विकसित हो रही है। मनुष्य, पशु व पेड़ पौधे सब विकसित हो रहे हैं। विकास की यह अवधारणा डार्विन के सिद्धान्तों में मुखरित होती है। मनुष्य एक मात्र ऐसा प्राणी है जो नैसर्गिक रूप से तो विकसित हो ही रहा है, उसकी अपनी मेधा-शक्ति भी उसे विकास के नये-नये आयाम दे रही है। अपनी इस शक्ति के द्वारा उसने इस पृथ्वी को सुख-सुविधाओं से भर दिया, लेकिन आज विश्व को जिन कठिनाइयों एवं मुसीबतों का सामना करना है उसे भी इसी मानस-शक्ति ने सृजित किया है।

पिछली शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस बात पर गम्भीर चिन्तन शुरू हुआ कि मनुष्य, प्रकृति एवं अर्थ-व्यवस्था के बीच सामंजस्य कैसे निर्मित किया जाये? तत्पश्चात् इस दिशा में गम्भीर प्रयास शुरू हुए और अन्तरराष्ट्रीय मंचों पर मुद्दा गम्भीर चिन्तन का विषय बना।

ऐसा लगता है कि आज समस्याओं को मनुष्य, प्रकृति एवं विकास के त्रिआयामी दृष्टिकोण के साथ देखना चाहिए। हमारे अपने ही देश में खनिज सम्पदा बनाम मनुष्य का झगड़ा है, इसे माओवादी संकट कहकर ज्यादा समय तक टाला नहीं जा सकता है। जमीन एवं जंगलों से उजाड़े गये लोग भी मनुष्य हैं, विकास के नाम पर यह निर्ममता बहुत देर तक नहीं चलेगी।

पूरा विश्व एक व्यवस्था की तरह है, विश्व के किसी कोने में कोई समस्या होती है तो उससे पूरा विश्व प्रभावित होता है। इराक की हवाओं में घुला रसायन पूरे एशिया को प्रभावित करेगा और यह प्रदूषण अमेरिका तक भी जायेगा। इसलिए इस तरह के कृत्यों की जिम्मेदारी ईमानदारीपूर्वक पूरे विश्व को लेनी पड़ेगी और इसके निराकरण का उपाय भी ढूंढना पड़ेगा।

विकास के एक ऐसे मॉडल की खोज आज पूरे विश्व की जिम्मेदारी हो गयी है जिसमें मनुष्य एवं प्रकृति के बीच का सन्तुलन व सामंजस्य बना रहे, साथ ही साथ प्राकृतिक स्रोतों का अवशोषण जिम्मेदारीपूर्वक हो, जिससे आने

वाली पीढ़ी भी इससे लाभान्वित हो सके। सम्मिलित रूप से इसे Sustainable Development कहा गया है। Deviel Gagnire ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है- Sustainable development is development that meets the needs of the present without compromising the ability of the future generation to meet their own needs.

यहाँ दो बातों पर जोर दिया गया है, पहला है आवश्यकता (Need), हम प्रकृति व समाज से उतना ही लें जितनी हमारी आवश्यकता है। स्पष्ट है Need और Greed (लालच) में हमें अन्तर करना होगा। फिर भी आवश्यकता (Need) का सम्प्रत्यय मुश्किल भी खड़ी करता है, जैसे 10 साल पहले मोबाइल फोन Need की श्रेणी में नहीं आता था, लेकिन आज आता है, इसी तरह अन्य भी अनेक चीजें हैं; तो फिर समस्या का समाधान कैसे हो? भारतीय दर्शन में इसके लिए एक सुन्दर अवधारणा है, जिसे हम 'तप' कहते हैं। 'तप' का तात्पर्य है कम से कम सुविधाओं का इस्तेमाल करते हुए प्रकृति की ओर लौटना और प्राकृतिक नियमों के साथ जीवन का ताल-मेल बिठाना।

उपर्युक्त परिभाषा में जिस दूसरे तत्त्व पर जोर दिया गया है वह है Limitations यानी प्राकृतिक व सामाजिक संसाधनों का उपयोग करते समय 'स्व' से ऊपर उठकर 'पर' की भी चिन्ता करना, अर्थात् प्रकृति व समाज से पूरी की जा रही हमारी आवश्यकताएँ व सुविधाएँ वर्तमान व भविष्य में किसी के दुःख का कारण न बनें। भारतीय दर्शन में संयम के रूप में इसके लिए एक सुन्दर अवधारणा है। संयम का सामान्य अर्थ है कि हम हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति में समाज व प्रकृति के स्रोतों का कम से कम इस्तेमाल करें।

'तप' और 'संयम' आत्मिक-विकास के महत्त्वपूर्ण साधन तो हैं ही, समाज तथा प्रकृति के हित एवं संरक्षण के भी साधन हैं।

आज प्रकृति, मनुष्य व विकास के बीच गम्भीर असन्तुलन है। इस असन्तुलन से पूरी सृष्टि की नैसर्गिकता प्रभावित हो रही है। यह भी दुःखद है कि स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर किये जा रहे प्रयास कोई उपादेय परिणाम नहीं दे पा रहे हैं। प्रश्न उठता है ऐसा क्यों है? दरअसल विकास की पूरी प्रक्रिया में एक चूक हो रही है। प्रकृति व मनुष्य के बीच सन्तुलन स्थापित हो, इसके लिए किये जा रहे प्रयासों में व्यक्ति को केन्द्रीय स्थान देना चाहिए, क्योंकि समाज व राष्ट्र अमूर्त अवधारणाएँ हैं। हमें कहीं भी ये नज़र नहीं

आती। अगर हमें कुछ नज़र आता है तो वह है 'व्यक्ति'। अभी तक प्रकृति, मनुष्य तथा विकास के बीच सन्तुलन कायम करने के लिए जो भी प्रयास हो रहे हैं उनके केन्द्र में समाज, राष्ट्र तथा विश्व तो है, लेकिन इन सबकी प्राथमिक इकाई के रूप में व्यक्ति को जो केन्द्रीय स्थान मिलना चाहिए था वह नहीं मिला।

यदि व्यक्ति स्वयं असन्तुलित है तो उससे निर्मित होने वाला समाज, राष्ट्र व विश्व सन्तुलित तथा सामंजस्यपूर्ण होगा, यह दिवास्वप्न ही हो सकता है।

प्रश्न यह उठता है कि व्यक्ति असन्तुलित क्यों है? क्या यह असन्तुलन जन्माजात है? या फिर व्यक्ति ने विकास की प्रक्रिया में इसे अर्जित किया है?

मनुष्य जीवनभर सीखता रहता है। अस्तित्व में आते ही मनुष्य के सीखने की प्रक्रिया शुरु हो जाती है। सीखना व्यक्ति, परिवार व समाज के बीच अन्तर-क्रिया का परिणाम है। अतः परिवार व समाज द्वारा व्यक्ति को क्या सिखाया जा रहा है यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस सीखने के जरिए ही व्यक्ति का जीवन निर्मित होता है। व्यक्ति जो कुछ भी सीखता है उसी से वह विकसित होता है। इस विकास को दो भागों में बांटा जा सकता है- 1. आत्मिक विकास, 2. व्यक्तित्व का विकास या सामाजिक विकास।

पहले हम व्यक्तित्व के विकास पर बात करेंगे। 'व्यक्तित्व' शब्द अंग्रेजी के 'Personality' शब्द से आता है और 'Personality' ग्रीक के Persona शब्द से आता है। 'Persona' का अर्थ है मुखौटा। व्यक्तित्व से तात्पर्य है व्यक्ति का समाजोन्मुख पक्ष। मनोविज्ञान व्यक्तित्व को किसी अन्य ढंग से परिभाषित कर सकता है, लेकिन इसके विस्तार में जाना हमारा विषय नहीं है। व्यक्ति सीखने की प्रक्रिया में अपने समाजोन्मुख व्यवहार को तराशता है और पूरी शिक्षा प्रणाली, परिवार व समाज इसमें उसकी मदद करते हैं।

जब विकास का पूरा जोर इस बात पर हो जाये कि हमें दूसरों को कैसे दिखाना है, तो विकास का केन्द्र 'स्व' से हटकर 'पर' की ओर चला जाता है। यदि विकास का केन्द्र 'पर' हो तो अहंकार का जन्म होता है और यदि विकास का केन्द्र 'स्व' हो तो अहंकार का विसर्जन होता है। अहंकार स्वयं का प्रदर्शन चाहता है, अतः दिखावे की प्रवृत्ति का होना स्वाभाविक है। दिखावे की यह प्रवृत्ति पद, प्रतिष्ठा एवं सुविधा हासिल करने के रूप में अभिव्यक्त होती है।

पद व प्रतिष्ठा प्राप्त करने की प्रक्रिया में प्रतियोगिता का जन्म होता है और प्रतियोगिता हिंसा तथा प्रतिहिंसा को जन्म देती है, फिर हिंसा से असत्य और असत्य से स्तेय (चोरी) और इन सबसे परिग्रह का जन्म होता है। चूंकि व्यक्ति ही समाज व राष्ट्र की प्राथमिक इकाई है, इसलिए जब यह व्यक्ति समाज व राष्ट्र का संचालक बनता है तो जो कार्य वह व्यक्ति के स्तर पर कर रहा है वही समाज तथा राष्ट्र के स्तर पर करने लगता है।

हम देख सकते हैं कि एक देश किसी दूसरे देश के संसाधनों का प्रयोग अपनी मर्जी के मुताबिक करने के लिए किसी भी हद तक चला जाता है। दूसरे के स्रोत व संसाधन हमारे हित-साधन का आधार बन सकें, इसके लिए पूरी दुनिया में अनेक रूपों में संघर्ष चल रहा है।

जब विकास की दिशा 'स्व' की ओर होती है तो व्यक्ति का आत्मिक विकास होता है। आत्मिक-विकास की प्रक्रिया में व्यक्ति के भीतर दया, प्रेम, करुणा व मुदिता का विकास होता है। आज विश्व में इन्हीं भावनाओं की सर्वाधिक कमी है।

आज विकास का मापदण्ड प्रति व्यक्ति, सीमेंट, लोहा, खाद्य सामग्री तथा विलासिता की वस्तुओं के उपभोग को माना जाता है। यदि इसके साथ ही किसी विकसित देश के प्रति व्यक्ति-हिंसा व अपराध का रिकार्ड भी देख लिया जाये तो भौतिक विकास के खोखलेपन पर शायद चिन्तन शुरु हो सके।

किसी देश के लोग कितने अहिंसक, शान्त, दयावान व करुणा से ओत-प्रोत हैं, क्या इसे विकास का मापदण्ड नहीं बनाया जा सकता? इस प्रश्न पर भी चिन्तन-मनन होना चाहिए।

आज हमें ऐसे मनुष्य की जरूरत है जिसके पास वैज्ञानिक बुद्धि तथा आध्यात्मिक हृदय हो। अगर पश्चिम का विज्ञान तथा पूरब के अध्यात्म को मिलाया जा सके तो यह सपना साकार हो सकता है।

यदि असन्तुलित मन विज्ञान व तकनीक का स्वामी हो जाये तो विनाश का ही सृजन होगा। आज विज्ञान उनके हाथ में है जिनका आत्मिक विकास नहीं हो पाया। परिणाम हमारे सामने है। आज इस धरती पर इतने विनाशक अस्त्र हैं जिनसे इसके जैसी 50 धरती पलों में नष्ट की जा सकती है और यह कोई नई बात नहीं है, पिछले 3000 सालों में 14600 युद्ध लड़े गये (यह आंकड़ा लगभग 20 साल पुराना है) देखा जाये तो इंसान या तो लड़ता रहा है

या लड़ने की तैयारी करता रहा है। आज स्थिति और भी भयावह है। हमारे पास ऐसे अस्त्र हैं जो फौलाद को भी पिघला कर पानी बना दें, इनके ताप से इस धरती पर ऐसा कुछ भी नहीं है जो बचा रह सके। क्या यह सिर्फ लड़ने के लिए बनाये गये अस्त्र हैं? वास्तव में हथियार सिर्फ लड़ने के लिए अस्तित्व में नहीं आते, बल्कि वे हमारे भीतर दबी खतरनाक हिंसात्मक प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति भी करते हैं। एक तरफ तो ये हाल हैं और दूसरी तरफ समुद्र का जल-स्तर बढ़ रहा है, ओजोन परत नष्ट हो रही है, लेकिन इसका हमारे पास कोई कारगर समाधान नहीं है। कुछ देशों द्वारा अनाज व दूध समुद्र में फेंका जा रहा है और अफ्रीका में लोग अकाल से मर रहे हैं। आज मानव ने मानव-भ्रूण खाना शुरू कर दिया है। हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ और किनं-किन रूपों में अभिव्यक्त होंगी, इसकी कल्पना करना भी अब आसान नहीं रहा।

जब तक हिंसात्मक प्रवृत्तियों से मानव मन मुक्त नहीं होता, विकास का मानवीय मॉडल तैयार कर पाना एक दिवास्वप्न ही होगा। इसलिए व्यक्ति को शिक्षित, विकसित व निर्मित करने की पूरी संरचना पर अब बहस जरूरी हो गयी है।

यदि प्रकृति, मनुष्य एवं विकास के बीच सन्तुलन चाहिए तो पहले व्यक्ति के सन्तुलन को प्राप्त करना होगा। एक ऐसा व्यक्ति जो विज्ञान व तकनीक का तो ज्ञान रखे, साथ ही उसका हृदय प्रेम, दया व शान्ति से भी ओत-प्रोत हो। सन्तुलित मानव अस्तित्व में आये, इसके लिए पूरब के अध्यात्म तथा पश्चिम के विज्ञान का संगम आवश्यक है। आज विश्व की जरूरत को पूरा करने के लिए दोनों का सहयोग अपरिहार्य हो गया है।

सन्दर्भः-

1. Dr Mahbub-ul-Haq & Mrs. Khadija Haq, Introduction to the human development concept. 2002
2. Daniel Cagnier, Our Common future (world commision on environment and development 1984)
3. V. Gevin, Nature 417
4. Evan D.G. Fraser, Warran Mabee,Summit:Vague Answers to Well Known Problems.
5. Virginia Gewin, U N Predicts Long Wait to Repair Environment.

-शोध छात्र, दर्शन शास्त्र-विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

संकल्प

आओ! नई शुरुआत करें

श्री जयमुनि जी म.सा.

आओ, एक नई शुरुआत करें।
जिनसे हैं बातें हमारी टूटी हुई, उनसे ही शुरु बात करें।।
उधड़े कटे-फटे लिबास को सीने के लिए।
दिल की सूई में आज ही सूत्रपात करें।।
आओ एक.....।
हमारे नज़दीकी रिश्ते किसी गुमां के शिकार हुए हैं।
छोड़कर गरूर, चलें मुलाकात करें।।
आओ एक.....।
चोटें खाई हैं, दर्द झेले हैं हमने, तुमने।
क्यों नहीं हमवार हालात करें।।
आओ एक.....।
तालीम से, मजहब से, अगर कुछ सीखा है।
दिल से दुश्मनी के दूर खयालात करें।।
आओ एक.....।
आग जल रही है जहाँ भी घृणा की नफरत की,
प्रेम, प्यार मोहब्बत की जमकर बरसात करें।
आओ एक.....।।
कसम खाएँ कि हम नहीं पलटवार करेंगे,
पड़ौसी चाहे कितनी शरारत भरी वारदात करें।
आओ एक.....।।
साथी जो बिछुड़ गये हैं, जीवन के सफर में,
मनुहारों से मना के उन्हें अपने साथ करें।
आओ एक.....।।
जो करें ईमानदारी नेक-नीयति से करें,
अच्छे कामों में कम-से-कम नहीं सियासात करें।।

-प्रस्तुति : सुरेशचन्द्र धींग, बम्बोरा-313706, उदयपुर (राज.)

पर्यावरण

समझो प्रकृति का इशारा

डॉ अजित एच. जैन रांका

प्रकृति ने अपना रंग दिखाया, जापान की धरती पर भूचाल आया
गहरे सागर ने भी मर्यादा लांघकर, जनजीवन अस्त-व्यस्त बनाया।
गंभीरता से सोचो जरा ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि हमने प्रकृति को कितना सताया
अणुबंब के परीक्षण एवं विस्फोट किये, धरती माता के गर्भ में गहरे छेद किये।
जिसके पृष्ठ पर हमें आश्रय मिला, सुख-सुविधा और निवास मिला
जिसने हमें पेड़, पौधे, फल-सब्जी, अनाज और पीने को अमृत समान 'पानी' दिया।
उसके उपकारों का, प्यार और दुलार का हमने कैसा ऋण चुकाया?
'भूकम्प' और 'सुनामी' यह तो एक इशारा है-
प्रकृति एवं चेतना के जिन तत्त्वों से तू बना है
उन्हीं को नष्ट करने पर तूं क्यों अड़ा है?
मत अकड़ अपनी सोच और बुद्धि पर
'ऐ मानव', वर्ना विनाश तेरे सरपर खड़ा है।
पर्यावरण से नाता जोड़ ले, प्रकृति से खिलवाड़ छोड़ दे
मत कर नष्ट हवा और पानी को, वृक्ष और वनस्पति को
अगर 'जीवन' है प्यारा तुझे, दूसरों को सताना छोड़ दे।
सुख दियां सुख होत है, दुःख दिया दुःख होय
मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे,
जीओ और जीने दो इन महापुरुषों के सूत्रों को
जीवन में अपनाकर प्यारों धरती बचाना सीख लो।
मर्यादाओं का पालन करना प्रकृति हमें सिखाती है
अगर मानव अपना कर्तव्य भूलकर विपरीत कृति नहीं करता
तो धीर, गंभीर सागर प्रकृति का अटल नियम,
तोड़कर सुनामी पर नहीं उतरता।
सद् धर्मों का यही है कहना,
प्रेम भाव, सद्भाव से मिलकर हम सभी को साथ है रहना।
साधु-संतों ने तप और साधना से, धर्म की आराधना से
इस धरती को सुजला, सुफला और पावन बनाया।
इसकी रक्षा करना अब कर्तव्य है हमारा।

इसलिये रोकना होगा 'पशुहत्या' और 'अत्याचार'
करना होगा 'अहिंसा परमो धर्मः' का प्रचार।
व्यसन मुक्त होकर मानव पालेगा 'धर्माचार',
तब 'पावन' होगी यह धरती फिर से बनेगी 'सुजला सफला'।
फिर ना आयेगा भूकम्प, ना सुनामी का डर होगा
नहीं बनेगी अणुं भट्टियाँ, न हाइड्रोजन का विस्फोट होगा
क्योंकि हम सभी के मन में 'मानवता' का घर होगा
हम प्रकृति के साथ होंगे, निसर्ग स्वतः हमारा साथ देगा।

-भडगाँव-424105, जिला-जलगांव (महा.)

इस वर्ष संवत्सरी 1 सितम्बर को करना ठीक है

इस वर्ष संवत्सरी के विषय में मत-भेद हो रहा है। श्रमण-संघ के तिथि-पत्रकों में 1 सितम्बर, गुरुवार को और ज्ञानगच्छ से सम्बन्धित प्रकाशन में 2 सितम्बर, शुक्रवार को संवत्सरी बतलायी है। इस विषय में लोंकाशाह-क्रांति में कुछ स्पष्टीकरण आया है और नीमच के पंचाग में 2 सितम्बर, शुक्रवार को संवत्सरी बतलायी है- यह लिखा है।

यह मतभेद क्यों हुआ? सूर्यास्त के समय पंचमी न होने से यह मतभेद उत्पन्न हुआ है।

जन्मभूमि पंचागं में चतुर्थी-31 घड़ी 38 पल है।

नीमच पंचांग में चतुर्थी- 31 घड़ी 43 पल है।

उस दिन जन्मभूमि पंचांग के अनुसार दिनमान 12 घंटे 28 मिनट और 8 सैकंड है और नीमच के निर्णय सागर पंचांग में दिनमान 31 घड़ी 24 पल है। जन्मभूमि पंचांग के अनुसार सूर्यास्त से 4 मिनिट 8 सेकंड के बाद पंचमी की घडियाँ आ जाती हैं और नीमच के पंचांग के अनुसार सूर्यास्त से 19 पल (7.6 मिनट) के बाद पंचमी की घडियाँ आ जाती हैं। अतः कोई सूर्यास्त के समय के आसपास संवत्सरी प्रतिक्रमण की आज्ञा ले तो चतुर्थी का समय कुछ मिनटों तक ही रहता है और पूरा प्रतिक्रमण पंचमी की घड़ियों में ही होता है। किन्तु पंचमी 24 घड़ी 28 पल (नीमच) ही है और 31 घड़ी 20 पल जितना-दिनमान बतलाया है। अतः सूर्यास्त से पूर्व लगभग 7 घड़ी में कुछ कम में छठ की तिथि आ जाती है। जिससे संवत्सरी का प्रतिक्रमण छठ की घड़ियों में होता है। इसलिए मात्र कुछ मिनिटों की चौथ की घड़ियों के कारण पंचमी उदय तिथि (2 सितम्बर) में संवत्सरी प्रतिक्रमण करना उचित नहीं लगता है।

दूसरी बात 1 सितम्बर गुरुवार को आषाढ़ी चौमासी से 48 दिन नहीं 49 दिन होते हैं और भादवा सुदी पक्खी संवत्सरी से दशवें दिन ही आती है। अतः 1 सितम्बर, गुरुवार को संवत्सरी करना ही ठीक है।

-सौभाग्य सूर्य संदेश, जून 2011 से साभार

स्वास्थ्य-विज्ञान

जैन श्रमण की स्वास्थ्यवर्धक जीवन शैली(2)

डॉ. चंचलमल चोरडिया

9. **प्रातःकालीन उदित सूर्य देखने से लाभ**–सूर्यदर्शन अर्थात् सूर्य को देखना। सूर्योदय के समय वायुमण्डल में अदृश्य परा बैंगनी किरणों **(Ultra Violet Rays)** का विशेष प्रभाव होता है, जो विटामिन डी का सर्वोत्तम स्रोत होती है। ये किरणें रक्त में लाल और श्वेत कणों की वृद्धि करती हैं। श्वेत कण बढ़ने से शरीर में रोग प्रतिकारात्मक शक्ति बढ़ने लगती है। परा बैंगनीं किरणें तपेदिक, हिष्टीरिया, मधुमेह और महिलाओं के मासिक धर्म संबंधी रोगों में बहुत लाभकारी होती है। ये शरीर में विकारनाशक शक्ति पैदा करती है। इससे आंतों में अम्ल व क्षार का संतुलन एवं शरीर में फासफोरस कैलशियम का संतुलन बना रहता है, नेत्र ज्योति बढ़ती है तथा शरीर के सभी आवश्यक तत्त्वों का पोषण होता है। हृदय रोग, मस्तिष्क विकार, आंखों के विकार आदि अनेक व्याधियां दूर होती हैं। प्रातःकालीन सूर्यकिरणें जीवनी शक्ति बढ़ाती हैं, स्नायु दुर्बलता कम करती हैं, पाचन और मल निष्कासन की क्रियाओं को बल देती हैं, पेट की जठराग्नि प्रदीप्त करती हैं, रक्त परिभ्रमण संतुलित रखती हैं, हड्डियों को मजबूत बनाती हैं, रक्त में कैलशियम, फासफोरस और लोहे की मात्रा बढ़ाती हैं, अन्तःस्रावी ग्रन्थियों से सम्बद्ध स्राव बनाने में सहयोग करती हैं।

10. **ध्यान**– ध्यान शरीर, मन एवं मस्तिष्क को स्वस्थ रखने का अच्छा माध्यम है। ध्यान से आभा मण्डल शुद्ध होता है, हानिकारक तरंगें दूर होती हैं। ध्यान की साधना शांत, एकान्त, स्वच्छ एवं निश्चित स्थान पर निश्चित समय में करने से ज्यादा लाभ होता है। ध्यान के लिए मौन आवश्यक होता है। पहले शरीर की स्थिरता, फिर दृढ़ता और धैर्य बिना ध्यान के संभव नहीं हो सकता।

11. **मुस्कान के लाभ**– प्रातः 15-20 मिनट मुस्कुराता हुआ चेहरा रखने का अभ्यास करने से मानसिक तनाव, आवेग, अधीरता, भय, चिंता आदि दूर होते हैं। सकारात्मक सोच विकसित होता है। अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ सक्रिय होती हैं, जिससे शुद्ध हारमोन्स का निर्माण होता है। मानसिक संतुलन बना रहता है। दुःखी, चिन्तित, तनावग्रस्त, भयभीत, निराश, क्रोधी आदि मुस्करा नहीं सकते और यदि उन्हें किसी भी कारण से चेहरे पर मुस्कराहट

आती है तो तनाव, चिंता, भय, दुःख, क्रोध आदि उस समय उनमें रह नहीं सकते, क्योंकि ये दोनों एक दूसरे के विरोधी स्वभाव के होते हैं। अतः किसी भी आकस्मिक स्थिति में रोग सहनशक्ति के बाहर हो तथा दवा लेना आवश्यक हो उस समय चन्द मिनटों तक मुस्कराता चेहरा बनाने मात्र से तुरन्त राहत मिलती है। फिर चाहे निम्न या उच्च रक्तचाप अथवा मधुमेह आदि कोई भी रोग क्यों न हो, दवा की आवश्यकता नहीं पड़ती। साधक के चेहरे पर जितनी ज्यादा प्रसन्नता होती है, उतनी उसकी रोग प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ती है।

12. **सही स्वर संचालन–** जब श्वसन क्रिया बांये नथूने से होती है तो उसे चंद्र स्वर का चलना तथा जब दाहिने नथूने से होती है तो सूर्य स्वर का चलना और जब दोनों नथूनों से होती है तो सुषुम्ना स्वर का चलना कहा जाता है।

गर्मी संबंधी रोग– गर्मी, प्यास, बुखार, पित्त संबंधी रोगों में चन्द्र स्वर चलाने से शरीर में शीतलता बढ़ती है, जिससे गर्मी से उत्पन्न असंतुलन दूर हो जाता है। आवेग, क्रोध, उत्तेजना, उच्च रक्त चाप, मानसिक अधीरता में चन्द्र स्वर चलाने से शीघ्र लाभ होता है।

सर्दी संबंधी रोग– सर्दी, जुकाम, खांसी, दमा आदि कफ संबंधी रोगों में सूर्य स्वर अधिकाधिक चलाने से शरीर में गर्मी बढ़ती है, सर्दी का प्रभाव दूर होता है।

आकस्मिक रोग– जब रोग का कारण समझ में न आये और रोग की असहनीय स्थिति हो, ऐसे समय रोग का उपद्रव होते ही, जो स्वर चल रहा है उसको बन्द कर विपरीत स्वर चलाने से तुरन्त राहत मिलती है।

13. **गोदुहासन में नमस्कार मुद्रा–** 5 से 10 मिनट नमस्कार मुद्रा में गोदुहासन में बैठकर दिन में पांच-सात बार दीर्घ स्वर में ओम् अथवा नमस्कारमंत्र के एक-एक पद का कुछ समय तक उच्चारण जितना लम्बा कर सकें, करने से शरीर के बायें-दायें भाग का संतुलन होता है जिससे पैर, मेरुदण्ड, मस्तिष्क एवं नाड़ी संस्थान संबंधी रोग होने की सम्भावना नहीं रहती है।

14. **अंग व्यायाम–** शरीर के अंग, उपांग तथा प्रत्येक भाग की मांसपेशियों को प्रतिदिन कम से कम एक बार अथवा आवश्यकतानुसार जितना संभव हो आगे-पीछे, दायें-बायें, ऊपर-नीचे, घुमाने, खींचने, दबाने, मसलने, सिकोड़ने और फैलाने से, सम्बन्धित भाग की मांसपेशियाँ सजग और सक्रिय हो जाती हैं। परिणामस्वरूप उस भाग में रक्त परिभ्रमण नियमित होने लगता है। आँख, कान, नाक, मुँह, गला, छाती, पेट, हाथ, पैर, कमर और शरीर के

मुख्य जोड़ों के व्यायाम से वहाँ पर प्राण ऊर्जा का प्रवाह सही होने लगता है।

15. **उड्डियान बंध–** श्वास को बाहर निकालकर पेट को कमर की तरफ जितना सिकोड़ सकें उतना सिकोड़ने से बाह्य कुम्भक होता है, इस स्थिति को उड्डियान बंध कहते हैं। खाली पेट इस क्रिया से आमाशय का सम्पूर्ण भाग स्पंज की भांति निचोड़ा जाता है। जिससे जमा अथवा रुका हुआ रक्त पुनः प्रवाहित होने लगता है। फलतः पेट के सभी अंग सक्रिय होने लगते हैं एवं पेट के रोग ठीक होते हैं।

16. **मूल बंध–** मल द्वार को ऊपर खींचकर संकुचित कर रखने की शारीरिक स्थिति को मूल बंध कहते हैं। इस बंध से आंतों और मल मूत्र संबंधी अंग बराबर कार्य करते हैं तथा उनसे संबंधित रोगों में लाभ होता है।

17. **रीढ़ के घुमावदार व्यायाम–** मनुष्य को छोड़कर सभी प्राणियों की रीढ़ की हड्डी क्षितिज के समानान्तर होती है। अतः चलने-फिरने में उनके मणके स्वयं हलचल में आ जाते हैं। परिणाम स्वरूप उनकी सुषुम्ना नाड़ी की सुप्त शक्तियाँ स्वयं जागृत हो जाती हैं। यही कारण है कि अन्य जीवों को मनुष्य की अपेक्षा स्नायु सम्बन्धी रोग कम होते हैं। यदि साधक भी रीढ़ के विविध घुमावदार आसनों को नित्य विधिपूर्वक करलें तो उनमें भी सुषुम्ना शक्तियाँ जागृत होने लगती हैं, ऊर्जा चक्र सक्रिय होने लगते हैं एवं स्नायु संस्थान ताकतवर होने से, स्नायु संबन्धी रोगों के होने की संभावनाएं बहुत कम हो जाती हैं। इस व्यायाम को नियमित करने से नाभि अपने स्थान पर रहती है। कब्ज, गैस, थकावट, आलस्य, अनिद्रा, मोटापा, मधुमेह एवं स्नायु संबंधी अन्य रोगों में लाभ होता है। मेरुदण्ड के मणके अपने स्थान पर रहते हैं।

18. **उषापान–** बिना कुछ खाए अथवा पिए एवं दांतुन किए प्रातःकाल अपने पेट की क्षमतानुसार सर्व प्रथम भर पेट पानी पीने को उषापान कहते हैं। उषापान से आमाशय और आंतों की सफाई होती है। जिससे पाचन संबंधी रोग होने की संभावनाएँ कम हो जाती हैं और यदि असावधानी के कारण रोग हो भी गए हों तो भी बवासीर, सूजन, संग्रहणी, ज्वर, उदर रोग, कब्ज, आंत्ररोग, मोटापा, गुर्दे संबंधी रोग, यकृत रोग, नासिका से रक्त स्राव, कमर दर्द, आंख, कान आदि विभिन्न अंगों के रोगों से राहत मिलती है। नेत्र ज्योति में वृद्धि तथा बुद्धि निर्मल होती है। **(क्रमशः)**

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)
फोनः 0291-2621554, 94141-34606
E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.com

प्रेरक-प्रसंग

अनुकरणीय प्रयास

श्री आर. प्रसन्नचंद चोरडिया

थोड़े दिनों पहले देश की प्रसिद्ध दवा निर्माता कंपनी CIPLA की वार्षिक रिपोर्ट मिली। उसमें इस बात का उल्लेख किया गया था कि As in the past, CIPLA has made a special effort to produce this report at a low cast, without compromising its quality or contents leading to a saving of Rs. 40 Lakhs. This amount has been donated to CIPLA Public Charitable Trust.

क्या हम भी आर्ट पेपरों पर छपने वाले बड़े-बड़े निमंत्रण-पत्र पर होने वाले खर्च कम कर-अपने स्वधर्मी भाइयों के परिवारों के लिए- वह बचत राशि उनके शिक्षा व चिकित्सा के लिए उपयोग में लाने पर विचार करेंगे। अगर इस विषय पर हमें ध्यान ही नहीं देना है और आंख मूंद कर चलना है तो चलने दो जैसा चल रहा है। होने दो धूम-धड़ाका जैसा हो रहा है।

फिर भी चलते-चलते एक सच्चाई समाज के सामने रखना चाहता हूँ कि हमारे कई सहधर्मी परिवारों को 350/- रुपए दवा खरीदने तक के लिए पैसे कम पड़ जाते हैं। इसलिए वे अपना इलाज समय पर नहीं करवा पाते और अपना मन मसोस कर रह जाते हैं। ऐसी हकीकतों से हम रोज रू-ब-रू होते रहते हैं।

क्योंकि देखा है हमने उनकी ज़िन्दगी को इतने करीब से।
जितना रिश्ता दौलत वालों से रहा, उतना ही रहा गरीब से।।

समाज में सहधर्मियों की ऐसी दशा देखकर हमारे कुछ सहृदयी सज्जनों ने अपने मंदिरों में, स्थानकों में, महिला संगठनों ने, युवक मंडलों ने और अनेक ट्रस्टों ने सहधर्मी-सहयोगी का कार्य आरंभ किया है। समाज के बच्चों को शिक्षित बनाने के लिए छात्रवृत्ति देना आरंभ किया है। वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। फिर भी-

ज्यादा की जरूरत है, ज्यादा होना चाहिए।
हमारे दिल में उनके लिए, कुछ जगह होनी चाहिए।।

हम परम श्रद्धेय साधु-संतों से और श्रीसंघों से निवेदन करना चाहते हैं कि चातुर्मासकाल में सहधर्मी कोष की स्थापना कर हमारे सहधर्मी भाइयों को आधी कीमत पर ईलाज कराने की योजना बनानी चाहिए। यह हमारा फर्ज है और कर्तव्य भी है। हम चातुर्मास खर्च के कुल बजट का 5% से 10% यदि इस नेक काम के लिए निकाल सकते हैं तो भी काफी बड़ा काम हो सकता है। तो आइए, हम आगे आकर पहल करें और सहधर्मी भाइयों के होठों से ये स्वर स्वतः ही गूंजने चाहिए-

जब कोई नहीं आता, मेरे भाई काम आते हैं।
मेरे दुःख के दिनों में वे साथ निभाते हैं।।

-52, कालाथी पिल्लै स्ट्रीट, चेन्नई-600079

बाल-स्तम्भ

आह्वान : नौनिहाल पीढ़ी को

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 अगस्त 2011 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

ओ मेरे नन्हे साथी, ओ मेरे मुन्ने साथी,
ओ मेरे भोले साथी, ओ मेरे मासूम साथी।

उठो मजहब की मसाल जलादो,
अज्ञान अंधेरा दूर भगादो,
ज्ञान सुधा का घूंट पिलादो,
जीने की नव राह दिखादो,
ज्ञान की ऐसी लौ जगादो,

कि देखते रह जायें, जगत के वासी,
कि देखते रह जायें, भारत के वासी,
ओ मेरे नन्हे साथी, ओ मेरे मुन्ने साथी। ओ मेरे भोले.....

तुम समाज के नव रतन हो,
नये सूरज की नई किरण हो,
उठो रूढ़ियों को मिटादो,
मुरझी कलियां फिर खिलादो,
देखो साथी भटक न जाना,
शान न अपनी तुम गंवाना,

मानवता का मान बढ़ाना,
छल कपट से लड़ते जाना,
काम ऐसे कर दिखाना,
कि देखते रह जायें, जगत के वासी,
कि देखते रह जायें, भारत के वासी,
ओ मेरे नन्हे साथी, ओ मेरे मुन्ने साथी। ओ मेरे भोले.....

आज अहिंसा के पुजारी,
पाप से भरते तिजोरी,
कह रही इंसाफ की गोरी,
टूट गई है धर्म की डोरी,
शोर शराबा यहाँ मचा है,
खून खराबा यहाँ मचा है,
उठो साथी इन्हें मिटादो,
अहिंसा का पाठ पढ़ादो,
सुखी जमाना फिर से ला दो,
फूंक दो ऐसा मंत्र साथी,
कि देखते रह जायें, जगत के वासी,
कि देखते रह जायें, भारत के वासी,
ओ मेरे नन्हे साथी, ओ मेरे मुन्ने साथी। ओ मेरे भोले.....

मानवता यहाँ रो रही है,
रोते-रोते बिलख रही है,
भींग गया आंसू से दामन,
ढीले पड़ गये प्यार के बंधन,
टूट गये इंसाफ के कंगन,
सत्यवादी तड़फ रहे हैं,
लंदी फंदी पनप रहे हैं,
सच्चे ऐसे बन दिखाओ,

कि देखते रह जायें, जगत के वासी,
कि देखते रह जायें, भारत के वासी,
ओ मेरे नन्हे साथी, ओ मेरे मुन्ने साथी। ओ मेरे भोले.....

देखो जमाना बहुत बुरा है,
मुंह में राम, बगल में छुरा है,
सारा आलम बदल चुका है,
फैशन का लो भूत लगा है,
आधे कपड़ रह गये हैं,
सारे सपने ढह गये हैं,
बुरे कर्म से दूर भगो तुम,
बुरी संगत से दूर रहो तुम,
माता-पिता की शान बढ़ाओ,
जिंदगी को महान बनाओ,
काम ऐसे कर दिखाओ,

कि देखते रह जायें, जगत के वासी,
कि देखते रह जायें, भारत के वासी,
ओ मेरे नन्हे साथी, ओ मेरे मुन्ने साथी। ओ मेरे भोले.....

जैन धर्म अपना धर्म है,
सबसे ऊँचा यह धर्म है,
इसकी करनी है रखवाली,
इस बगिया के तुम हो माली,
गली-गली में फूल खिलादो,
राग,द्वेष को दूर भगादो,
धर्म के ऐसे बाग लगा दो,

कि देखते रह जायें, जगत के वासी,
कि देखते रह जायें, भारत के वासी,
ओ मेरे नन्हे साथी, ओ मेरे मुन्ने साथी। ओ मेरे भोले.....

-जनता साड़ी सेन्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छतीसगढ़)

प्रश्नः-

1. कवि नौनिहाल पीढ़ी को क्या संदेश दे रहा है? किन्हीं चार सन्देशों का उल्लेख कीजिए।
2. 'मानवता का मान बढ़ाना' का आशय बताइये।
3. इन शब्दों के अर्थ लिखिए- मजहब, लौ, सुधा, दामन, इंसाफ।
4. जमाना बहुत बुरा कैसे है?
5. आप कौनसी रूढ़ियों को मिटाना चाहेंगे और क्यों?

बाल-स्तम्भ [मई-2011] का परिणाम

जिनवाणी के मई-2011 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'सम्यक्त्व का प्रभाव' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 32 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	नीलम जैन-आलनुपर	19.5
द्वितीय पुरस्कार-200/-	वैभव जैन-हिण्डौनसिटी	19
तृतीय पुरस्कार- 150/-	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी	18.5
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	आयुष जैन-अलवर	18.5
	गजेन्द्रकुमार जैन-जयपुर	18.5
	सुजल जैन-जयपुर	18.5
	पल्लवी जैन-जोधपुर	18.5
	रत्नेश बोहरा-जोधपुर	18.5

कहानी प्रतियोगिता

हम चाहते हैं कि हमारी प्यारी नई पीढ़ी रचनाधर्मी बने एवं उसका सोच सकारात्मक तथा व्यापक हो, एतदर्थ एक कहानी प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। कहानी नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा से युक्त हो तथा पूर्णतः मौलिक हो। मौलिकता का प्रमाण-पत्र आवश्यक है। संकलित कहानी को प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। श्रेष्ठ कहानियों को 1500 रु., 1100 रु. एवं 800 रु. से पुरस्कृत किया जायेगा। सान्त्वना पुरस्कार पर भी विचार किया जा सकता है। प्रतियोगिता में 25 वर्ष तक के किशोर एवं युवा भाग ले सकते हैं, अतः आयु का प्रमाण-पत्र साथ प्रेषित करें। 30 सितम्बर, 2011 के पूर्व कहानी हमें मिल जानी चाहिए-**सम्पादक**

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

Prakrit Primer- Prof. Prem Suman Jain, ***Publisher-*** (i) Bahubali Prakrit Vidyapeeth, (2) National Institute of Prakrit Studies and Research, Shravanabelagola (Karnataka) Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi, ***Pages*** 8+88, ***Price*** Rs. 120/-, ***Revised Edition-*** 2010.

It is an enlarged and revised edition of Dr. Prem Suman Jain's earlier monograph 'Introduction to Prakrit Literature'. The revised edition accuaints a reader with the importance of Prakrit language and literature in a nut shell. It provides information about the Prakrit Poetry, Narrative literature and other Prakrit work alongwith the cultural significance of the prakrit literature. It also gives an account of some prominent Prakrit writers and institutions of Prakrit Studies.

धर्म का मर्म- डॉ. सागरमल जैन, ***प्रकाशक***- प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (म.प्र.), दूरभाष-07364-222218 ***पृष्ठ*** 68, ***मूल्य***- 25 रुपये, ***सन्***-2007 (तृतीय संस्करण)

धर्म एवं सम्प्रदाय में भेद है। कोई धार्मिक होकर किसी सम्प्रदाय में रहे तो बुरा नहीं, किन्तु कोई सम्प्रदाय में रहने से अपने को धार्मिक माने तो यह उचित नहीं। बाह्य क्रियाकाण्ड का पालन करना ही धर्म नहीं है, धर्म का सम्बन्ध आत्मिक शुद्धि से है। स्वभाव में रहना, समता में रहना, वीतरागता में रहना धर्म का स्वरूप है। डॉ. सागरमल जी जैन ने धर्म के मर्म को प्रभावशाली रीति से स्पष्ट किया है तथा इस बात पर व्यथा प्रकट की है कि हमने आत्मधर्म, निजगुण या स्वभाव को समझा ही नहीं है और निष्प्राण कर्मकाण्डों तथा रीतिरिवाजों में धर्म मान बैठे हैं। जहाँ आकुलता, तनाव और असमाधि है वहाँ अधर्म है तथा जहाँ निराकुलता, शान्ति और समाधि है वहाँ धर्म है। मूर्धन्य विद्वान् डॉ. सागरमल जी ने छोटी सी पुस्तक में दुःख का मूल ममता को निरूपित करते हुए समता में धर्म की पुष्टि की है। उन्होंने मानव धर्म एवं सामाजिक धर्म के साथ साधना के मनोविज्ञान से पाठकों को परिचित कराया है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र और संयम पर भी प्रकाश

डाला है। धर्म के सम्यक् स्वरूप को समझने हेतु पुस्तक की उपयोगिता असंदिग्ध है।

कतिपय अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

प्रोफेसर सागरमल जी जैन की हमें निम्नांकित पुस्तकें भी प्राप्त हुई हैं, जो सभी प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.) से प्रकाशित हैं, किन्तु इन पर मूल्य का उल्लेख नहीं है।

1. धार्मिक सहिष्णुता और जैन धर्म – पृष्ठ 32
2. जैन एकता का प्रश्न – पृष्ठ 32
3. श्रावक धर्म और उसकी प्रासंगिकता – पृष्ठ 32
4. अध्यात्मवाद और विज्ञान – पृष्ठ 32
5. जैन धर्म में नारी की भूमिका – पृष्ठ 48

पुस्तकों में महत्त्वपूर्ण पाठ्य सामग्री उपलब्ध है जो पाठक को एक समीचीन दृष्टि प्रदान करती है। इन पुस्तकों के लिए भी प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (म.प्र.) से सम्पर्क किया जा सकता है। विभिन्न अवसरों पर इन पुस्तकों का वितरण भी किया जा सकता है।

जीवन संस्कार क्रान्ति - जैनागम तत्त्व प्रकाश विशेषांक- ***प्रमुख सम्पादक***- उम्मेदमल गांधी, ***मूल लेखक***- श्रद्धेय श्री घासीलाल जी म.सा., ***प्रकाशक***- श्री वीर संघ, अहमदाबाद, 61, हीराभाई मार्केट, दीवान बल्लूभाई मार्ग, अहमदाबाद-380022. फोन:- 25467122, ***पृष्ठ***-158, ***मूल्य***-40 रुपये, जनवरी-2011

श्री घासीलाल जी महाराज द्वारा रचित जैनागम तत्त्व दीपिका के आधार पर जीवन संस्कार क्रान्ति त्रैमासिक पत्रिका का यह 'जैनागम तत्त्व प्रकाश' विशेषांक प्रश्नोत्तर शैली में तैयार किया गया है। इसमें कुल आठ अध्याय तथा 783 प्रश्नोत्तर हैं एवं अन्त में उपयोगी परिशिष्ट दिया गया है। प्रथम अध्याय जीव तत्त्व से सम्बद्ध है। द्वितीय अध्याय में अन्य पाँच द्रव्यों एवं लोक स्वरूप की चर्चा है। तृतीय अध्याय सम्यक्त्व एवं मिथ्यात्व का निरूपण करता है। शेष पाँच अध्यायों में श्रमणाचार, श्रावकाचार, सिद्धस्वरूप, अष्टविध कर्म, गुणस्थान, प्रमाण, नय, निक्षेप, स्याद्वाद, निश्चय, व्यवहार, पंचसमवाय, अनुयोग आदि की चर्चा है। सामान्य बोध के लिये पुस्तक उपयोगी है।

मोहनीय कर्म- संग्राहक- जेठमल गुलेचा, ***प्राप्ति-स्थान***- मूलचन्द जेठमल गुलेचा, 269, सरदारपुरा, चौथी बी रोड़, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2434681, ***पृष्ठ***- 4+176, ***मूल्य***-नित्य स्वाध्याय, जून-2011

नियमित स्वाध्याय करते-करते किस प्रकार एक अच्छा संग्रह हो जाता है, इसका उदाहरण है यह 'मोहनीय कर्म' पुस्तक। इस पुस्तक में कर्म-स्वरूप, कर्म-वर्गणा, कर्म-प्रकृति, कर्म-क्षय एवं कर्म-बन्धन की प्रक्रिया के साथ मोहनीय कर्म का विस्तृत विवेचन उपलब्ध है। दर्शन मोहनीय, चारित्रमोहनीय, नौ नोकषाय, क्रोध, मान, माया, लोभ, अनन्तानुबन्धी कषाय, 102 बोल का बासठिया, कषायद्वार का थोकड़ा आदि का भी निरूपण किया गया है। स्वाध्यायियों के लिए पुस्तक उपयोगी है।

श्री गुलेचा जी से हमें निम्नांकित पुस्तकें भी प्राप्त हुई हैं, जिनका मूल्य भी नित्य स्वाध्याय हैं-

1. काल लोक वर्णन - पृष्ठ 56, 2.जीव पुद्गल क्रम चक्र -पृष्ठ 72

पत्रिका की उत्कृष्टता हेतु लेखकों से निवेदन

जिनवाणी मासिक पत्रिका की गुणवत्ता निरन्तर अभिवृद्ध होती रहे, एतदर्थ लेखकों एवं रचनाकारों से निवेदन है कि वे अपनी रचनाएँ एवं आलेख उत्कृष्ट से उत्कृष्टतर बनाकर भिजवाने का श्रम करें। जिनवाणी पत्रिका के विविध स्तम्भों में प्रकाशित श्रेष्ठ लेखों एवं रचनाओं को पुरस्कृत किया जाता है। विगत तीन वर्षों से यह क्रम चल रहा है। शोधालेख भेजते समय प्रामाणिकता हेतु सन्दर्भ युक्त पाद टिप्पणों का पूर्ण उल्लेख आवश्यक है। आध्यात्मिक, नैतिक मूल्यों से युक्त आलेख, कविता, कथा आदि का स्वागत है। वैज्ञानिक आलेखों को तभी प्रकाशित किया जाता है जब उनकी पुष्टि/तुलना जैन धर्म-दर्शन से की गई हो। सद्गुणों के आधान, जीवन-व्यवहार के शोधन की प्रेरणा देने वाली रचनाएँ जिनवाणी में सदैव स्थान पाती हैं। नारी-स्तम्भ एवं युवास्तम्भ के लिए हमें श्रेष्ठ रचनाओं की प्रतीक्षा रहती है। बाल-स्तम्भ हेतु प्रेरक कथाओं की भी आवश्यकता रहती है।

जिनवाणी पत्रिका का अब तक जो स्तर उन्नत हुआ है, उसमें लेखकों एवं रचनाकारों का योगदान प्रशंसनीय है। आपकी रचनाएँ कदाचित् विलम्ब से प्रकाशित हो अथवा प्रकाशित न भी हो तो भी निराश न हों, अपितु आप अपना प्रयास जारी रखें। एक बार प्राप्त रचनाएँ लौटाना सम्भव नहीं हैं, अतः उनकी एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें। यदि आप कम्प्यूटर से e-mail द्वारा अपनी रचनाएं भेज सकें तो इसे प्राथमिकता दें। जिनवाणी का E-mail पता है- jinvani@yahoo.co.in यदि हाथ से लिखकर भेजें तो सुवाच्य हस्तलेख हो।

आपकी रचना श्रेष्ठता का पुरस्कार प्राप्त करे, ऐसी शुभकामना है। विभिन्न स्तम्भों में 2100 रुपये से लेकर 5100 रुपये की राशि का पुरस्कार सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.शिखरमल सुराणा की ओर से देय है।

-डॉ. धर्मचन्द जैन, सम्पादक

कविता

सत्संग में आइए

श्री अनराज बोथरा

प्यारे सज्जनों ज्ञान की गंगा में नहाइए।
सत्संग में आइए जी, सत्संग में आइए।।टेर।।
भव-भव भटकत नर-तन पाया है,
देव-दुर्लभ यह अवसर आया है।
प्रमाद में समय, वृथा ना गंवाइए।।
सत्संग में.....।

विषय और वासना में नहीं लुभाना है,
सप्त व्यसन का त्यागी बन जाना है।
जीवन अंपना, पवित्र बनाइए।।
सत्संग में.....।

देव गुरु धर्म ये तत्त्व तीन सार है,
इनके आराधे मिटे मिथ्या अहंकार है।
सम्यक् ज्ञान की, ज्योति जगाइए।।
सत्संग में.....।

जीव-अजीव पुण्य-पाप बन्ध मोक्ष जान लो,
संवर आस्रव निर्जरा के भेद आप पहचानलो।
हेय ज्ञेय उपादेय, जान अपनाइए।।
सत्संग में.....।

दान शील तप और भावो शुद्ध भावना,
भव-भव संचित कर्म है खपावणा।
आत्म उत्थान में, चरण बढ़ाइए।।
सत्संग में.....।

बीती को बिसार अब आगे ध्यान दीजिए,
पंच तज पंच भज पंच वश कीजिए।
'अनराज' नरतन, सफल बनाइए।।
सत्संग में.....।

-दीवानों की गली, घासमण्डी, जोधपुर (राज.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (16)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग दो-सामान्य पूर्वधर खण्ड)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह चौथी किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 अगस्त 2011 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-2

(पृष्ठ 141 से 190 तक से प्रश्न)

(अ) एक शब्द में उत्तर दीजिये-

1. प्रखर बुद्धि वाले विद्वान् किसे प्रणाम करते हैं?
2. आयु और प्राणों का भेद-प्रभेद सहित वर्णन कौन-से पूर्व में किया है?
3. श्रेष्ठी द्वारा किये गये पाँच शालिकणों को कौनसी बहू ने सुरक्षित रखा?
4. प्रथम दशपूर्व घर कौन थे?
5. कौन व्रत-नियम करते हुए भी श्रद्धा से विचलित हो गया?

(आ) अंकों में उत्तर दीजिये-

6. कृष्ण वासुदेव के परिवार में उग्रसेन आदि.....राजा हुए।
7. इन.....महानिमित्तों द्वारा भविष्य को जानने की विधि का वर्णन है।
8. द्वितीय श्रुतस्कन्ध के दशों वर्गो में कुल.....अध्ययन हैं।
9. व्याख्या प्रज्ञप्ति के 101 शतकों में से आज.....शतक ही उपलब्ध हैं।
10. दूसरे श्रुतस्कन्ध में भद्रनन्दी आदि.....राजकुमारों का वर्णन है।

(इ) 'स' अक्षर से रिक्त स्थान की पूर्ति करें-

11. भगवान महावीर के शासन में आर्य जम्बू एक महान.....आचार्य हुए।
12. मेघमुनि ने श्रमणवर्ग की सेवार्थ अपना तन, मन, सर्वस्व.....कर दिया।
13. परिग्रह के हेतु ही मानव विविध कष्टों को.....करता है।
14. .....नामक श्रमण अन्तिम दश पूर्वधर हैं।
15. सुरादेव और चुलनीशतक के आठ-आठ करोड़ .....का उल्लेख है।

(ई) किसने किसको कहा:-

16. मेरु प्रभ हाथी के भव में खरगोश पर अनुकम्पा कर अपने प्राण दे दिए थे?
17. तुमने देवभव किस तरह से प्राप्त किया है?
18. बिना भैया के कहे मैं कैसे लौटूँ?
19. महाराज! आपको भोग से प्रयोजन है अथवा योग से?
20. तेरे घड़ों को कोई पत्थर मारकर फोड़ने लगे तो तूं क्या करेगा?

(उ) गलत शब्द को रेखांकित (Under Line) करिए और सही शब्द लिखिए:-

21. भटकते हुए प्राणियों को जिनवाणी रूपी अमृत निःशुक्ल दिया जा रहा है।
22. समुद्र तट पर चम्पा बसाकर पाण्डवों को वहाँ रहने की अनुमति दी।
23. श्रेणिक ने मार्ग में प्रसन्नचन्द्र राजर्षि को तपतपाती धूप में ध्यानमग्न देखा।
24. श्रुतगंगा को द्वादशांगी के रूप में आबद्ध करने का तीर्थंकरों ने पूरा प्रयास किया।
25. द्वादशांगी का जो ह्रास हुआ है उसका चित्र आज हमारे समक्ष परोक्ष विद्यमान है।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (14) का परिणाम

जिनवाणी मई, 2011 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 264 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- श्री सुदर्शन सुराणा-गंगाशहर, बीकानेर (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- विजय लक्ष्मी मोहनोत-जयपुर (राज.)

तृतीय पुरस्कार-प्रिया धम्माणी-अहमदाबाद (गुजरात)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. अंजना राजेन्द्र जी जैन-देवास (मध्यप्रदेश)
2. जया मोहनलाल जी भण्डारी-पुणे (महा.)
3. श्री रतन चन्द जी मेहता-जोधपुर (राज.)
4. दीपा अभिनन्दन जी कोठारी-अहमदनगर (महा.)
5. श्रीमती पुष्पा प्रकाशचन्द जी कांकरिया-रायचूर (कर्नाटक)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता–Aarti Rajendrakumarji Mutha-Amravati (M.H), Abhilasha Hirawat-Mumbai, Amisha Jain-Ajmer, Anil kumar Jain-Kota, Anita Atul Munot-Ichalkaranji, Anita Duggad-Dhulia (M.H), Anita Jain-Sawai Madhopur, Anu Jain-Hoshiarpur, Anurag Surana-Ajmer, Arpit Palrecha-Jodhpur, Aruna Jain-Hosiarpur Punjab, Asha Dosi-Jaipur, Babulal Jain-Mansarovar Jaipur, Babulal Katariya-Hyderabad, Basanta Madanlalji Sanklecha-Dhulia (M.H), Basanti Champalal Bhatewar-Dhulia (M.H), Bhagwan Raj Singhvi-Pali Marwar, Bhavika Shah -Belgaum, Bulbul Jain-Alwar, Chandan Mal Parlecha-Jodhpur, Chandni Jain-Indore, Chandralata mehta-Dudu, Jaipur, Chirag Jain-Sawai Madhopur, D.C.Jain-Jaipur, Darshika K Tatiya-Jalgaon, Deepa Abhinandanji kothari-Ahemadnagar, Deepmala Singhvi-Pali Marwar, Dharmesh Punamiya-Pali Marwar, Divya Daga-Jaipur, G.C.Kothari-Ajmer, Gunmala Jain-Chittorgarh,Hem Raj Surana-Jaipur, Hema Jain-Jaipur, Hema Kishore Bagmar-Secundrabad, Hemlata Kherada-Bhilwara, Jagdish Prasad Jain-Kota, Janesh Surana-Pali Marwar, Jewar Narendra Shah-Belgaum, Johari Mal Chajjer-Jodhpur, Jyoti Ashokji Gandhi-Ichalkaranji, Jyoti Lodha -Nagpur, Kalpana Dhakad-Gurgaon, Kamala Modi-Jodhpur, Kamala Modi-Ajmer, Kamla Singhvi-Jaipur, Kamla Surana-Jodhpur, Kamla Surana-Pali Marwar, Kanak Bader-Delhi, kanchan Lodha-Nasik, Kanhaiya Lal Jain-Bhilwara, Kanwal Raj Mehta-Jodhpur, Kavita Dani-Chittorgarh, Kiran Jain-Hoshiarpur, Kiran Kumbhat-Jodhpur, Kiran Pramod Tated-Dewas (M.P), Komal Ankur Kothari-Baroda, Krishna Agarwal-Jaipur, Kumkum Jain-Jaipur, Kumkum Jain-Sawai Madhopur, Kuntal Kumari Jain-Jaipur, Kusum Pareshji punamiya-Ichalkaranji, Kusum Singhvi-Jodhpur, Lalitha Gadiya-Hyderabad, Lata Satishji Aanchaliya-Dhulia (M.H), Leelabai Prakashchandji Munot-Ichalkaranji, Leena Mahendra Jain-Chiplun, Ratnagiri, Malliga Nirmal-Vellore, Mamta Jain-Sawai Madhopur, Manila Parakh-Jaipur, Manja Jain-Karauli, Manju Bhandari-Beawar, Manju Devi Surana-Bikaner, Manju Dilip Jain-Mumbai, Manju Kanstiya-Kolkata, Manju Sandeep Mutha-Ichalkaranji,Manjula vasant kumarji Jain-Mumbai, Manoj Kumar Sancheti-Jalgaon, Maya M Jain-Jalgaon, Mayuri Jain-Dhule, Meena Jain-Sawai Madhopur, Meena Vijay Bora-Mumbai, Meenabai Rajkumari Nahar-Ichalkaranji, Monali Mishrilal Pipada-Ichalkaranji, Monika Jain-Kapurthala, Mridula Kumbhat-Jodhpur, Naman Jain-Ajmer, Narendra Gopichand Bamb-Bhayandar, Nathmal kothari-Durg (C.G), Neelam Chipad-Dudu,Jaipur, Neelam Jain-Ajmer, Neelu Jain-Ludhiana, Punjab, Neetu Gulecha, Neha Jain-Sawai Madhopur, Nenchand Bafna-Jodhpur, Nilima Yograjji Chopda-Ichalkaranji, Nirmala Hirawat-Jaipur, Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Nirmala Vijayji Gundecha-Kolhapur, Nisha Jain-Aligarh, Tonk, Nutan Ajit Bhandari-Ichalkaranji, Padam Chand Agarwal-Jaipur, Padam Chand munot-Jaipur, Padma R Bohra-Raichur, Parasmal D Baghmar-Barmer, Pista Golecha-Jaipur, Prabha Gulecha-Bangalore, Prabha Kishan Kataria-Mumbai, Pragya Bupkiya-Indore, Prakash Chand Gadiya-Hyderabad, Pramila Babulalji Pokarna-Dhulia

(M.H), Pramila Kothari-Jodhpur, Pramila Mehta-Dudu, Jaipur, Pramila Sajjanrajsa Mehta-Bangalore, Prasan Gang-Mumbai, Prasan Kothari-Jodhpur, Pratibha Pradeepji Gandhi-Pune, Praveena Kothari-Jaipur, Preeti khincha-Jaipur, Prem Jain-Alwar, Prem kanta kothari-Jaipur, Premlata Lodha-Jaipur, Premlata Sand-Pali Marwar, Priti Jain-Ujjain, Priyanka Jain-Jaipur, Priyanka mukesh Chopda-Ichalkaranji, Pushpa Jain-Jaipur, Pushpa Lodha-Jodhpur, Pushpa Navlakha-Jaipur, R. Chandra Bothra-Choolai, Rajani Jain-Sawai Madhopur, Rajkumari Lodha-Jaipur, Rajul Rameshji Kothari-Dhulia (M.H), Rakhi Jain-Dooni (Tonk) Rajasthan, Rashi Navlakha-Jaipur, Ratan Karnawat -Jaipur, Reema Jain-Ludhiana, Punjab, Rekha Kothari-Ajmer, Renumal Jain-Jodhpur, Rishabh Jain-Bundi, Sagarmalji Indermalji Jain-Dhule, Sangeetha P Baid-Chennai, Sangita A Singavi-Nasik, Sanju Jain-Dooni (Tonk) Rajasthan, Sarita Manoj Babel Ichalkaranji, Sarla Kankariya-Jalgaon, Sarla Singhvi-Ajmer, Saroj Parasmalji Runwal-Dhulia (M.H), Seema Dhing-Udaipur, Shakuntala Bohra-Secundrabad, Shakuntala Hansrajji Bohra-Ichalkaranji, Shakuntala Khushalchand Khivasara-Jalgaon, Shashank Choudhary-Jaipur, Shashi kanta Jain-Bharatpur, Shashikala P Lunawat-Nasik, Shilpa Surana-Ajmer, Shobha N Gugale-Ichalkaranji, Shobha Nahar-Secundrabad, Shobha Sagarmalji Kothari-Dhule, Shweta Jain-Dooni (Tonk) Rajasthan, Siddhi Bafna-Jodhpur, Smita Nileshji Muthiyan-Ichalkaranji, Subhash M Dhadiwal-Mumbai, Sudha Daga-Bikaner, Sugan Chand Chajjer-Jodhpur, Sunanda Lodha-Dhulia (M.H), Sunita Dulaj-Jaipur, Sunita Navlakha-Kota, Sunitha Y Singhvi-Chennai, Suresh Chand Jain-Alwar, Suresh Kumar Sand-Pali Marwar, Sushila Begani-Bikaner, Sushila Bhandari-9341285325, Sushila Gang-Jodhpur, Sushila Gulecha-Jodhpur, Sushila Kantilalji Runwal-Pune, Sushila Ranka-Jalgaon, Sushila S Surana-Nasik, Sushila Tater-Bhilwara, Suvarna Nitin Bora-Ichalkaranji, Tara Devi Jain-Ujjain, Tripti Kumbhat-Jaipur; Trupti P Bora-Ichalkaranji, Ugama Bai Dosi-Secundrabad, Urmila Kanwar kankariya-Chennai, Usha Jain-Ahemdabad, Usha Mehta-Jaipur, Usha Praveenji Bardia-Dhulia (M.H), Usha Surana-Jaipur, Vandana Anil khicha-Surat, Vandana Punamiya-Pali Marwar, Varsha Dosi-Nagaur, Vibha Jain-Jodhpur, Vidhya Sanghvi-Badnawar, Vijay Laxmi-Ajmer, Vijay Laxmi Mohnot-Jaipur, Vijaya devi Bagmar-9448765237, Vikas Bamb-Mumbai, Vimala Surana-Jaipur, Vimalabai Kankariya-Jalgaon, Vimla Bohra-Jaipur, Vimla Ranulal Kocchar-Nasik, Vimlabai M khivasara-Dhule, Vinod Kumar Palrecha-Jodhpur, Yugal Nemichand Ranka-Ahmedabad.

24 अंक प्राप्तकर्ता– Akhilesh-Jodhpur, Balwant Singh Chordia-Jhalawar, Chandrakala Dilipji ranka-Jalgaon, Chetana B Bothra-Mumbai, Hansa Devi Surana-Bikaner, Indu Bohra-Ajmer, Jaya Bhandari-Beawar, Kalyan Mal Jain- Jhalawar, Kiran Kothari-Jaipur, Madhu Parmodji Bora-Ichalkaranji, Mamta Bhandari-Nagaur, Maya Alijar-Secundrabad, Meena Chordia-Chennai, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Pinky jain, Poonam Jain-Faridkot, Punjab, Prakashbai Bhurawat-Bhandara, Pramila Bohra-

Jaitaran, Pramila Mehta-Ajmer, Pushpa Hastimal Golecha-Beawar Ajmer, Pushpa M Golecha-Ajmer, Rakesh Kankariya-Jodhpur, Ranulal Kocchar-Nasik, Ratanchand Mehta-Jodhpur, Renu Heerawat-Jaipur, Sarla Golecha-Beawar, Seema Jain-Aligarh, Tonk, Sharmila Jain-Ajmer, Sonam Golecha-Beawar Ajmer, Sunita Doshi-Beawar, Suraj Bohra-Jodhpur, Surekha A Bhandari-Nasik, Surekha Nemichandji Nahar-Jaipur, Susheela Jain-Karauli, Sweety Golecha-Beawar Ajmer, Tara Bafna-Chennai, Ugma Devi Duggar-Bangalore, Upma Choudhary-Ajmer, Urmila kankariya-Jodhpur, Vijaimal Mehta-Jodhpur.

23 या इससे कम अंक प्राप्तकर्ता– Bharti Sunil Surpure-Ichalkaranji, Deepali Parakh-Jaipur, Hemlata Jain-Beawar, Navratan Mal Ostwal-Nagaur, Neelam Kankaria-Nagaur, Nirmala Hamirmal Surana-Bikaner, Rajendar Chopra-Jabalpur M.P, Shashikala Sakhlecha-Bangalore, Shilpa Priteshji Surana-Jalgaon, Vimla N Mehta-Jodhpur, Ashish Jain-Sawai Madhopur, Chandrakala Mehta-Bangalore, Dhani Devi Ranka-Vapi, Valsad, Jyoti Bhansali-Bangalore, Santosh Jain-Alwar, Shashikala Sakhlecha-Bangalore, Shira Jain-Alwar, Rekha Surana-Nagaur, Buddhi Prakash Jain-Bhesodamandi Mandsor, Pratima.

क्या मौत है जिन्दगी से बेहतर?

श्रीमती ममता भण्डारी

जिन्दा थे तो किसी ने पास भी बिठाया नहीं,
अब खुद मेरे चारों ओर बैठे जा रहे हैं।

पहले कभी किसी ने मेरा हाल न पूछा,
अब सभी आँसू बहाए जा रहे हैं।

एक रुमाल भी भेंट नहीं किया जब हम जिन्दा थे,
अब शालें और कपड़े ऊपर से ओढ़ाएँ जा रहे हैं।

सबको पता है कि शालें और कपड़े इसके काम के नहीं,
मगर फिर भी बेचारे दुनियादारी निभाएँ जा रहे हैं।

कभी किसी ने एक वक्त का खाना तक नहीं खिलाया,
अब देशी घी मेरे मुंह में डाले जा रहे हैं।

जिन्दगी में एक कदम भी साथ न चल सका कोई,
अब फूलों से सजाकर कन्धे पे उठाये जा रहे हैं।

आज पता चला है मौत जिन्दगी से बेहतर है,
हम तो बेवजह ही जिन्दगी की चाहत किए जा रहे हैं।

-मनोज भवन, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)

रिपोर्ताज

ग्रीष्मकालीन शिविरों में बढ़ता उत्साह

श्री जितेन्द्र कुमार डागा, जयपुर

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में लगभग 30 स्थानों पर 21 अथवा 22 मई से 5 जून 2011 तक ग्रीष्मकालीन शिविरों का सुन्दर आयोजन हुआ, जिसमें लगभग 3600 शिविरार्थियों ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। शिविरों की रिपोर्ट शिविर समिति के संयोजक श्री जितेन्द्र कुमार जी डागा के शब्दों में उनकी निरीक्षण यात्रा के आधार पर प्रस्तुत है।-सम्पादक

प्रभु महावीर की आदेय अनुपम देशना उत्तराध्ययन सूत्र के 29वें अध्ययन का विवेचन करते हुए पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. ने लिखा है कि सत्य की त्रिवेणी तीन धाराओं में बहती है भावों की सत्यता से, करण (कार्य) की सत्यता से और योगों की सत्यता से। इन तीनों का मुख्य फल तीनों की विशुद्धि कार्यक्षमता में वृद्धि एवं धर्म आराधना है। करण सत्यता से भविष्य में उसके वक्तव्य और कार्य अर्थात् उपदेश और आचरण दोनों समान हो जाते हैं। करण सत्यता के ये गुण उन्हीं पूज्यश्री के शिष्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. में स्पष्ट झलकते हैं। आचार्य भगवन्त एवं शान्त-दान्त-गम्भीर उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की असीम-पावन कृपा से एवं स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के अथक प्रयास से आध्यात्मिक चेतना वर्ष में लगे ग्रीष्मकालीन शिविरों को आशातीत सफलता मिली थी एवं 2800 छात्रों ने राजस्थान (जयपुर, जोधपुर के अतिरिक्त) में ज्ञानार्जन किया था।

पूर्व में शिविरों की सफलता से उत्साहित तो सभी थे, पर मन में झिझक बनी हुई थी कि क्या इस वर्ष भी पूर्व की भाँति दृश्य उपस्थित हो सकेगा? किन्तु आचार्यप्रवर ने जब सवाये कार्य की मंगल-मनीषा से आशीर्वाद दिया तो मन उत्साह से भर गया।

यह आचार्य भगवन्त एवं सन्तों की परम कृपा का ही पावन परिणाम है कि इस वर्ष 2011 में आयोजित शिविरों में अपार उत्साह, श्रद्धा, लगन, अध्ययन की उत्कंठा लिये संख्या में पहले से सवाये 3600 के लगभग शिविरार्थियों ने पूरे मनोयोग के साथ अध्ययन किया तथा शिक्षकगण, कार्यकर्त्ता एवं संयोजकों ने पूर्ण पुरुषार्थ के साथ उनका सहयोग किया।

22 मई 2011 से शिविरों के प्रारम्भ का आगाज ही सत्य एवं साधना के

मजबूत धरातल पर स्थित प्रभु महावीर के इस शासन के कालजयी, अविनश्वर होने का सुघोष कर रहा था। नन्हे-नन्हे बालक अपनी सुकोमलता को तजकर ज्ञानार्जन करने हेतु शिविरों की ओर मुख कर रहे थे। उनकी श्रद्धा को देख एवं ज्ञान सीखने की तन्मयता को देख बड़े-बड़े लोग दाँतों तले अँगुली दबा रहे थे और फिर चला भविष्य के कर्णधारों के एवं वर्तमान में पुरुषार्थ कर शिविरों को प्रभावी करने वाले संयोजकों, शिक्षकों एवं कार्यकर्त्ताओं के दर्शन का दौर।

शिविरों से पूर्व पल्लीवाल क्षेत्र में वरिष्ठ स्वाध्यायियों, युवा साथियों के परामर्श अनुसार शिविर पूर्व बैठक जब हिण्डौनसिटी में हुई तब ही ऐसी सकारात्मक एवं अनुशासित उस सभा को देख महुआ के श्री अशोकचन्द जी जैन के मुख से सहसा ही निकल गया कि "Well begining is half work done" हकीकत में शिविरों का वही स्वरूप बना।

गंगापुरसिटी जहाँ पिछले वर्ष के आधार पर मात्र 20 की संख्या का अनुमान कर रहे थे वहाँ इस वर्ष रजिस्ट्रेशन 195 के हो चुके थे। 160-170 की नियमित उपस्थिति; वह भी पूर्ण अनुशासन एवं अध्ययन के साथ। जिस समझ पूर्वक शिविरार्थियों ने उत्तर दिये तो ऐसा लगा कि अगर हम पुरुषार्थ जारी रखें तो भविष्य की सुमंगलता निश्चित है। प्रतिदिन प्रति कक्षा के अध्ययन का एक मानक स्थापित कर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के साथ शिविरार्थी अध्ययन में निरन्तर आगे बढ़ रहे थे। आदरणीय शिवचरण जी पटवारी के साथ युवा-उत्साही पवन जी जैन, युवा प्रमुख श्री मनोज जी जैन, शाखा सचिव, श्री शीतल प्रसाद जी सभी पूर्ण पुरुषार्थ कर रहे थे। अध्यक्ष श्री राजीव जी पल्लीवाल कह रहे थे कि शिविरों से मेरे घर में हाय-हेलो छूट गई अब तो जय जिनेन्द्र का ही बोलबाला है। **हिण्डौनसिटी** में 220 विद्यार्थियों के अपार समूह को देख एवं धवल सेना को देख हृदय प्रफुल्लित हो गया। शिविरार्थियों ने समिति गुप्ति के थोकड़ों को जिस विशुद्ध तरीके से सुनाया, वह सदैव स्मरणीय रहेगा। छोटे बच्चों ने सामायिक, प्रतिक्रमण के पाठ अति विश्वास एवं शुद्धता से सुनाए। श्री राहुल जी जैन कह रहे थे कि शिविरों में सामायिक की वेशभूषा जब उनके पुत्र को मिली तो वह (आद्र कुमार की भाँति) बड़ा प्रसन्न हुआ एवं उस दिन 5 सामायिक की। उसका गणवेश उतारने का मन ही नहीं हो रहा था। शिविरों को सफल बनाने में श्री निरंजनलाल जी, मूलचन्द जी, सुमत जी, कपूरचन्द जी एवं राकेश जी जैन पूरे परिवार के साथ लगे हुए थे। तीन दिन में एक छोटी सी बालिका ने 24 भगवान, 20 विरहमान, 16 सतियाँ, 11 गणधर, करेमि भंते तक पाटी, दस बोल सीख लिये। प्रभु महावीर के दर्शन की व्यापकता एवं आकर्षण वहाँ के शिविरार्थियों की संरचना में दिखाई दे रहा था।

जाति से ब्राह्मण शिविरार्थी भी पाठ शुद्धता के साथ सुना रहे थे। वहाँ पर 54 की संख्या निरन्तर बनी रही। **खेरलीगंज** में वरिष्ठ सुश्रावक एवं संघ के उन्नयन की भावना जिनके हृदय में सदैव है ऐसे श्री सुरेश जी जैन, मुकेश जी, मनीष जी, प्रवीण जी जैन के सत्प्रयासों से 180 की संख्या थी। गये तब एक नन्हीं बालिका श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. के भजन से वातावरण को धर्ममय बना रही थी। बच्चों का अध्ययन सुव्यस्थित था। बड़े शिविरार्थियों हेतु अध्ययन को और मजबूत करने हेतु ओजस्वी विद्वान् श्री दिलीप जी जैन आने वाले थे। **नदबई** तो सदैव हमारे लिये प्रेरणास्रोत रहा है। आदरणीय सुज्ञ सुश्रावक श्री सुरेश जी, अनुभवी एवं संघ हितैषी श्री ज्ञानचन्द जी जैन, सरल युवा रत्न, ज्ञानवान श्री नरेश जी, मनीष जी, पंकज जी, दिनेश जी पहरसर वाले आदि सभी शिविरों के सफल आयोजन हेतु पूर्ण पुरुषार्थ कर रहे थे। वहाँ लगभग 103-107 की संख्या बनी रही। **वासनगेट भरतपुर** में अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र जी, सुनीता-रविन्द्र जी, अशोक जी, चन्द्रकान्ता जी के सत्प्रयासों से 90-95 की संख्या थी एवं शिक्षकगण अध्ययन कराने का पूरा श्रम कर रहे थे। जयपुर सिद्धान्तशाला के श्री महेन्द्र जी वहाँ पर उपस्थित थे। **मौहल्ला गोपालगढ़-भरतपुर** में कदम रखते ही वरिष्ठ पर हृदय से युवा श्री प्रेमचन्द जी जैन, बाबूलाल जी एवं पारसमल जी तथा युवारत्न श्री मनीष जी जैन ने जिस तरह गुरु के प्रति भक्ति के साथ शिविर की झलक दिखाई तो उत्तराध्ययन के 32वें सूत्र की गाथा **तस्सेस मग्गो गुरुविद्ध सेवा** अज्ञान को दूर करने का उपाय गुरुसेवा एवं अनुभवी की सेवा ही है, इसका उदाहरण सामने परिलक्षित होने लगा। जिस भावनात्मक तरीके से गुर्जर-मीणा जाति के बालक जिन-धर्म के बालकों के साथ भजन बोल रहे थे तो ऐसा लग रहा था कि यह संगीत ही संगातीत बनाने वाला है। **मण्डावर** में महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. की पावन कृपा बरसी वहाँ 60 विद्यार्थी अध्ययनरत रहे। श्री वीरेन्द्र जी, सुमत जी, अशोक जी, किशनचन्द जी जैन ने शिविर में पूर्ण पुरुषार्थ किया। **हरसाना** की तो कहानी सिद्धान्तशाला के छात्र श्री गजेन्द्र जी जैन ने नई लिख दी। जहाँ मुखवस्त्रिका भी कुछ घरों में ही मिलती है ऐसे क्षेत्र में 23 छात्रों को एक साथ सामायिक पूर्ण कंठस्थ करा दी। श्री शिवदयाल जी के साथ श्री अशोक जी, ओमप्रकाश जी, सुरेश जी जैन एवं श्रीमती उर्मिला जी सभी का योगदान सराहनीय है। अलवर में श्रीमती मंजू जी पालावत, श्री चण्डालिया जी, श्री अशोक जी पालावत शिविर का संचालन कर रहे थे। वहाँ पर 50 की संख्या है।

पल्लीवाल क्षेत्र के पूरे दौरे में श्री वीरेन्द्र जी जामड़ ने अपने प्रभावी, अनुभवी शब्दों से एवं श्री शैलेन्द्र जी कोठारी ने सभी शिविरार्थियों का उत्साहवर्द्धन

किया।

अजमेर-जयपुर सम्भाग के **दूदू** में अध्यक्ष श्री विनोद जी मेहता, माणक जी कोठारी, श्रीमती प्रमीला जी मेहता, युवा प्रमुख श्री सुरेन्द्र जी नाहर सभी सुचारु व्यवस्था के लिये पूर्णत: सजग हैं। **किशनगढ़** तो सदैव ही वरिष्ठ सुश्रावक श्री महेन्द्र जी जामड़, राजेन्द्र जी डांगी, सुकलेचा जी आदि के कारण अनुकरणीय मॉडल है। महासती श्री सौभाग्यकँवर जी म.सा. की असीम कृपा से वहाँ का माहौल श्रद्धा एवं उत्साह से परिपूर्ण है। **अजमेर** में कटारिया जी, ममता जी भण्डारी, छाजेड़ जी, पारसमल जी रांका आदि सभी की वजह से संख्या 108 एवं अध्ययन इस शुभ अंक की भाँति बहुत उत्तम है। बच्चे जिस तरह सभा में बैठे थे वह दृश्य अद्भुत था साथ में युवा साथी परिवार के सदस्य मनीष जी मेहता ने जब "Personality Development" पर विचार रखे तो सभी शिविरार्थी एकटक उन्हें सुन रहे थे। **वैशाली नगर-अजमेर** के श्रावकों का जोश अद्भुत है। श्री रमेशचन्द जी सिंघी का हँसमुख चेहरा, तो श्रीमती उर्मिला जी, श्री पीपाड़ा जी एवं अध्यक्ष महोदय श्री जीतमल जी कोठारी जिस लगन से बच्चों पर मेहनत कर रहे हैं जो दुलार दे रहे हैं वह प्रेरणास्रोत है। धर्मस्थली **ब्यावर** में जो अद्वितीय नज़ारा 225 बच्चों की संख्या एवं सहनशीलता देखने को मिली वह अद्भुत है। शिविर का समय 10 से 12 था। 12.40 पर पहुँचे, तब भी शिविरार्थियों के साथ युवा साथी श्री मनीष जी मेहता की मुस्कान बरकरार थी। इस मुस्कान का रहस्य श्री शान्तिलाल जी सुराणा एवं पूरे परिवार तथा समाज रत्न श्री लक्ष्मीचन्द जी भंडारी का पूर्ण सहयोग था। श्री बाफणा सा वहाँ के अध्ययन को व्यवस्थित रूप से देख रहे थे एवं श्री मूलचन्द जी भंडारी व उनके बाबू भी पूर्ण सहयोग दे रहे थे। **धनोप** में प्रतिदिन दोपहर की गर्मी में दूसरे ग्राम से गोखरू एवं लोढ़ा परिवार की बहुएँ वहाँ अध्ययन कराने आती हैं। यह ललक अद्वितीय एवं प्रेरणादायी है। श्री तेजमल जी लोढ़ा, ज्ञानचन्द जी मारु, प्रेमचन्द जी पालडेचा आदि सभी परिवार सहित शिविरों में समय दे रहे थे। श्री सरदारसिंह जी बोथरा, नीलकंठ जी भंडारी पूरे समय साथ ही थे।

पोरवाल क्षेत्र में स्वाध्यायी श्री लल्लूलाल जी, रविन्द्र जी, त्रिलोकचन्द जी जैन, पूर्व अध्यक्ष श्री कुशलचन्द जी गोटेवाले, सुरेश जी जैन, डॉ. तीव्र जी जैन, विद्वत्ता एवं संगठन शक्ति के सामंजस्य सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के श्री त्रिलोकचन्द जी जैन आदि ने अलीगढ़-रामपुरा से ले देई तक स्थान-स्थान पर जाकर शिविरों हेतु पोरवाल क्षेत्र में मजबूत आधारशिला रखी। इस जमीनी एवं ठोस कार्यवाही से एकाएक शिविरों हेतु स्वस्थ माहौल तैयार हो गया। एक दिन

पहले भजन-भाषण प्रतियोगिता इत्यादि के बारे में एवं अन्य सभी जानकारियाँ हर केन्द्र पर जाकर इन्होंने दी। फलस्वरूप इस बार पोरवाल क्षेत्र में शिविर सुनियोजित एवं व्यवस्थित रूप से लगे। शिक्षकों पर व्यवस्था का भार नहीं था। संयोजक अपने कर्त्तव्यों का हृदय से निर्वहन कर रहे थे। **अलीगढ़-रामपुरा** में अध्यक्ष श्री घनश्याम जी, पवन जी, धर्मेन्द्र जी जैन आदि के सद्प्रयासों से 148 की संख्या थी। नियमित पाठशाला होने की वजह से बच्चों का आधार मजबूत तो था ही एवं महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. एवं महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. के आगमन से नवीन उत्साह का संचार हुआ। **चौथ का बरवाड़ा** में श्री भैरूलाल जी, श्रीमती सुजाता देवी जी, हर्षदेवी जी एवं युवाओं के सद्प्रयासों से संख्या 125 थी। नन्हे-नन्हे सुकोमल बच्चे 24 भगवान के नाम सुना रहे थे तो उनकी श्रद्धा एवं मेधा देखने लायक थी। अध्ययन निरन्तर गतिशील था। **बजरिया** अध्यक्ष श्री गणपतलाल जी समय-समय पर पूरा प्रोत्साहन देते हैं एवं सवाया करने की प्रेरणा एवं कटिबद्धता के साथ शिविर में लगे तो उनके साथ श्री पदम जी, राजेश जी, रामदयाल जी आदि पूर्ण पुरुषार्थ कर रहे थे। सभी का सहयोग मिल रहा था। वहाँ पर शिविर का सम्प्रदायातीत माहौल विशेष प्रेरणा दे रहा था। 180 शिविरार्थियों का अध्ययन एवं एकाग्रता सुदृढ़ थी। **आलनपुर** में श्रीमती मोहनीदेवी जी, एडवर्ड जी जैन आदि पूरे उमंग से जुटे हुए थे, 61 शिविरार्थियों का अध्ययन गहराई के साथ ऐसा लग रहा था कि शिक्षकों ने पर्याप्त पुरुषार्थ किया है। विरासत लिये **शहर सवाईमाधोपुर** तो धर्म ध्यान में अग्रणी है, इसमें दोराय नहीं। श्री पदम जी गोटेवाले एवं शिक्षिकाओं के पूरे समूह ने अपनी पूर्ण शक्ति 170 शिविरार्थियों के उन्नयन में लगा रखी थी, श्री अनिल जी करेला वाले, पारस जी बोहरा शाखा-सचिव सभी व्यवस्थाओं को पूर्ण मनोयोग से देख रहे थे। **महावीर मण्डी** का शिविर श्री धनसुरेश जी जैन आदि के प्रयासों से एक आदर्श शिविर का रूप ले रहा था। संख्या एवं शिक्षकों का अनुपात सही होने से वहाँ प्रगति उल्लेखनीय बन गई थी। **हाउसिंग बोर्ड** में वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री लल्लूलाल जी, जम्बू जी, नरेन्द्र जी, आदि की सम्भाल से वहाँ के धैर्यवान, विद्याभिलाषी, एकाग्रचित 100 शिविरार्थी निश्चय ही जिनशासन की प्रभावना के लिए कटिबद्ध दिखाई दे रहे थे। **कुशतला** में 10 घरों की बस्ती में 55 शिविरार्थी थे। श्री भैरूलाल जी, रतनलाल जी आदि के सद्प्रयासों से शिविरार्थी का कौशल उभर रहा था। श्री सौभाग्यमल जी एवं ध्रुवनारायण जी का आशीर्वाद बना हुआ था। क्षेत्रीयप्रधान श्री सुरेश जी जैन नाम मात्र इस क्षेत्र को अपितु पूरे क्षेत्र में धर्म की अलख जाग्रत करने का पूरा प्रयास कर रहे थे। **सुमेरगंजमण्डी** में सुन्दर लेखनी के

धनी श्री राकेश जी जैन इत्यादि 70 शिविरार्थियों को अध्ययन कराने का पूरा प्रयास कर रहे थे। इन्द्रगढ़ से भी श्री ऋषभ जी जैन के सद्प्रयासों से 15 बच्चे नियमित विद्यार्जन करने आते हैं। नये शिविरार्थियों की सेवा-ध्यान-अध्ययन अनुमोदनीय था। **देई** तो भावी तुंगियापुर लग रही थी 4 से 6 का शिविर समय था। पहले वहाँ का आतिथ्य फिर बच्चों की जिज्ञासुओं के बीच कब रात्रि के 9 बज गये मालूम ही नहीं पड़ा। 60 शिविरार्थियों में जिज्ञासा थी एवं श्री बाबूलाल जी, रामपाल जी, ताराचन्द जी, नरेन्द्र जी की सम्भाल थी। उससे इस क्षेत्र का वर्तमान एवं भविष्य दोनों उज्ज्वल दिखाई दे रहा था। कोटा में स्पष्टवक्ता श्री प्रेमचन्द जी जैन, हनुमान जी खजूरीवाले, बाबूलाल जी आदि के सद्प्रयासों से 110 के लगभग दैनिक संख्या रही। सिद्धान्त शाला के श्री जिनेश जी आदि अच्छे पुरुषार्थ से अध्ययन करा रहे थे। **पोरवाल क्षेत्र** की पूरी यात्रा के दौरान सेवाभावी श्री विनयचन्द जी डागा, रितुल जी पटवा, मेघराज जी जैन आदि उत्साहवर्द्धन कर रहे थे।

मारवाड़ क्षेत्र अपनी एक विशिष्टता लिए हुए रहता ही है। यह दृष्टिगोचर हुआ पाली में; जहाँ 320 की विपुल संख्या में शिविरार्थी, योग्य शिक्षक, सुयोग्य व्यवस्थापक श्री मनोज जी गांग, कल्पेश जी लोढ़ा, बलोटा जी, उगम जी गाँधी, पगारिया जी एवं स्वयं अध्यक्ष श्री रूपचन्द जी चौपड़ा, श्राविका संघ के समन्वित प्रयासों से अद्भुत-अनुमोदनीय दृश्य उपस्थित कर रहे थे। प्रश्न पूछते तो सारे शिविरार्थी उत्तर देने के उत्सुक थे एवं बहुत सहज, स्पष्ट स्वरों में एवं पूर्ण आत्मविश्वास के साथ जवाब दे रहे थे। पिछले वर्ष से इस वर्ष के शिविर में जो एकाएक परिवर्तन हुआ उसकी मुख्य वजह थी भगवन्त का चातुर्मास, जिसमें एक मजबूत ठोस आधारशिला पाली में धर्म की रखी गई। इस शिविर में 50 प्रतिक्रमण एवं 100 नई सामायिक सीखने वाले होंगे, ऐसी सबल सम्भावना है। **पीपाड़सिटी** तो जन्म स्थली है महापुरुषों की। यहाँ की मिट्टी से ही विद्वत्ता-साधना की सुगंध आती है। वहाँ के 170 शिविरार्थी बड़े अनुशासित एवं श्रद्धा से अभिभूत हो अध्ययन कर रहे थे। श्री सुमति जी, परेश जी, पुष्पा जी मेहता, महेन्द्र जी चौधरी सभी का पुरुषार्थ अनुमोदनीय है। **गोटन** में तो अध्ययन को जीवन में उतरते देखा। गए तब छोटे-छोटे सुकोमल बच्चे बड़े उत्साह से भिक्षु दया कर रहे थे। श्री हंसराज जी चौपड़ा भिक्षु दया करने वाले बच्चों से विनति कर रहे थे कि हम भावना भा रहे हैं अवसर जरूर देखना। महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. की कृपा से तो गोटन धर्मनगरी दिखाई दे रहा था। मेड़ता में सरल, सौम्य श्री नीलेश जी मूथा, तातेड़ जी आदि युवा एवं श्री हस्तीमल जी डोसी के प्रयासों से सभी काम

सवाया था। वहाँ के शिक्षकों की जोड़ अद्भुत थी। बालक-बालिका भी उत्साह से सीख रहे थे। **नागौर** का काम श्री अजीत जी भण्डारी, शूरवीर जी सुराणा, कांकरिया जी, वकील सा के सत्प्रयासों से सदैव सुव्यवस्थित रहा है। पुण्यवान इस क्षेत्र के छोटे-छोटे बच्चे पच्चीस बोल को समझपूर्वक बोल रहे थे। एक-एक शिविरार्थी ने तो तीन-चार दिन में ही प्रतिक्रमण पूरा याद कर लिया था।

संघ हितैषी, दृढ़ गुरु भक्त श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल एवं महासचिव श्री मनोज जी कांकरिया बच्चों में उत्साह भरते रहे।

बाड़मेर में श्री दिनेश जी, मूलचन्द जी गोगड, कैलाशचन्द जी लोढ़ा, जितेन्द्र जी बाँठिया में अद्वितीय उत्साह था। 70 शिविरार्थी वहाँ पर थे।

'मेरे गुरु की कृपा से सब काम हो रहे है' स्तवन की कड़ी बार-बार गूंज रही थी। प्रयास सैंकड़ों हाथों ने किए, पर आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की पावन कृपा एवं आत्म साधक श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. एवं तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि सन्त-सती मण्डल की पावन छत्र-छाया से ही कार्य सम्पन्न होने जा रहा है। साथ ही आदरणीय पूज्य पिताश्री श्री विमलचन्द जी, अग्रज, तत्त्वों के जानकार श्री राजेन्द्र कुमार जी डागा के प्रोत्साहन एवं संरक्षण से कार्य सम्भव हो पाया। श्राविकारत्न श्रीमती मंजुला जी बम्ब, मंडल मंत्री श्री विरदराज जी सुराणा, निवर्तमान अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत एवं संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा का भी पूर्ण सहयोग रहा।

धन्यवाद उन सभी शिक्षिकों एवं उन कार्यकर्त्ताओं को जिन्होंने शिविर पूर्व घर-घर जाकर रजिस्ट्रेशन फार्म भराये। जयपुर में श्री सरदारसिंह जी बोथरा, श्री अशोक जी सेठ, युवा रत्न श्री रितुल जी पटवा, श्री प्रमोद जी हीरावत, मनोज जी जैन आदि ने शिविर सामग्री के संग्रहण एवं वितरण में विशेष योगदान दिया तो उधर अग्रज श्री राजेन्द्र जी डागा (हांगकांग), महेन्द्र जी संचेती, अरुण जी बम्ब, संजय कोठारी, लुणावत जी, शाह जी, हेमेश जी सेठ, सुनील जी जैन आदि सामग्री की गुणवत्ता में कहीं भी समझौता न हो इस हेतु जोर दे रहे थे।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् जिसके तत्त्वावधान में शिविर लगे, उसके अध्यक्ष श्रीमान् बुधमल जी बोहरा, महासचिव श्री मनोज जी काकंरिया एवं सभी सदस्यों को साधुवाद एवं श्री जैन रत्न युवक मंडल, हांगकांग को भी धन्यवाद, जिनके सहयोग से कार्य को प्रभावी बनाने में विशेष बल मिला है।

-संयोजक, शिविर समिति

रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम संवत् 2068, ईस्वी सन् 2011)

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा वि.सं. 2068 सन् 2011 हेतु साधु मर्यादानुसार घोषित चातुर्मासों का विवरण इस प्रकार है:-

(1) जोधपुर (राज.)

- 卐 परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.
- 卐 महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.
- 卐 सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.
- 卐 तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री सुभाषमुनि जी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री आशीषमुनि जी म.सा. ठाणा 11

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, सी-55, जैन बुक डिपो वाली गली, धर्मनारायण जी का हत्था, पावटा, जोधपुर (राज.) पूछताछ कार्यालय-फोनः 0291-6419979

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना,फोन-0291-2622327(नि.)94133-29762(मो.)
2. श्री मानेन्द्रजी ओस्तवाल, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर फोन- 0291-2755921, 94141-32521(मो.)
3. श्री भँवरलाल जी चौपड़ा-संयोजक चातुर्मास व्यवस्था, फोन- 0291-2510328 (नि.), 2647415 (का.), 94141-95311 (मो.)
4. श्री नरपतराज जी चौपड़ा, फोन- 0291-2545265 (नि.), 94604-22134
5. श्री महेन्द्र जी सुराणा, फोन- 0291-2546501, 93090-87760 (मो.)

आवागमन के साधन- जोधपुर राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है जो रेल, सड़क एवं हवाई मार्ग से देशभर से जुड़ा हुआ है। जोधपुर रेलवे स्टेशन से पावटा 2 किमी.एवं राईकाबाग बस स्टेण्ड व रेलवे स्टेशन से 1/2 किमी. दूर है।

(2) नागौर (राज.)

- परम श्रद्धेय उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.
- मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.
- श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनिजी म.सा.
- श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.
- श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, गणेश चौक, नागौर (राज.)

आवास-व्यवस्था- ओसवाल न्यात भवन, सिंघवियों की पोल के पास, नागौर

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री भँवरलालजी कांकरिया,फोन-01582-242643, 94142-16594 (मो.)
2. श्री सुरेन्द्र जी सुराणा, सदर बाजार, पो. नागौर-341001 (राज.) फोन-01582-240224, 94141-18342, 90018-64325 (मो.)

आवागमन के साधन- जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, मुम्बई, दिल्ली, कोलकाता, सूरत, अहमदाबाद, पंजाब, हैदराबाद से नागौर हेतु सीधी रेल सुविधा उपलब्ध है एवं मुख्य शहरों से बस सुविधा भी उपलब्ध है। बीकानेर जाने वाली सभी ट्रेनें नागौर स्टेशन होकर गुजरती हैं। रेलवे स्टेशन से डेढ़ किमी. एवं बस स्टेण्ड से 2 किमी. दूरी पर सामायिक-स्वाध्याय भवन है।

(3) जोधपुर (राज.)

- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.
- तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकँवरजी म.सा.
- व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.
- व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.
- महासती श्री शशिकलाजी म.सा.
- महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री समताजी म.सा.
- महासती श्री उषाजी म.सा.
- महासती श्री निरंजनाजी म.सा.
- महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री कांताजी म.सा. ठाणा 12

चातुर्मास स्थल- सिद्धान्तशाला, डी-123, धर्मनारायण जी का हत्था, पावटा, जोधपुर

सम्पर्क सूत्र एवं आवागमन के साधन- क्रमांक 1 के अनुसार

(4) मसूदा, जिला-अजमेर (राज.)

- 卐 सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवरजी म.सा.
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा.
- 卐 महासती श्री कौशल्याजी म.सा.
- 卐 महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल-श्री वर्द्धमान जैन स्थानक, सदर बाजार, मसूदा

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री गजराज जी नाहर, फोन-01462-266821, 94146-44821 (मो.)
2. श्री पारसमल जी गांग, मोहित जनरल स्टोर, बस स्टेण्ड, पो. मसूदा, जिला-अजमेर (राज.) फोन- 01462-266866, 94606-13593 (मो.)

आवागमन के साधन- ब्यावर से मसूदा 22 किमी., विजयनगर से 27 किमी. तथा अजमेर से 55 किमी. है। तीनों स्थानों से बस सुविधा उपलब्ध है।

(5) भोपाल (म.प्र.)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा.
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री पुष्पलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री स्नेहलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री मंजूलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री चैतन्यप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री मैत्रीप्रभाजी म.सा. ठाणा 9

चातुर्मास स्थल- श्री जैन स्थानक भवन, बी-88, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, कोहेफिजा, भोपाल (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री यशवन्त जी बाँठिया, फोन-0755-2544696, 94256-01656(मो.)
2. श्री विजयसिंह जी डागा, फोन- 0755-2547943, 98270-64565 (मो.)
3. श्री संजय जी नाहर, अंकुर अपार्टमेन्ट, बी-87, हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी,

कोहेफिजा, भोपाल-462001 (म.प्र.) फोन- 94244-10955 (मो.)

4. श्री अरविन्द जी चौरडिया, फोन-98935-65767 (मो.)

आवागमन के साधन- भोपाल मध्यप्रदेश की राजधानी है जो कि दिल्ली-चेन्नई रेल मार्ग पर स्थित है। इन्दौर से रोड़ द्वारा 190 किमी. है। मेन स्टेशन से लगभग 4 किमी. तथा बैरागढ़ स्टेशन से भी लगभग 4 किमी. दूरी पर कोहेफिजा स्थानक भवन है।

(6) पाली-मारवाड़ (राज.)

- **विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.**
- **महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा.**
- **महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा.**
- **महासती श्री रक्षिताजी म.सा.**
- **महासती श्री पूनमजी म.सा. ठाणा 5**

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट, पाली-306401 (राज.) फोन-02932-250021

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री रूपकुमारजी चौपड़ा, फोन-02932-220603/94141-22304
2. श्रीमान ताराचन्दजी सिंघवी, 7-गांधी कटला, पाली-306401 (राज.) फोन-02932-222005, 250021

आवागमन के साधन- पाली जिला मुख्यालय है। जयपुर, जोधपुर, अजमेर, कोटा, अहमदाबाद, सूरत आदि स्थानों से सीधी बस सेवा उपलब्ध हैं। यह जोधपुर अहमदाबाद रेलवे ट्रेक पर स्थित है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन एवं बस स्टेण्ड से ढाई किमी.दूरी पर स्थित है।

(7) जयपुर (राज.)

- **विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.**
- **महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा.**
- **महासती श्री शारदाजी म.सा.**
- **महासती श्री लीलाकंवरजी म.सा.**
- **महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ठाणा 5**

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, सी-314-ए, हरी मार्ग, जे.डी.ए. कॉलोनी, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री प्रमोद जी मेहनोत, फोन-0141-2523782, 96102-55999 (मो.)
2. श्री पूनमचन्दजी भण्डारी-एडवोकेट, बी-211, मालवीय नगर, जयपुर-302017

(राज.), फोन-0141-2524071,93145-66796

3. श्री प्रेमचन्द जी बाफना, फोन- 0141-2521532, 93145-02932 (मो.)
4. श्री संजीव जी कोठारी, फोन- 0141-2522397, 93149-65265 (मो.)

आवागमन के साधन - जैन स्थानक रेलवे स्टेशन जयपुर से करीब 11 किमी. दूर है। सिटी बस हरी मार्ग पर उतारती है, जहाँ से 300 मीटर पर स्थानक है। गाँधीनगर व दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन से करीब 4 किमी. है। सभी जगह से बस व ऑटोरिक्शा की सुविधा है। भारत के किसी भी क्षेत्र से जयपुर आने के लिए रेलवे, बस एवं हवाई मार्ग की सुविधा है। बस स्टेण्ड से भी 11 किमी. दूर है।

(8) पीपाड़शहर, जिला-जोधपुर (राज.)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा.
- 卐 सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा.
- 卐 महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री परागप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री ऋद्धिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास स्थल- श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत स्वाध्याय भवन, पीपाड़शहर-342601, जिला-जोधपुर (राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री छगनलाल जी मुथा, फोन-02930-233045, 94141-19341 (मो.)
2. श्री सुमतिचन्द जी मेहता, सदर बाजार, पो. पीपाड़ शहर-342601, जिला-जोधपुर (राज.), फोन- 02930-233069 (का.), 9414462729
3. श्री परेश जी मूथा, फोन-02930-233055, 94146-01639 (मो.)

आवागमन के साधन- जोधपुर जिलान्तर्गत पीपाड़शहर जोधपुर, मेड़तासिटी, अजमेर, जयपुर, बिलाड़ा, पाली, ब्यावर जैसे समीपवर्ती शहरों से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। जोधपुर से पीपाड़शहर के लिए हर आधे घंटे के अन्तराल पर रोडवेज एवं प्राइवेट बसें उपलब्ध रहती हैं।

(9) भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा
- 卐 महासती श्री प्रभावतीजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, पुराना उपासरा, पो.भोपालगढ़, जिला-जोधपुर

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री शिम्भूलालजी चोरडिया,फोन-02920-240250,94146-72678 (मो.)
2. श्री सोहनलाल जी बोथरा, जैन स्थानक के पास, पो. भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.), फोन- 02920-240190, 94146-01024 (मो.)

आवागमन के साधन- जोधपुर जिलान्तर्गत भोपालगढ़ जोधपुर, गोटन, पाली जैसे समीपवर्ती शहरों से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। जोधपुर से भोपालगढ़ के लिए हर आधे घंटे के अन्तराल पर रोडवेज एवं प्राइवेट बसें उपलब्ध रहती हैं।

(10) बजरिया-सवाईमाधोपुर (राज.)

- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा.
- महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा
- महासती श्री देवांगनाजी म.सा.
- महासती श्री अंजनाजी म.सा.
- महासती श्री तितिक्षाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, टोंक रोड़, बजरिया, सवाई-माधोपुर (राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री गणपतलालजी जैन, 51-जवाहर नगर, गुलाब बाग, बजरिया, सवाईमाधोपुर-322001 (राज.), फोन-07462-220916, 94603-17013, 94146-47076
2. श्री रूपनारायणजी जैन,फोन-07462-220075, 84322-17881, 94140-30634

आवागमन के साधन- जोधपुर, जयपुर, दिल्ली, मुम्बई आदि स्थानों से सवाई-माधोपुर रेल एवं सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। रेलवे स्टेशन से स्वाध्याय भवन स्थानक 200 मीटर की दूरी पर एवं रोडवेज बस स्टेण्ड से 100 मीटर की दूरी पर स्थित है।

(11) शूले वेपेरी-चेन्नई (तमिलनाडु)

- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.
- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.
- महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा
- महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा
- महासती श्री संगीताजी म.सा
- महासती श्री भावनाजी म.सा.

- 卐 महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा
- 卐 महासती श्री भविताश्रीजी म.सा
- 卐 महासती श्री प्रीतिश्रीजी म.सा
- 卐 महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. ठाणा 11

चातुर्मास स्थल- Sri Jain Ratna Hiteshi Shrawak Sangh, Marlecha Garden, No. 48, Hunters Road, Gopal Menon Street, Near Ayyappa Ground, Choolai, Chennai-112. Mob. 98410-89858, 98410-98930

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री झूमरलाल जी बाघमार, फोन-98410-98836
2. श्री महावीरचन्द जी भण्डारी, फोन-044-28592081, 98403-89000
3. श्री उगमचन्द जी कांकरिया, 156-Mint Street, Kanchan Plaza, Sowcarpet, Chennai-600079(T.N.) फोन-044-25369999, 25990507, 94443-51245 (मो.)
4. श्री किशोरकुमार जी डाकलिया, फोन-044-25292275, 094442-09233

आवागमन के साधन - चेन्नई पूरे भारतवर्ष से रेल, बस, हवाई सेवा से जुड़ा हुआ शहर है। चेन्नई सेन्ट्रल रेलवे स्टेशन से वेपेरी 2 किमी. एवं एग्मोर स्टेशन से डेढ़ किमी. है।

(12) इन्दौर (मध्यप्रदेश)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.
- 卐 महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री मतिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री दीपिकाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास स्थल- श्री वर्द्धमान जैन स्थानक, 15 माँ दुर्गानगर (जानकी नगर), इन्दौर-452001 (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री रतनचन्द जी सुराणा, फोन-0731-2400546, 2400636, 94259-10951 (मो.)
2. श्री जितेन्द्रजी चौपड़ा, फोन-0731-2402504, 2401801, 93021-27805 (मो.)
3. श्री कल्याणमल जी बाफना, 82-जानकी नगर, इन्दौर-452001 (म.प्र.) फोन-0731-4082829, 2400687, 98933-05224 (मो.)

आवागमन के साधन- इन्दौर मध्यप्रदेश का प्रमुख शहर है जो पूरे भारतवर्ष से रेल, बस, हवाई मार्ग से जुड़ा शहर है।

(13) गंगापुरसिटी, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री कोमलश्रीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक (महावीर भवन), चौक वाले बालाजी के पास, गंगापुर सिटी, जिला-सवाईमाधोपुर(राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री राजीवकुमारजी जैन, फोन-07463-232275, 94140-32058(मो.)
2. श्री रेवतीप्रसाद जी जैन, जैन एण्ड कम्पनी, अशोका सर्किल, पो. गंगापुर सिटी-322201, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.), फोन- 07463-230187, 94135-03959 (मो.)

आवागमन के साधन- गंगापुरसिटी रेलवे स्टेशन मुम्बई-दिल्ली मार्ग पर स्थित है। जहां कई गाड़ियों का ठहराव है। रेलवे स्टेशन से महावीर भवन के लिये टेम्पो-रिक्शा हर समय उपलब्ध रहता है। जयपुर से गंगापुर के लिए प्रतिघंटे बस सेवा उपलब्ध है। सवाईमाधोपुर से ट्रेन से 60 किमी.तथा श्री महावीर जी से 30 किमी. की दूरी है।

(14) नागौर (राज.)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री सुभद्राजी म.सा.
- 卐 महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री वर्षाश्रीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल- जैन उपासरा, सुराणों की बड़ी पोल, नागौर (राज.)

सम्पर्क सूत्र एवं आवागमन के साधन- क्रमांक 2 के अनुसार

(15) माण्डल, जिला-जलगांव (महा.)

- 卐 सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री यशप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, माण्डल, ता. अमलनेर, जिला-जलगाँव

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री भागचन्द जी जैन, पो. माण्डल, ता. अमलनेर, जिला-जलगाँव (महा.), फोन- 02587-248248, 96732-53108

आवागमन के साधन- माण्डल के नजदीक का रेलवे स्टेशन अमलनेर एवं बेटावद है। अमलनेर व धुलिया से बस सेवा उपलब्ध है।

(16) अजमेर (राज.)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास स्थल- स्थानक भवन, पार्श्वनाथ कॉलोनी, आंतेड़ रोड़, वैशाली नगर, अजमेर (राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री जीतमलजी कोठारी, फोन-0145-2425599, 94147-08603
2. श्री पारसमल जी चौरडिया, 39-पार्श्वनाथ कॉलोनी, आंतेड़ रोड, वैशाली नगर, अजमेर-305006 (राज.) फोन-0145-2425351, 99283-71671

आवागमन के साधन- अजमेर तक विभिन्न शहरों से नियमित बस-रेल सेवा उपलब्ध है। रेलवे स्टेशन से सिटी बस तथा बस स्टेण्ड से टेम्पो द्वारा मित्तल चेम्बर्स पर उतरकर स्थानक भवन पहुँचा जा सकता है।

14 जुलाई से चातुर्मास उपस्थित हो रहा है। इसमें अधिकाधिक साधना करें। यह आत्म-विकारों को दूर करने का सार्थक निमित्त बने। सन्त-सतियों का लाभ मिले तो अत्युत्तम, अन्यथा सामायिक और स्वाध्याय को अवश्य जीवन का अंग बनाएँ। *-सुमेरसिंह बोथरा, संघाध्यक्ष*

अन्य प्रमुख चातुर्मास

1. आचार्य श्री शिवमुनि जी म.सा.	-	दिल्ली
2. श्रद्धेय श्री उमेश मुनि जी म.सा.	-	ताल (मध्यप्रदेश)
3. आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.	-	चेन्नई
4. आचार्य श्री विजयराज जी म.सा.	-	किलपाक, चेन्नई
5. गच्छाधिपति श्री प्रकाशमुनि जी म.सा.	-	भीलवाड़ा
6. आचार्य श्री महाश्रमण जी म.सा.	-	केलवा
7. आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा.	-	शाहीबाग, अहमदाबाद
8. आचार्य श्री ज्ञानमुनि जी म.सा.	-	जलगाँव

समाचार-विविधा

संयुक्त साधारण सभा का आयोजन सूर्यनगरी-जोधपुर में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा की बैठक सूर्यनगरी-जोधपुर में दिनाँक 17 एवं 18 सितम्बर, 2011 को रखी गई है।

संघ सदस्यों से विनम्र अनुरोध है कि आप संघहित में कोई सुझाव रखना चाहें तो अपने सुझाव लिखित में संघ के प्रधान कार्यालय को 30 अगस्त, 2011 तक भेजने की कृपा करें। संघहित में उपयोगी सुझावों पर यथोचित विचार-विमर्श करने का हमारा प्रयास रहेगा। साधारण सभा में भाग लेने हेतु आप अपने आसपास के क्षेत्रों के सभी सदस्यों को सूचित करावें। आपके जोधपुर पधारने की पूर्व सूचना निम्नांकित सम्पर्क सूत्र पर करें-अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन- 0291-2636763/ 2641445, टेलीफैक्स-0291-2636763

- पूरणराज अबानी, महामंत्री

संघ द्वारा विभिन्न श्रेणियों में सम्मानार्थ प्रविष्टियाँ आमंत्रित

आचार्य श्री हस्ती-स्मृति सम्मान- जैन आगम, जैन दर्शन व जैन जीवन पद्धति के क्षेत्र में लेखन, शोध व जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान पर।

युवा प्रतिभा-शोध-साधना-सेवा सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)-

1. **प्रशासनिक चयन-** राज्य एवं केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन पर।
2. **प्रोफेशनल विशिष्ट-** डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउन्टेण्ट, कम्पनी सचिव, व अन्य प्रोफेशनल कोर्स में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।
3. **शोध-** वैज्ञानिक खोज (अंहिसा व जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली) हेतु।
4. **संघ सेवा-** चतुर्विध संघ-सेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक-लेखन आदि के आधार पर।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (एक श्राविका, एक युवा, एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)–

कम से कम 10 वर्ष स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधन) के रूप में सक्रिय सेवा देने पर। (युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष की छूट दी जा सकेगी।)

गुणी–अभिनन्दन–

1. **तपस्या–** कम से कम पाँच वर्ष तक एकान्तर, दीर्घ तपस्या, दीर्घ संवर-साधना या अन्य विशिष्ट तप।
2. **अन्य–** सेवा, साधना, संघ-उन्नयन में योगदान, चतुर्विध संघ-सेवा, विद्वान।

नोटः– उक्त सम्मान हेतु अपनी प्रविष्टियाँ 15 अगस्त, 2011 तक संघ कार्यालय के इस पते पर भिजवाएँ। **–पूरणराज अबानी–महामंत्री,** *अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोनः- 0291-2636763,2641445*

संघ की कार्यकारिणी बैठक 14 अगस्त को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की कार्यकारिणी की बैठक रविवार दिनांक 14 अगस्त, 2011 को रात्रि 8 बजे सूर्यनगरी-जोधपुर में रखी गई है। कार्यकारिणी सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य पधारें। बैठक में पधारने पर आपको परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 11 तथा साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि संत-सतीमण्डल के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का भी लाभ प्राप्त होगा।

आचार्य हस्ती भजन एवं भाषण की समापक प्रतियोगिता जोधपुर में सम्पन्न

आचार्य हस्ती अध्यात्म चेतना वर्ष के अन्तर्गत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के द्वारा भजन एवं भाषण प्रतियोगिताओं की अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर समापक प्रतियोगिता का आयोजन जोधपुर शहर के वर्धमान भवन, पावटा में 11 जून 2011 को उमंग एवं उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहेः- **(1) भजन प्रतियोगता- किशोर वर्ग में प्रथम स्थान–**संजना झामड़, जयपुर ने प्राप्त किया। **युवा वर्ग में–** निशा मेहता, जयपुर ने **प्रथम स्थान**

तथा भाविनी बियानी कोलकाता ने **द्वितीय स्थान** प्राप्त किया। **(2) भाषण प्रतियोगिता–** किशोर वर्ग में पीपाड़ के नमन मेहता प्रथम रहे तथा जयपुर की श्रीमती डिम्पल जैन द्वितीय स्थान पर रही। प्रथम स्थानप्राप्तकर्ताओं को 11000 रु. की राशि से तथा द्वितीय स्थान प्राप्तकर्ता को 7,000 की राशि एवं प्रतीक चिह्न से सम्मानित किया गया।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता के विशिष्ट अतिथि श्री नरपतमल लोढ़ा, पूर्व एडवोकेट जनरल ने कहा कि जैन बन्धुओं का आचरण एवं जीवन भी बोलना चाहिए तथा उनके आचरण से लगना चाहिए कि वे आचार्य हस्ती को अपना गुरु मानते हैं। श्री लोढ़ा साहब ने अपनी ओर से प्रत्येक प्रतियोगी को 500 रुपये की राशि प्रदान की। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराज जी चौधरी, दिल्ली ने आचार्य हस्ती के जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला तथा अतिथियों एवं समागतों का स्वागत किया। मंच को स्थानीय संघ अध्यक्ष श्री प्रसन्नचन्द बाफना, मण्डल उपाध्यक्ष श्री प्रेमचन्द जी जैन, युवक मण्डल महासचिव श्री मनोज जी कांकरिया आदि ने सुशोभित किया। श्रीमती सुशीला बोहरा, डॉ. धर्मचन्द जैन, धर्मचन्द जैन ने भाषण प्रतियोगिता के तथा श्री नवरतन डागा, श्री सुमतिचन्द मेहता, एवं श्रीमती मीता मुल्तानी ने भजन प्रतियोगिता के निर्णायक की भूमिका निभायी। संचालन दिलीप जैन ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री विरदराज जी सुराणा ने किया। उल्लेखनीय है कि इन प्रतियोगिताओं का आयोजन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई के सौजन्य से किया गया। प्रतियोगिता के माध्यम से आचार्य हस्ती के संदेश देश-विदेश के लोगों के जेहन में गूंज उठे।

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा 31 जुलाई को

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा आगामी परीक्षा 31 जुलाई को कक्षा 1 से 12 तक के लिए आयोजित की जा रही है। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार नकद राशि में निम्नानुसार प्रदान किये जायेंगे।

कक्षा	अंक/प्रमाण पत्र	अंक/पुरस्कार	अंक पुरस्कार
1 से 4	50-59.75 अंक	60-85 अंक	85 से अधिक अंक
	पुरस्कार नहीं केवल प्रमाण पत्र	100/-	150/-

5 से 8	पुरस्कार नहीं केवल प्रमाण पत्र	150/-	200/-
9 से 12	पुरस्कार नहीं केवल प्रमाण पत्र	200/-	250/-

वरीयता सूची में स्थान पाने वालों का पुरस्कार निम्नानुसार रहेगा-

कक्षा	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1 से 4	2000/-	1500/-	1000/-
5 से 8	2500/-	2000/-	1500/-
9 से 12	4000/-	3000/-	2000/-

जैनागम स्तोक वारिधि पाठ्यक्रम की परीक्षा 15 जनवरी को

जैनागम स्तोक वारिधि पाठ्यक्रम (पंचवर्षीय) के प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम की परीक्षा 15 जनवरी, 2012 रविवार को आयोजित की जायेगी, जिसमें-
प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में निम्नांकित 10 थोकड़े रहेंगे-

(1) प्रथम प्रश्न-पत्र में (पाँच)- 1. 25 बोल, 2. 67 बोल, 3. सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण, 4. संज्ञा, 5. सवणेनाणे का थोकड़ा।

(2) द्वितीय प्रश्न-पत्र में (पाँच)- 1. कर्म प्रकृति, 2. गति आगति, 3. चौदह गुणस्थान का बासठिया, 4. रूपी- अरूपी, 5. उपयोग का थोकड़ा।

प्रथम प्रश्न-पत्र की परीक्षा15 जनवरी 2012 को प्रातः 10 से 12 बजे तक तथा द्वितीय प्रश्न-पत्र की परीक्षा 2.30 बजे से 4.30 बजे तक होगी।

-सुशीला बोहरा, संयोजक

मेवाड़ एवं मध्यप्रदेश क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार-यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक 23 से 26 जून 2011 तक मेवाड़ एवं मध्यप्रदेश क्षेत्र के भीलवाड़ा, सहाड़ा, जूणदा, खांखला, पहुना, छोटा भटवाड़ा, सुरपुर, भादसोड़ा, सांवरिया जी, डूंगला, बोहेडा, नवाणिया, नीमच सिटी, बेंगू, सिंगोली, पारसोली, प्रतापगढ़ आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रचार कार्यक्रम में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं परामर्शदाता शाखा मेवाड़ श्री फूलचन्द जी मेहता-उदयपुर, मेवाड़ क्षेत्र संयोजक श्री कन्हैयालाल जी जैन-भीलवाड़ा, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी

श्रावक संघ के कार्यालय प्रभारी श्री प्रकाश जी सालेचा-जोधपुर, स्वाध्याय संघ कार्यालय सहायक श्री धीरज जी डोसी-जोधपुर की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम के दौरान शिक्षण बोर्ड के नये केन्द्रों की स्थापना की गई, आगामी परीक्षा हेतु 36 आवेदन पत्र भरवाये गये, 7 नये स्वाध्यायी बनाये गये, पुराने स्वाध्यायियों की इस वर्ष सेवा देने हेतु स्वीकृति प्राप्त की गई एवं बोर्ड के पूर्व संचालित केन्द्रों की समीक्षा की गई। संस्कार केन्द्र के अन्तर्गत चलने वाली आध्यात्मिक पाठशालाओं की समीक्षा की गयी तथा नई पाठशालाएं भी प्रारम्भ की गई। पर्युषण में स्वाध्यायी आमंत्रित करने हेतु प्रेरणा की गयी। जिनवाणी के सदस्य भी बनाये गये। सभी स्थानों पर स्थानक में आकर सामूहिक प्रार्थना एवं स्वाध्याय करने की प्रभावी प्रेरणा करने के साथ ही अधिकांश स्थानों पर इस हेतु प्रत्याख्यान भी करवाए गए।

युवाशक्ति ऊर्ध्वारोहण एवं केन्द्रीय कार्यकारिणी की 50वीं की बैठक सम्पन्न

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र म.सा. की पावन प्रेरणा से अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा युवारत्नों का परिवार संस्कार शिविर एवं ''युवा शक्ति ऊर्ध्वारोहण'' "The Power of Youth" कार्यक्रम चेन्नई तथा कोडैकनाल (तमिलनाडु) में दिनांक 23 से 26 जून 2011 तक आयोजित किया गया। साथ ही चेन्नई में ही युवक परिषद् की केन्द्रीय कार्यकारिणी की 50वीं बैठक भी दिनांक 25 जून 2011 को सम्पन्न हुई।

23 व 24 जून को कोडैकनाल में ''युवा शक्ति ऊर्ध्वारोहण'' कार्यक्रम आयोजित किया गया। कोडैकनाल में 23 जून को सर्वप्रथम सामूहिक सामायिक के माध्यम से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा ने विभिन्न क्षेत्रों से पधारे हुए केन्द्रीय एवं शाखा के पदाधिकारियों का स्वागत किया एवं आपसी परिचय कराया। विशिष्ट अतिथि के रुप में श्रीमान कैलाशमल जी दुग्गड़ का सान्निध्य प्राप्त हुआ। आपने युवारत्नों को स्वयं एवं संघ के विकास की दिशा में पाँच सूत्रों यथा- चारित्र, विनम्रता, मेहनत, संकल्प व अनुशासन की पालना करने की प्रेरणा की। युवक परिषद् के संयोजक श्री राजेन्द्र जी लूंकड़ ने युवारत्नों को व्यावहारिक दृष्टिकोण से पारिवारिक समस्याओं से रु-ब-

रु कराते हुए सरल शब्दों में समाधान बताया तथा धर्म एवं रत्नसंघ की महत्ता प्रतिपादित की। दिनांक 24 जून को इसी अनुक्रम में कार्यक्रम आयोजित हुआ।

दिनांक 25 व 26 जून को रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्यश्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के सान्निध्य में धार्मिक शिविर के अन्तर्गत कक्षाओं के माध्यम से युवारत्नों ने ज्ञानार्जन किया। शिविर में महासती मंडल की युवारत्नों पर विशेष अनुकम्पा रही। महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. ने तीन लाख की तीन बातों के अन्तर्गत ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना पर बल दिया। महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. ने युवारत्नों को पाप से बचने की प्रेरणा की। महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. ने प्रेरणा स्वरूप एक आह्वान किया–"संघ मुझे आवाज लगाए, तो मैं सोता नहीं रहूँगा"। सामूहिक प्रत्याख्यान के रूप में सप्ताह में कम-से-कम एक सामायिक स्थानक में करना, पक्खी पर्व मनाने का संकल्प, वर्ष में एक आगम का स्वाध्याय, 15 कर्मादान का नया कार्य नहीं करना तथा कम-से-कम तीन दिन गुरुभगवन्तों की सेवा में रहने का संकल्प युवारत्नों ने धारण किया। 25 जून को सायं 6.30 बजे से युवक परिषद् की केन्द्रीय कार्यकारिणी की 50वीं बैठक आयोजित हुई, जिसमें बैठक के एजेण्डा बिन्दुओं पर सामूहिक रूप से विचार विमर्श हुआ। आगामी आमसभा की तैयारियों के सम्बन्ध में चिंतन-मनन किया गया। बैठक में विचार विमर्श के दौरान सुझाव भी प्राप्त हुए एवं सामूहिक रूप से निर्णय भी लिये गये। बैठक में श्रीमान् गौतमचन्द जी हुण्डीवाल (कार्याध्यक्ष, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ), श्रीमान् पी.एस.सुराणा (अध्यक्ष, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल) श्रीमान् गौतमराज जी सुराणा (क्षेत्रीयप्रधान, तमिलनाडु क्षेत्र), श्रीमान् कैलाशमल जी दुग्गड़ (उपाध्यक्ष,अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ), श्रीमान् उगमचन्द जी कांकरिया (मंत्री,चैन्नई श्रावक संघ), श्रीमान् महावीरचन्द जी भण्डारी, चेन्नई, युवक परिषद् के पूर्व निदेशक श्री अशोकजी कवाड़, चेन्नई आदि का भी अमूल्य मार्गदर्शन एवं सहज सान्निध्य युवारत्नों को प्राप्त हुआ।

उक्त कार्यक्रम एवं बैठक में युवक परिषद् के निदेशक श्री सुमतिचन्दजी मेहता, परामर्शदाता श्री सुन्दरलालजी सालेचा, अध्यक्ष श्री बुद्धमलजी बोहरा, महासचिव श्री मनोजजी कांकरिया, संयोजक श्री राजेन्द्रजी लूंकड़, क्षेत्रीय प्रधान श्री दिनेशजी सुराणा, रविन्द्रजी जैन, राकेशजी जैन तथा विभिन्न स्थानों के शाखाप्रमुख एवं सदस्यगण ने भाग लिया। युवाशक्ति ऊर्ध्वारोहण कार्यक्रम एवं

कार्यकारिणी बैठक आयोजन की सुन्दर व्यवस्था एवं आवास, प्रवास, नाश्ता, भोजन आदि की सभी व्यवस्थाओं के प्रति अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् की ओर से श्री जैन रत्न युवक परिषद् चेन्नई शाखा के शाखाप्रमुख श्री बी.सुरेशजी चोरडिया सहित उनकी पूरी टीम का तथा कार्यकारिणी के क्षेत्रीय प्रधान श्री दिनेशजी सुराणा, सदस्य श्री विमलचन्दजी बोहरा व अरुणजी बाघमार चेन्नई का विशेष आभार परिषद् के निदेशक श्री सुमतिचन्दजी मेहता, पीपाड़ तथा महासचिव श्री मनोजजी कांकरिया, जोधपुर द्वारा प्रकट किया गया।

शिविर-समाचार

केन्द्रिय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर जुलाई में

स्वाध्यायियों के सर्वाङ्गीण विकास को लक्ष्य में रखकर श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा समय-समय पर स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं। इस वर्ष भी 24 से 30 जुलाई 2011 तक 'सप्त दिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर' आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। अतः समस्त स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि वे इस शिविर में भाग लेकर अपने ज्ञान में वृद्धि करें। इस शिविर में निम्नांकित योग्यता में से एक योग्यता प्राप्त स्वाध्यायी भाग ले सकेंगे-1. श्री स्थानक जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के स्वाध्यायी हो एवं पर्युषण सेवा देते हों। 2. अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की पंचम परीक्षा उत्तीर्ण हों। 3. सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल कण्ठस्थ हो। शिविर हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्रातिशीघ्र स्वाध्याय संघ कार्यालय में भिजवाने का श्रम करावें। सम्पर्क-*श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 0291-2624891, मो. 9414267824*

जोधपुर में आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृति धार्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत धार्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 11 से 14 जून, 2011 को जैन स्कूल, महामन्दिर, जोधपुर में सम्पन्न हुआ। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा.,श्री महेन्द्रमुनिजी.म.सा. आदि ठाणा का पावन सान्निध्य शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर, मुनिमण्डल का विशेष मार्गदर्शन एवं उद्बोधन प्राप्त कर विभिन्न प्रत्याख्यान किए।

इस शिविर में सवाईमाधोपुर, चौथ का बरवाड़ा, अलीगढ (रामपुरा), खेरली, हिण्डौन, गंगापुरसिटी, भरतपुर, अलवर, कोटा, जयपुर, पीपाड़,

भोपालगढ़, नागौर, जोधपुर, धुलिया आदि स्थानों से 160 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। योग्यता के आधार पर कक्षा द्वितीय से ग्यारहवीं तक दस कक्षाओं में वर्गीकरण कर शिविरार्थियों को सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, देव-गुरु-धर्म का स्वरूप, 10 पच्चक्खाण, 12 व्रत, 14 नियम, कर्म प्रकृति आदि विषयों का अध्ययन करवाया गया। शिविर में विशेष रूप से ज्ञानार्जन के साथ क्रियात्मक पक्ष जैसे शुद्ध सामायिक, दया, संवर, प्रतिक्रमण, उपवास, प्रत्याख्यान आदि क्रियाओं पर विशेष बल रहा। शिविर के दौरान लगभग 60 शिविरार्थियों ने नवीन स्वाध्यायी के रूप में अपनी सेवा प्रदान करने के उद्देश्य से स्वाध्याय संघ के फार्म भरे तथा आगामी पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी के रुप में अपनी सेवा देने का संकल्प व्यक्त किया। शिविर में प्रशिक्षक के रूप में श्री सुन्दरलालजी सालेचा-जोधपुर, श्री धर्मचन्दजी जैन-जोधपुर, श्रीमती मोहनकंवरजी जैन-जोधपुर, श्रीमती उर्मिलाजी जैन जोधपुर, सौ. अनिताजी दुग्गड़-धुलिया, श्री इन्द्रप्रसादजी जैन-जोधपुर, श्री त्रिलोकचन्दजी जैन-जयपुर, श्री दिलीपजी जैन-जयपुर, श्री मनीषजी जैन, चेन्नई, श्री अंकितजी जैन सवाईमाधोपुर, श्री कमलेशजी मेहता-जोधपुर की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। छात्रवृत्ति प्राप्त सभी शिविरार्थियों ने श्रद्धेय आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किये। शिविर अवधि के दौरान विशिष्ट वक्ताओं को आमन्त्रित कर उनके ज्ञान, चिन्तन एवं अनुभवों से सभी शिविरार्थियों को लाभान्वित कराया गया। प्रमुख वक्ता के रूप में श्री चंचलमलजी चोरडिया, जोधपुर की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। अध्यापन के समय श्री मनोजजी कांकरिया-महासचिव अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा पर्यवेक्षक का कार्य बहुत ही अच्छे ढंग से सम्पादित किया गया। शिविर में स्थानीय श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना, मन्त्री श्री मानेन्द्रजी ओस्तवाल-जोधपुर, स्थानीय श्राविका मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती सुनिताजी मेहता, स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री नवरतनजी डागा-जोधपुर, सचिव श्री राजेशजी भण्डारी, आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के सचिव श्री सुभाषजी हुण्डीवाल आदि महानुभावों ने पाक्षिक प्रतिक्रमण, नियमित रूप से एक माला नवकार महामन्त्र की जपने, पारिवारिक प्रार्थना प्रतिदिन करने, पर्युषण दिवसों में स्वाध्यायी-सेवा देने तथा गुरु दर्शन करने की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान किया।

शिविर के समापन समारोह में शिविरार्थियों ने शिविर दौरान अर्जित ज्ञान एवं अपने अनुभवों से अवगत कराया। शिविर की रिपोर्ट संयोजक श्री सुन्दरलालजी सालेचा-जोधपुर द्वारा प्रस्तुत की गई। शिविर के दौरान आयोजित

परीक्षा, भजन तथा भाषण प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त छात्र-छात्राओं को विशेष आमन्त्रित महानुभावों के द्वारा पुरस्कार प्रदान कर उत्साहवर्द्धन किया गया।श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जोधपुर, श्री जैन रत्न युवक परिषद् जोधपुर, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल जोधपुर के सभी कार्यकर्त्ताओं ने उत्साह से अतिथि सेवा का लाभ लिया। इस शिविर आयोजन में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी महानुभावों का अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् ने हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया। *- मनोज कांकरिया, महासचिव*

जयपुर में 10 स्थानों पर ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

श्री जैन रत्न युवक परिषद् जयपुर के तत्त्वावधान में जयपुर शहर के मालवीय नगर, महावीर नगर, जवाहरनगर, श्यामनगर, नित्यानन्द नगर, तिलकनगर, विद्याधर नगर, लालकोठी, मानसरोवर इन 9 केन्द्रों पर 15 मई से 5 जून 2011 तक 21 दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। सांगानेरी गेट स्थित सुबोध स्कूल में यह शिविर 8 मई से प्रारम्भ कर दिया गया। इस शिविर में 800 से अधिक 3 से 21 वर्ष की वय वाले बच्चों ने भाग लिया। बच्चों को धार्मिक शिक्षण के साथ नैतिक मूल्यों की भी शिक्षा दी गई। प्रतिक्रमण पूर्ण करने वाले शिविरार्थियों को अष्टमी, चतुर्दशी, पक्खी आदि पर्वों पर विधि सहित धर्म स्थानक में जाकर प्रतिक्रमण करने की प्रेरणा दी गई। 22 मई को भजन प्रतियोगिता और 29 मई को भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कनिष्ठ, मध्यम और वरिष्ठ वर्ग में ये प्रतियोगिताएँ सम्पादित हुईं। परिषद् के सदस्यों के सहयोग से शिविर सफल रूप से संचालित किये गए।

- देवेन्द्र सेठ, शिविर संयोजक

जोधपुर में युवक परिषद् द्वारा 9 क्षेत्रों में धार्मिक एवं नैतिक शिविर सम्पन्न

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा विगत 17 वर्षो से धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर आयोजित कर बच्चों में जैन धर्म की जानकारी के साथ ही संस्कारों की शिक्षा भी अनवरत रूप से प्रदान की जा रही है। इस वर्ष यह शिविर 20 मई से 05 जून तक आयोजित किया गया। शिविर के प्रारम्भ से ही बच्चों में धर्म के प्रति अपूर्व उत्साह दिखा। जोधपुर शहर के सभी क्षेत्रों के बालक-बालिकाओं को शिविर का लाभ मिल सके, अत: 9 क्षेत्रों में शिविर केन्द्र बनाये गए- घोड़ों का चौक, सिंहपोल, नेहरू पार्क, प्रतापनगर, हाउसिंग बोर्ड, गुलाब नगर, सरस्वती

नगर, पावटा और लक्ष्मीनगर। इन केन्द्रों पर शिविर हेतु संयोजक भी नियुक्त किए गए। बच्चों की संख्या लगभग 1000 तक पहुंच गई। सभी बच्चों को कक्षाओं में वर्गीकृत कर अनुभवी 100 अध्यापकों द्वारा श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की 1 से 7 तक की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम के आधार पर नियमित दो कालांशों में प्रातः 7.15 से 9.30 बजे तक अध्ययन करवाया गया। 3 जून को सभी बच्चों द्वारा सीखे गये ज्ञान के मूल्यांकन हेतु परीक्षा आयोजित हुई। 520 शिविरार्थियों ने परीक्षा दी तथा उनमें से 429 शिविरार्थी उत्तीर्ण हुए। शिविर का संयोजन सभी केन्द्रों के शिविर संयोजकों, सह संयोजकों, अध्यापकों एवं कार्यकर्ताओं के सक्रिय सहयोग से सफलतापूर्वक हुआ।

शिविर का समापन कार्यक्रम 5 जून को रतनलाल सी बाफना सामायिक-स्वाध्याय भवन, गली नं. 6, शक्तिनगर में आयोजित हुआ। समापन समारोह में परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने महती कृपा कर तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा एवं महासती श्री शांता जी म.सा. आदि ठाणा को विशेष प्रेरणा हेतु भेजा। सभी केन्द्रों से शिविरार्थी प्रातः 07.30 बजे ही समारोह स्थल पर पहुंच गये। महासती श्री शांता जी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. एवं तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने बच्चों को अपनी मधुर वाणी में प्रेरणा फरमायी। प्रवचन के पश्चात् 9 बजे समापन समारोह कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, जिसमें शिविर संयोजक श्री नवरतन जी डागा ने शिविर रिपोर्ट प्रस्तुत की। युवक परिषद् अध्यक्ष श्री मनीष जी लोढ़ा ने सभी अतिथियों एवं महानुभावों का शाब्दिक स्वागत किया। सभी पधारे हुए अतिथियों का माल्यार्पण एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया गया। अतिथियों के साथ ही शिविर में अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान करने वाले सभी केन्द्र के शिविर संयोजकों एवं कार्यकर्ताओं का भी माल्यार्पण कर सम्मान किया गया। स्वागत कार्यक्रम के पश्चात् 15 दिन के इस शिविर में बच्चों ने क्या ज्ञानार्जन किया, इसकी झलक प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न केन्द्रों के छोटे-बड़े बच्चों ने सामायिक, प्रतिक्रमण के पाठ, 25 बोल में से बोल, भजन, भाषण एवं नाटिकाओं के द्वारा अपनी योग्यता प्रदर्शित की। सभी आगन्तुक अतिथियों एवं महानुभावों ने बच्चों के कार्यक्रमों को सराहा। सभी कक्षाओं में वरीयता प्राप्त शिविरार्थियों को अतिथियों ने पुरस्कृत किया। विशिष्ट अतिथि श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, मुख्य अतिथि श्री राजेशचन्द जी लुणावत, सम्माननीय अतिथि श्री मुन्नालाल जी भण्डारी तथा स्थानीय संघ अध्यक्ष श्रीमान् प्रसन्नचन्द जी बाफना ने बच्चों को आशीर्वचन प्रदान किए। अंत में

युवक परिषद् शाखा सचिव श्री गजेन्द्र जी चौपड़ा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सोजत में शिविर सम्पन्न

सोजत में 17 से 20 जून 2011 तक बालक, बालिकाओं और महिलाओं का ग्रीष्मकालीन आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में 48 बालक/बालिकाओं और 12 महिलाओं ने पूर्ण रुचि और उत्साह से भाग लिया। बच्चों को तीन कक्षाओं में तथा महिलाओं को दो कक्षाओं में विभाजित कर शिक्षण कार्य करवाया गया। श्रीमती मोहनकौर जैन एवं श्रीमती अकलकंवर मोदी जोधपुर, श्री मोहनलाल जी पोकरणा एवं श्री शिवदयाल जी शर्मा ने शिक्षण कार्य किया। सुश्रावक श्री कुशाल जी गून्देचा ने पूर्ण उत्साह एवं उमंग के साथ तन, मन और धन से सहयोग किया। शिविर का संचालन श्रीमती मोहनकौर जैन, जोधपुर ने किया। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के 47 आवेदन पत्र भरवाये गये।

'युवा पीढ़ी धर्म से विमुख क्यों' निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

बैंगलोर- मोक्षद्वार ज्ञान पत्रिका, बैंगलोर द्वारा आयोजित 'आज की युवा पीढ़ी धर्म से विमुख क्यों? कारण और निवारण' विषयक अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम निबन्ध आयोजन समिति व निर्णायक समिति के तत्त्वावधान में घोषित किया गया। परिणाम इस प्रकार है- **प्रथम-** अंकिता माण्डोत-उदयपुर, **द्वितीय-** नवीन बैद-बीकानेर, **तृतीय-**मीनाक्षी जैन-नागौर। पूर्व घोषित चार प्रोत्साहन पुरस्कार के स्थान पर निर्णायक मण्डल ने छः प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान करने का निर्णय लिया है-1. पवन जैन-ब्यावर, 2. कमलेश जैन-बड़ोदरा, 3. श्वेता सुराना-चित्तौड़गढ़, 4. लक्ष्मीचन्द छाजेड़-समदड़ी, 5. अरुणा पोखरणा-भीलवाड़ा एवं 6. निशिता जैन-रत्नागिरी।

चौदहवां महावीर पुरस्कार-घोषित

भगवान महावीर फाउण्डेशन द्वारा निःस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले व्यक्ति या संस्थाओं को प्रोत्साहन हेतु प्रति वर्ष चार पुरस्कार निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रदान किए जाते हैं- 1. अहिंसा व शाकाहार, 2. शिक्षा, 3. चिकित्सा तथा 4. सामाजिक उत्थान व सेवा। अब तक 35 पुरस्कार प्रदान किए जा चुके हैं। इस वर्ष पुरस्कार की संख्या तीन से बढ़ाकर चार कर दी गई है एवं पुरस्कार राशि भी रुपये 5 लाख से बढ़ा कर 10 लाख रुपये की जा चुकी है। चयन समिति द्वारा घोषित

पुरस्कार इस प्रकार हैं-

1. **अहिंसा व शाकाहार के क्षेत्र में-** श्री दयानन्द स्वामीजी, बैंगलोर (कर्नाटक)
2. **शिक्षा के क्षेत्र में-** दी इण्डियन प्लेनेटरी सोसायटी, मुम्बई (महा.)
3. **चिकित्सा के क्षेत्र में-** वॉलेन्टरी हेल्थ सर्विसेस्, चेन्नई (तमिलनाडु)
4. **सामाजिक उत्थान व विकास के क्षेत्र में-** स्नेहालया सोशियल चेरिटेबल ट्रस्ट, सोलापुर (महा.)

संक्षिप्त-समाचार

जलगाँव- श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं श्री महावीर जैन युवा संघ, जलगाँव ने एम.आई.डी.सी. के जैन भवन एवं निकटवर्ती क्षेत्र का 'हस्ती-हीरा नगर' के नाम से शिलान्यास एवं नामकरण कार्यक्रम आयोजित किया। समारोह में संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत, समाज चिन्तामणि श्री सुरेशदादा जैन, सांसद श्री ईश्वरबाबू जी ललवाणी, संक्ष संरक्षक श्री रतनलाल जी बाफना, संघाध्यक्ष श्री दलीचन्द जी चोरडिया, श्रावकरत्न श्री पारसमल जी चोरडिया-उज्जैन आदि के सान्निध्य में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री महावीर जी बोथरा द्वारा सभी अतिथियों का आभार प्रदर्शित किया गया।

पीपाड़- श्री जयमल सम्प्रदाय के आचार्य श्री शुभचन्द्र जी म.के आज्ञानुवर्ती श्रद्धेय श्री गुणवन्त मुनि ज़ी म.सा. के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु खूशबू मुथा की भागवती दीक्षा 5 जून, 2011 को सम्पन्न हुई। इस अवसर पर पाँच श्रावकों ने शीलव्रत के नियम ग्रहण किए।

जयपुर- श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद् सत्र 2011-12 से "महावीर कॉलेज ऑफ कामर्स" प्रारम्भ करने जा रही है। यह कॉलेज राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध पूर्णतया अंग्रेजी मीडियम को-एजूकेशनल कॉलेज होगा, जिसमें जुलाई 2011 से बी.कॉम एवं बी.बी.ए. प्रथम वर्ष की कक्षाएँ प्रारम्भ की जायेंगी। -डॉ. बी.सी. जैन, 094147-69937

राणावास- शैक्षणिक, आध्यात्मिक, नैतिक, सदाचारी छात्र तैयार करने के उद्देश्य से संचालित श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन छात्रावास-राणावास (पाली) में 25 जून से प्रवेश प्रारम्भ हो गए है। कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थियों को प्रवेश दिलाकर उनका भविष्य उज्ज्वल बनाया जा सकता है। सम्पर्क सूत्र- श्री शांतिलाल जी पटवा, फोन- 02935-237423

चेन्नई- आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. के सान्निध्य में चार स्वाध्याय संघों का संयुक्त स्वाध्यायी एवं शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर 5 से 7 अगस्त 2011 को आयोजित किया जाएगा, जिसमें श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, कर्नाटक, श्री दक्षिण भारत जैन स्वाध्याय संघ, तमिलनाडू, आन्ध्रा जैन स्वाध्याय संघ, आन्ध्रप्रदेश एवं श्री साधुमार्गी शान्त क्रान्ति जैन स्वाध्याय परिषद् के प्रबुद्ध स्वाध्यायी भाग लेंगे। स्वाध्यायियों को आचार्य भगवंत एवं संत-सतीवर्ग से अलग-अलग विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

नई दिल्ली- ज्ञानोदय चेरिटेबल सोसायटी, नई दिल्ली जैन बच्चों के लिये सैकेण्डरी स्कूल तक शिक्षा जारी रखने हेतु आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान करती है। सहायता के लिये अपना आवेदन पूरे विवरण से निम्न पते पर भेजें:- GP. Capt. V. K. Jain (Retd.), Gyanoday Charitable Society, 572, Asiad Village, New Delhi-110049, Ph. 011-26493538, 26492386

नई दिल्ली- दिगम्बर जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के द्वारा लिखित लोकविश्रुत हिन्दी महाकाव्य 'मूकमाटी' के अँग्रेजी रूपान्तरण 'The Silent earth' का लोकार्पण राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में समारोह पूर्वक राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। मूकमाटी के मराठी एवं बांग्ला अनुवाद भी हो चुके हैं।

झारखंड- डायबिटीज एक जटिल रोग है लेकिन इसको जड़ से समाप्त करने के लिये वर्षों के अध्ययनरत और हजारों रोगियों पर परीक्षण करने के पश्चात् एक योग (नुस्खा) तैयार किया गया है जिसे जनसेवार्थ व धर्मार्थ निःशुल्क प्रचारित किया जा रहा है। इस नुस्खे को आप स्वयं तैयार कर सेवन कर सकते हैं। यह योग (नुस्खा) व साहित्य पूर्ण निःशुल्क मँगाने के लिये निम्न पते पर जवाबी (टिकट लगा व अपना पता लिखा) लिफाफा भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- वैद्य ईश्वरचन्द्र जैन 'ऋषि', शेम्स ड्रग हाउस, 13/133, जैन स्ट्रीट, टूण्डला-283204, (उ.प्र.), फोन-098013-23448, 096908-96062

नई दिल्ली- 'पांचाल शोध संस्थान' के तत्त्वावधान में 'डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी दिग्दर्शन ग्रंथ समिति' द्वारा प्रकाशित ब्रिटेन में पूर्व भारतीय उच्चायुक्त, पद्म भूषण डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी स्मृति ग्रंथ 'दृष्टि में सृष्टि' का 16 मई, 2011 को महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल द्वारा लोकार्पण हुआ।

अहमदनगर- श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, अहमदनगर द्वारा संचालित विभिन्न धार्मिक परीक्षाएँ 10 अक्टूबर 2011 से प्रारम्भ हो रही हैं। आवेदन पत्र भिजवाने की अंतिम तिथि 15 सितम्बर 2011 है। सम्पर्क सूत्र-पं.

योगेन्द्र त्रिपाठी, परीक्षाधिकारी, आनंदधाम, अहमदनगर-414001, फोन नं. 0241- 2451538

बधाई/चुनाव

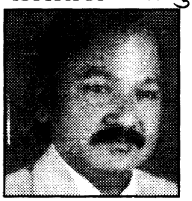

बालोतरा- श्री गुरु हस्ती कल्याण संस्थान के मंत्री श्री ओमप्रकाश जी बांठिया (सी.ए.) को नई दिल्ली की इन्टेलेक्चुअल पीपुल एण्ड इकोनोमिक ग्रोथ ऐसोसियेशन द्वारा बैंकॉक में आयोजित 'इण्डो थाई फ्रेंडशिप' मैत्री वार्ता सम्मेलन में थाईलेण्ड के पूर्व उप प्रधानमंत्री एच.ई.कोर्न दबारांसी के कर कमलों से 'ग्लोरी ऑफ इंडिया' अवार्ड ट्राफी तथा एक्सीलेंस सर्टीफिकेट प्रदान किया गया। यह अवार्ड उन्हें समाज सेवा एवं आर्थिक विकास में योगदान हेतु दिया गया।

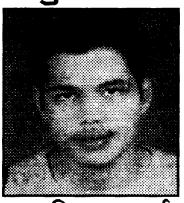

जयपुर- चि. सम्यक् डागा सुपुत्र श्री संजयजी-तृप्तिजी डागा ने IIT-JEE 2011 की परीक्षा में राष्ट्रीय स्तर पर 180वाँ स्थान प्राप्त किया। AIEEE-2011 की परीक्षा में राष्ट्रीय स्तर पर 28 वाँ तथा राजस्थान राज्य स्तर पर 7 वाँ स्थान प्राप्त किया। सीनियर सैकेण्डरी के सी.बी.एस.ई बोर्ड में 97.33 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विज्ञान वर्ग में जयपुर जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इण्टरनेशनल फिज़िक्स ओलम्पियाड के तीसरे लेवल तक चयनित होकर डॉ. होमी भाभा सेण्टर फॉर साइन्स एण्ड रिसर्च, मुम्बई द्वारा प्रदत्त स्वर्ण पदक प्राप्त किया। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत (गायन) में 'संगीत विशारद' की उपाधि भातखण्डे संगीत विद्यालय से प्राप्त की है।

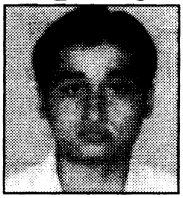

जोधपुर- राहुल सुपुत्र श्रीमती किरण-वीरेन्द्र जी कुम्भट सुपौत्र श्री किशनमल जी कुम्भट का जयपुर के मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिक संस्थान से बी.टेक.(सिविल) ऑनर्स श्रेणी से प्राप्त करने पर जिन्दल स्टील एण्ड पॉवर, सिम्पलेक्स इन्फ्रा लिमिटेड तथा आईडीबीआई बैंक में सहायक प्रबन्धक के पद पर चयन हुआ है।

जयपुर- सुश्री अंजना बैराठी ने 'प्राचीन भारत की सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था का इतिहास (7-10वीं शती के जैन पुराणों के परिप्रेक्ष्य में) विषयक शोधकार्य डॉ.पी.सी जैन, निदेशक, जैन अनुशीलन केन्द्र के निर्देशन में पूर्ण किया तथा राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें पी.एच्.डी. की डिग्री प्रदान की गई।

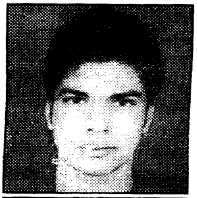

मदनगंज (किशनगढ़)- श्रेयांस सुपुत्र श्री प्रतापसिंह जी एवं सुपौत्र श्री मदनसिंह जी कूमट ने IIT-JEE तथा AIR में 474 वां स्थान प्राप्त किया है। बारहवीं कक्षा में 92.2 प्रतिशत अंक अर्जित किए हैं।

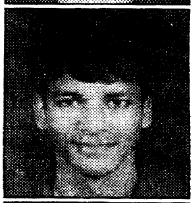

जयपुर- क्षितिज जामड़ सुपुत्र श्रीमती हेमलता-प्रदीप जी जामड़ और सुपौत्र वरिष्ठ सुश्रावक श्री पूनमचन्द जी जामड़ ने IIT परीक्षा में 3526 वीं रेंक के साथ सफलता प्राप्त की है। बधाई।

जयपुर- शुभांशु जैन सुपुत्र श्री सोहनलाल जी जैन (अलीगढ़-रामपुरा) ने IIT में 1425 वीं रेंक के साथ सफलता प्राप्त की तथा बारहवीं (CBSE) कक्षा में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। आपका K.V.P.Y. में भी चयन हुआ है।

मुम्बई- प्राजक्ता सुपुत्री श्रीमती प्रतिभा-नीलम जैन ने बारहवीं (वाणिज्य) की परीक्षा में 95.33 प्रतिशत अंक अर्जित किए हैं। भारत सरकार एवं बोर्ड की ओर से सुश्री जैन को 5 वर्ष के लिए 80,000 रुपये प्रतिवर्ष स्कोलरशिप दी जाएगी।

दिल्ली- श्रेयांस मेहता सुपुत्र श्रीमती नीता एवं श्री अरूणकुमार मेहता सुपौत्र श्रीमती शांति देवी एवं स्वर्गीय श्री पारसचन्द जी बागरेचा मेहता ने सी.बी.एस.ई. की 12 वीं कक्षा के वाणिज्य वर्ग में 94 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं।

श्रद्धाञ्जलि

हिण्डौन सिटी- वीरपिता, दृढधर्मी, करुणामूर्ति, दया-दान के प्रेरक सुश्रावक श्री प्रभुदयाल जी जैन (फाजिलाबाद वाले) का 87 वर्ष की वय में 2 जून 2011 को देवलोकगमन हो गया। पल्लीवाल क्षेत्र में रत्नसंघ के विस्तार एवं विकास में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। रत्नसंघ में दीक्षित महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. के पिताश्री ने अपनी पुत्री की दीक्षा के अवसर पर शीलव्रत एवं रात्रि-चौविहार-त्याग के नियम ग्रहण किये। आपने आचार्यश्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के चातुर्मास तथा विहार-सेवा का लाभ लिया। गुरुभक्ति, सेवानिष्ठा एवं संघ-समाज की प्रवृत्तियों में समर्पित

सुश्रावक ने कई गौशालाओं में दान कर अपने करुणा भाव को पुष्ट किया। आप बारह व्रतधारी होने के साथ नियमित सामायिक एवं प्रतिक्रमण करते थे। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता आदि गुणों से आपका जीवन सुरभित था। आप सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में सदैव समर्पित रहे। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री कैलाश जी, नरेन्द्र जी, विमल जी, निर्मल जी एवं दिनेश जी का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर- सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती पूनमकंवर जी गांग धर्मपत्नी श्री मख्तूरमल

जी गांग का 10 जून, 2011 को स्वर्गगमन हो गया। उदारता की प्रतिमूर्ति सुश्राविका में गुरुभक्ति, संघनिष्ठा और सबको साथ लेकर चलने की अनूठी क्षमता थी। रत्नसंघीय संत-सतीवृन्द के प्रति उनकी अनन्य आस्था और अगाध भक्ति थी। आपने समाजसेवी एवं धर्मनिष्ठ अपने पति श्री मख्तूरमल जी गांग की सेवाभावना में सदैव सहयोग किया।

जोधपुर- धर्मपरायणा, संघ-सेवी, सुश्राविका श्रीमती उगमकंवरजी बोथरा धर्मपत्नी

संघसेवी श्रावकरत्न श्री अनराज जी बोथरा का 01 जून, 2011 को स्वर्गवास हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त श्राविकाजी का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। सन्त-सतीवृन्द की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहती थीं। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना के साथ महापुरुषों की पावन प्रेरणा से आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे, जैसे- रात्रि भोजन त्याग, द्रव्यों की मर्यादा, पर्व तिथियों पर हरी सब्जी एवं जमीकन्द का त्याग। बोथरा परिवार धर्मनिष्ठ एवं समर्पित परिवार है।

बालोतरा- तपस्वी साधिका श्रीमती अणसी देवी धर्मपत्नी स्व. श्री रिखबचन्द जी

छाजेड़ का 16 जून, 2011 को 90 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आप प्रतिदिन पाँच सामायिक करती थीं। आपने वर्षीतप, नौ, आठ, तेला, बेला की कई तपस्याएँ की हैं। आपकी रत्नसंघ के प्रति गहरी आस्था थी। आप अपने पीछे पुत्र श्री फतेहचन्द जी, पारसमल जी एवं धनराज जी छाजेड़ का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

मन्दसौर- कर्मठ समाजसेवी, सरलता की प्रतिमूर्ति आदर्श सुश्रावक श्री रोशनलाल

जी बाफना का 75 वर्ष की वय में नवकार महामंत्र का श्रवण करते-करते 04 मई, 2011 को देवलोक गमन हो गया। आपने 'मानव सेवा' संस्था से जुड़कर आजीवन मानव जाति के कल्याण के लिए सेवाएँ दी थीं। आप 'सहायता' संस्था के अध्यक्ष रहे हैं।

चेन्नई- व्यवहारनिष्ठ सुश्रावक श्री पारसमल जी गोठी का 85 वर्ष की वय में 1 जून

2011 को देहावसान हो गया। मृदुभाषी, मिलनसार सुश्रावक ने सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में सराहनीय सेवाएँ दीं। आपकी मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी महाराज के प्रति श्रद्धा थी। मरणोपरान्त आपके नेत्रों का दान किया गया।

अमरावती- बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी, दृढ़धर्मी सुश्रावक श्री कंवरीलाल जी

सामरा का 10 जून, 2011 को देहावसान हो गया। आपने अपने जीवनकाल में अनेक धार्मिक, सामाजिक एवं पारमार्थिक कार्यों में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। आपका जीवन प्रेरणामय था। पंथ और सम्प्रदाय से ऊपर उठकर आपने सदैव साधुता का सम्मान किया। आपका व्यवहार सदैव सकारात्मक एवं समन्वयात्मक रहा। श्री संघ अमरावती के आप अध्यक्ष रहे।

नसीराबाद- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कंचनदेवी जी मुणोत धर्मपत्नी स्व. श्री

सोहनसिंह जी मुणोत का 88 वर्ष की आयु में 24 मई, 2011 को स्वर्गवास हो गया। आप शांत स्वभावी एवं सरलमना थीं तथा प्रतिदिन सामायिक स्वाध्याय किया करती थीं। सभी संत व संतियों के प्रति उनकी आस्था थी। मरणोपरान्त आपके नेत्र दान किए गए।

बालोतरा- सुश्राविका श्रीमती मोनिका जी ढेलड़िया धर्मपत्नी श्री प्रवीणकुमार जी

ढेलड़िया का 30 वर्ष की अल्पायु में 31 मई, 2011 को स्वर्गगमन हो गया। आपकी रत्नसंघ के संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपने आचार्य श्री एवं उपाध्यायश्री के बालोतरा क्षेत्र में पधारने पर विचरण-विहार सेवा का लाभ लिया। अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षाओं व शिविरों में भाग लेकर आपने ज्ञानार्जन तो किया ही साथ ही अन्य श्राविकाओं को भी प्रेरणा प्रदान की। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक सुश्राविका का सामाजिक कार्यों में भी योगदान सराहनीय रहा। सम्पूर्ण

ढेलड़िया परिवार संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के कार्यों में अग्रणी रहा है। आप संघ सेवी सुश्रावक श्री माणकलाल जी ढेलड़िया की पुत्रवधू थीं।

चेन्नई- श्रद्धानिष्ठ सुश्री पिंकी बाघमार सुपुत्री श्री प्रकाशचन्द जी एवं सुपौत्री श्री पुखराज जी बाघमार का अल्पायु में 16 जून, 2011 को स्वर्गवास हो गया। पिछले वर्ष आचार्य एवं उपाध्याय प्रवर के दर्शन किये। चेन्नई में आप महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के नित्य प्रवचन श्रवण करती थीं। धर्म में आपकी विशेष रुचि थी।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ संघसेवी सुश्राविका श्रीमती अमरकंवर जी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. श्री माणकचन्द जी भण्डारी का 27 जून 2011 को संथारा पूर्वक देवलोक गमन हो गया। धर्मनिष्ठ श्राविका की आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आपने अपने जीवनकाल में प्रतिदिन सामायिक करने के साथ अठाई, उपवास, एकासना, आयम्बिल आदि अनेक तपस्याएँ कर परिवार के सदस्यों को सदैव धर्म मार्ग पर चलने को प्रेरित किया।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

हास्य-व्यंग्य क्षणिकाएँ

प्रवर्तक श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

हकदार

शादी के पूर्व
तेरे पिता ने, मेरे सामने
सौ बार रगड़ी थी नाक
पर दहेज में क्या दिया खाक
वापस ससुराल मत आना
समझो दे दिया है तलाक।
पत्नी कुछ घबराई
आँखों में आँसू ले आई
बोली-प्राणनाथ!
आप तो पढ़ें-लिखे समझदार हैं।
पति बोला-
तभी तो हम दहेज के हकदार हैं।

कोर्ट मैरिज

शादी के हस्ताक्षर होते ही
वे कोर्ट में
न्यायाधीश के समक्ष
तू-तू, मैं-मैं
करने लगे।
यह देख
न्यायाधीश मुस्कराया,
और बोला
आप एक काम कीजिए
तलाक का
प्रार्थना-पत्र भी
आज ही दे दीजिये।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

21000/- जिनवाणी आजीवन स्तम्भ सदस्यता हेतु प्रत्येक

205 Shri Nihal Chand J. Munot ji, Mumbai (M.H.)
206 Shri Pukhraj ji Bagmar, Sowcarpet, Chennai (Tamilnadu)
(सुश्री पिंकी बाघमार की स्मृति में।)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

13119 Shri Vikash ji Kothari, Warli, Mumbai (M.H.)
13120 श्री रविन्द्रजी बोथरा, स्टेट बैंक कॉलोनी, न्यू नानक प्याऊ, गुरुद्वारा, दिल्ली
13121 श्री राजेश जी चतुर मुथा, परिवार शॉपी, पोस्ट-शिरपुर, धुलिया (महा.)
13122 श्री दिनेश कुमार जी मुणोत, डहाणुकर कॉलोनी, पूना (महाराष्ट्र)
13123 Shri Suresh Kumar ji Bohra, Sirpur Kaghjaznagar (A.P.)
13124 श्री बजरंगलाल जी जैन, टीचर्स कॉलोनी, केशवपुरा, कोटा (राजस्थान)
13125 श्री अरिष्ट जी कोठारी, 6, सर्वेश्वर नगर, अजमेर (राजस्थान)
13126 श्री नथमल बी. बैदमुथा जी, नवकार रेजीडेन्सी, नाशिक (महाराष्ट्र)
13127 श्री विहान जी मोगरा, न्यू अहिंसापुरी, फतेहपुरा, उदयपुर (राजस्थान)
13128 श्री सम्यक् जी कटारिया, शान्ति निकेतन कॉलोनी, उदयपुर (राजस्थान)
13129 श्री राजेन्द्र कुमार जी चोरड़िया, सांवरिया मार्केट, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
13130 श्री दिलीप बी. बोहरा जी, विवेक नगर, चन्दरपुर (महाराष्ट्र)
13131 Shri S. R. K. Jain ji, M. G. Road, Hosur (Tamilnadu)
13132 Shri Sandeep ji Bhandari, Bangaluru(Karnataka)
13133 श्रीमती किरणसिंह जी चौधरी, लालकोठी, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

5100/- श्री मदनलाल जी एवं श्रीमती मैनाबाई जी बोहरा, आवड़ी-चेन्नई, श्री मदनलाल जी-मैनाबाई जी बोहरा के वर्षीतप पारणा के शुभ अवसर पर तथा महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में आस्था अनुशास्ता पंचदिवसीय शिविर आवड़ी में सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

5100/- श्री रतनराज जी, नेमीचन्द जी भण्डारी, मुम्बई, अपनी सुपौत्री दीक्षा सुपुत्री श्रीमती सुषमा-दिलीप जी भण्डारी के दिनाँक 21 जून 2011 को छः माह की अल्पवय में असामयिक देहावसान हो जाने पर उसकी पावन स्मृति में।

2500/- श्री दिलीप जी सुगनचंद जी भंडारी, रत्नागिरी, अपनी शादी की 25 वीं सालगिरह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्रीमती कमलेश जी (धर्मपत्नी) श्री संदीप जी, धीरज जी भण्डारी (सुपुत्र), नागौर

वाले-बेंगलुरू, पूज्य पिताजी श्री राजेन्द्र कुमार जी भण्डारी का दिनांक 13 जून 2011 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

2100/- श्री नमन जी, कनव जी, फलक जी एवं जिया जी भण्डारी, फरीदाबाद, पूज्य दादाजी श्री राजेन्द्र कुमार जी भण्डारी (नागौर वाले) का दिनांक 13 जून 2011 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

2100/- श्री ज्ञानचन्द जी लोढ़ा एवं पारिवारिकजन, जयपुर, पूज्य श्री हीराचन्द जी लोढ़ा (केकड़ी वाले) का देहावसान 8 मई 2011 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री प्रदीप जी मेहता, जयपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती निशा जी मेहता के अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित आचार्य हस्ती भजन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री मूलचन्द जी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, श्री शुभांशु जी सुपुत्र श्री सोहनलाल जी जैन, जयपुर का सी.बी.एस.ई. 12वीं परीक्षा में 90% एवं आई.आई.टी. में 1425वीं रेंक आने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री कैलाश जी, नरेन्द्र जी, विमल जी, निर्मल जी एवं दिनेश जी जैन, हिण्डौन सिटी, अपने वीर पिताश्री प्रभुदयाल जी जैन (फाजिलाबाद वाले) का 2 जून 2011 को देवलोकगमन होने पर पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री सूरजमल जी, रमेशचन्द जी जैन (बगावदा वाले), सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री लड्डूलाल जी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री जुगराज जी, श्रीपाल जी डूंगरवाल, सैल्यूर-चेन्नई, आंयबिल ओली करवाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1001/- श्री दानमल जी जैन, महावीरनगर-जयपुर, सुपुत्र श्री लोकेश जी एवं पुत्रवधू श्रीमती डिम्पल जी जैन को परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा से समकित प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1001/- श्री रामदयाल जी, उम्मेदचन्द जी जैन, कोटा, चि. राकेश जी का शुभविवाह सौ.कां. भारती जी सुपुत्री श्री पदमचन्द जी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर के संग दिनांक 5 मई 2011 को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1001/- श्रीमती अकलकंवर जी मोदी धर्मपत्नी श्री सोलेश्वर नाथ जी मोदी, जोधपुर, अपने पडपौत्र (सुपौत्र श्रीमती मधु जिनेन्द्र नाथ जी मोदी) सुपुत्र श्रीमती लवीना निलेश जी मोदी के जन्म के उपलक्ष्य में भेंट।

1000/- श्री सोहनलाल जी, बुधमल जी, सम्पतराज जी, राजन जी बाघमार, मैसूर, ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन लाभ के उपलक्ष्य में भेंट।

511/- श्री मनोज जी, विनोद जी जैन (चौधरी), सवाईमाधोपुर, पूजनीया माताश्री सुश्राविका श्रीमती राजेश जी धर्मपत्नी श्री त्रिलोकचन्द जी जैन (चौधरी), द्वारा जोधपुर में अक्षय तृतीया को पूज्य आचार्य प्रवर आदि ठाणा के दर्शन, प्रवचन श्रवण पश्चात् एकान्तर वर्षीतप पारणा करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री हरकचन्द जी, रमेशचन्द जी जैन (मोहम्मदपुर वाले), सवाईमाधोपुर, सुपुत्र चि. सुनील जी जैन के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री देवकरण जी, धर्मचन्द जी जैन, कोटा, पूज्या माताश्री श्रीमती नन्दकँवर बाई जी की पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री बाबूलाल जी, जम्बू कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, श्री जम्बूकुमार जी जैन के सुपुत्र चि. संदीप के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री सूरजमल जी, ताराचन्द जी जैन (कुश्तला वाले), सवाईमाधोपुर, चि. महेन्द्र जी जैन के शुभ विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री राधेश्याम जी, सुनील कुमार जी जैन (बाबई वाले), बून्दी, चि. अनिल जी के शुभ विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री हनुमान प्रसाद जी जैन (चौरू वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. मनोज का शुभविवाह सौ.कां. मनीषा जी सुपुत्री रामस्वरूप जी जैन, अलीगढ़-रामपुरा के संग दिनांक 12 जून 2011 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री उत्तमचन्द जी मेहता, अहमदाबाद, श्रीमती नूतन बहन मेहता जी धर्मपत्नी उत्तमचन्द जी मेहता का दिनांक 15 अप्रेल 2011 को संथारा सहित महाप्रयाण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री दानमल जी जैन, महावीर नगर-जयपुर, पुत्रवधु श्रीमती डिम्पल जी धर्मपत्नी श्री लोकेश जी जैन को अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित आचार्य हस्ती भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री लड्डूलाल जी, रतनलाल जी जैन (कुश्तला वाले), सवाईमाधोपुर, श्री रामस्वरूप जी जैन का दिनांक 27 मई 2011 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री सौभागमल जी, धर्मचन्द जी जैन (कुश्तला वाले), सवाईमाधोपुर, चि. नितिन का शुभविवाह सौ.कां. गरिमा जी सुपुत्री श्री धर्मचन्द जी जैन, पचाला वाले के साथ दिनांक 3 जून, 2011 को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री गौतमचन्द जी भण्डारी एवं श्रेय जी भण्डारी, जोधपुर, अपनी माताजी श्रीमती अमरकंवर जी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. श्री माणकचन्द जी भण्डारी का 27 जून 2011 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री धीरज जी भंडारी, फरीदाबाद, सप्रेम भेंट।

500/- श्री जीवनमल जी, माणकचन्द जी, प्रमोदकुमार जी गोठी, चेन्नई, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री पारसमल जी गोठी (बिलाड़ा वाले) का दिनाँक 1 जून 2011 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

501/- श्री गौतमचन्द जी भण्डारी एवं श्रेय जी भण्डारी, जोधपुर, अपनी माताजी श्रीमती अमरकंवर जी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. श्री माणकचन्द जी भण्डारी का 27 जून

2011 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

स्वाध्याय संघ, शाखा बजरिया को साभार प्राप्त

1001/- श्री रामदयाल जी उम्मेदचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर वाले हाल मुकाम कोटा, अपने सुपुत्र श्री राजेश जैन के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री देवेन्द्र कुमार जी डॉ. महावीर प्रसाद जी जैन, सूरवाल, अपने पूज्य पिताजी श्री रामकरण जी जैन चौधरी की पुण्य स्मृति में भेंट।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार

20,000/- श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर, अपनी माताश्री श्रीमती कमलाबाई जी डोसी की पावन स्मृति में शिक्षण बोर्ड की प्रथम कक्षा की पुस्तक प्रकाशन के उपलक्ष्य में सादर भेंट।

1001/- श्री रामलक्ष्मण जी कुंभट, जोधपुर, अपनी पूज्य माताश्री उगमंकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री मगराज जी कुंभट की प्रथम पुण्य स्मृति में भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल हेतु साभार

500/- श्री मदनलाल जी, पुष्पराज जी भण्डारी, रायचूर, सप्रेम भेंट।

501/- श्री दानमल जी जैन, महावीर नगर-जयपुर, पुत्रवधू श्रीमती डिम्पल जी धर्मपत्नी श्री लोकेश जी जैन को अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित आचार्य हस्ती भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

आगामी पर्व

आषाढ़ शुक्ला 14	गुरुवार	14.07.2011	चतुर्दशी, पक्खी, चातुर्मास प्रारम्भ
श्रावण कृष्ण 8	शनिवार	23.07.2011	अष्टमी
श्रावण कृष्ण 14	शुक्रवार	29.07.2011	चतुर्दशी,पक्खी
श्रावण कृष्ण 30	शनिवार	30.07.2011	आचार्य शोभाचन्द्र जी म.सा. की 85 वीं पुण्य तिथि
श्रावण शुक्ला 8	शनिवार	06.08.2011	अष्टमी
श्रावण शुक्ला 14	शुक्रवार	12.08.2011	चतुर्दशी
श्रावण शुक्ला 15	शनिवार	13.08.2011	पक्खी
भाद्रपद कृष्ण 8	सोमवार	22.08.2011	अष्टमी
भाद्रपद कृष्ण 11	गुरुवार	25.08.2011	पर्युषण पर्व प्रारम्भ

'संवाद स्तम्भ' हेतु नया प्रश्न

प्रश्न- जीव अपने कर्मानुसार मरते हैं, तो फिर मारने वाले को पाप क्यों लगता है?

-अरविन्द कुमार सुमेरमल जी गाँधी, रत्नागिरी

कृपया अपने उत्तर 10 अगस्त 2011 के पूर्व सम्पादक के पते पर प्रेषित करें।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा क्रियान्वित

सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक,इतिहास मार्तण्ड, युग प्रवर्तक, युगमनीषी, आचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष 2011 को उत्कृष्ट रूप से मनाने के लिए अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् के द्वारा पंचवर्षीय मेधावी छात्रवृत्ति योजना बनाई गई। इस योजना में मेधावी छात्रों को लाभान्वित कर उनका व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन करने का लक्ष्य है।

इस योजना के माध्यम से गत पांच वर्षो से मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। इस वर्ष के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं। इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार हैं-

नियमावली

- आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।
- आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।
- आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।
- आंमत्रित विद्यार्थियों को अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा।
- छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत Scholarship Requisition Form के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है।

Class	Up to Class 10th	11th & 12th	Graduation & Post Graduation	Professional Etc.
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

- चयन समिति के अनुसार Scheme 1st में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यावहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेंगे। इससे कम अंक वालों को Scheme 2nd में मान्य किया जायेगा।
- सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

नोट- लाभान्वित छात्र-छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकूलता अनुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता- आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए। आवेदक रत्न संघ का सदस्य होना चाहिए। **आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान :-**

B.Budhmal Bohra,No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-79 Ph & Fax No.-044-42728476,Email- guruhasti_scholarship@yahoo.com

आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि:- आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त है। आवेदन पत्र उपर्युक्त पते से मंगवाया जा सकता है। आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Photo-Copy) मान्य होगी एवं वेबसाइट www.jainyuvaratna.org पर आवेदन-पत्र Download कर सकते हैं।

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 65 से भी अधिक वर्षों से सन्त–सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त–सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 25 अगस्त से 01 सितम्बर तक रहेंगे। अतः देश–विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 31 जुलाई 2011 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं.....
.....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं.....
.....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.....
.....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....
.....
10. अन्य विशेष विवरण.....

आवेदन करने का पता–संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, 2633679 फैक्स- 2636763, मोबाइल-94141-26279, ईमेल- swadhyaysanghjodhpur@gmail.com

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)25295143 (स्वाध्याय संघ)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है, वह प्रभावक श्रावक है।

Opening Ceremony

of

BAGHMAR TOWER

C/o CHANARMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIER'S
S. RAJAN FINANCIERS

BAGHMAR TOWER
218, Ashoka Road 1, Mohalla, Mysore-570001
(Karanataka)

With Best Compliments from :
C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar
Tel. : 4265431 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

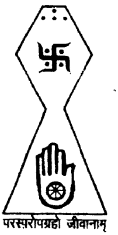

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

❖❖❖

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

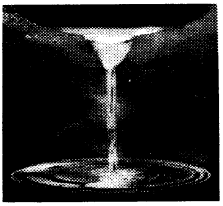
Electric Arc Furnace

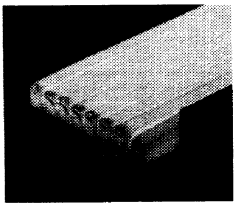
Billets

Rolling Mill

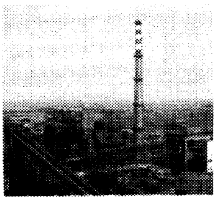
Captive Power Plant

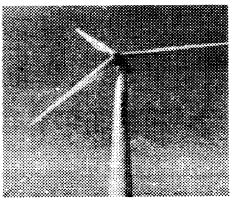
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED
INTEGRATED STEEL PLANT
MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL
29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143
Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

युग मनीषी, सामायिक स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक परमाराध्य आचार्य भगवंत श्री हस्तीमलजी म.सा. के जन्म दिवस वर्ष 2010-11 को अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा शताब्दी वर्ष के रूप में मनाने के लिए आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना बनाई गई थी। यह एक पंचवर्षीय एवं बहुउद्देश्यी योजना थी, जिसे गतवर्ष पाली में आयोजित आमसभा में संघ द्वारा दो वर्ष के लिए आगे विस्तारित कर दिया गया है।

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के प्रमुख उद्देश्य –

1. परमाराध्य, अध्यात्म योगी, युग मनीषी परम उपकारी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100वीं जयन्ती वर्ष को शताब्दी वर्ष के रूप में मनाना। 2. कोई भी युवारत्न बंधु धनाभाव या साधनाभाव से उच्च शिक्षा से वंचित न रहें। 3. युवारत्न बन्धुओं का शैक्षणिक उन्नयन, चारित्र निर्माण एवं चहुँमुखी विकास करना। 4. प्रतिभाशाली युवाओं एवं युवतियों की खोज हो सकें। 5. रत्नसंघ में जैन दर्शन के विद्वान तैयार करना। 6. युवारत्न बन्धुओं एवं बहिनों में संघ के प्रति कर्त्तव्य एवं गुरुओं के प्रति श्रद्धा एवं समर्पण की भावना विकसित करना।

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना द्वारा आयोजित शिविर –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना की चयन समिति द्वारा पिछले पांच वर्षों से लगातार लाभान्वित छात्र-छात्राओं के धार्मिक ज्ञान अभिवृद्धि के लिए शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। अब तक 9 शिविरों का आयोजन किया जा चुका है। इन शिविरों का आयोजन आचार्य भगवंत एवं उपाध्याय भगवंत के सान्निध्य में किया गया। गुरु भगवंतों का लाभ लाभान्वित छात्र-छात्राओं द्वारा पूर्णरूपेण लिया गया।

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के लक्ष्य की ओर बढ़ते चरण –

योजना समिति द्वारा अपने लक्ष्य से कई ज्यादा छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। इस योजना की प्रगति की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है।

वर्ष	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11
लक्ष्य	96	193	291	390	500
प्राप्ति	130	250	400	560	450

- कई प्रशासनिक एवं प्रोफशनल युवारत्नबंधु एवं बहिनें तैयार।
- शिविरों में अध्यापन कार्य के लिए कई युवारत्नबंधु एवं बहिनें तैयार।

ज्ञान का दीया जलाईये, सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बंधुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रू. 12000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/डापट (Donation to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए **निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें** –

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (9381041097), 2. सुमतिचन्द मेहता पीपाड़ (9414462729), 3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (9414921164), 4. बुधमल बोहरा,चैन्नई (9444235065), 5. राजकुमार गोलेच्छा,पाली (9829020742) 6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (9414563597), 7. कुशलचन्द जैन, सवाई माधोपुर (9460441570) 8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (9821055932), 9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (9829011589) 10. महेन्द्र बाफना,जलगांव (9422773411), 11. हरीश कवाड़,चैन्नई (9500114455)

सहयोग राशि भेजने,योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें–

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from:

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 07 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जुलाई, 2011 ★ आषाढ, 2068

Kalpataru
AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।